"रैनाल्ड" ग्रंथ माला—संख्या २

प्रवीन पथिक

रैनाल्ड साहब के "लायला, दिस्टार आफ मिंगरेलिया"

नामक उपन्यास का भाषानुवाद

अनुवादक—बा० देवीप्रसाद खजानची

लहरी बुक डिपो

बनारस सिटी

१९३६

"रैनाल्ड" ग्रंथमाला—संख्या २
प्रवीन पथिक

'रेनाल्ड' ग्रंथमाला

१ किले की रानी—

(दि यंग फिशरमैन)

२ प्रवीन पथिक—

(लायला दि स्टार आफ

मिंगरेलिया)

प्रवीनपथिक

अथवा

अलादीन और लैला

पहिला बयान

एक सुनसान और हरा भरा मैदान पेचीली नहरों से तर हो रहा है। ऊंची ऊंची पहाडियों और टीलों पर कुदरती मेवों के दरख्त फलों से लदे हुए लहलहा रहे हैं। बीच बीच में पहाडी दर्रे और बडी बड़ी कन्दरायें हैं जिनके बीच से मुसाफिरों के जाने के लिये पगडंटी बनी हुई है जो दोनों तरफ जंगली फूल और पत्तों से घिरी हुई है। इस जगह

ऐसे अच्छे अच्छे फूल पत्तों के पेड देखने मे आते हैं कि जो दूसरे देशों में बहुत दाम खर्च कर लाये जाते और बहुत हिफाजत से ग्रीनहाउस में लगाये जाते हैं पर जो इस पहाडी में साधारण घास के सामान है। ऊपर की तरफ निगाह कर के देखने से ऊचे ऊचे पेडो मे मधुमक्खियों के छत्ते भी लगे हुए नजर आते हैं। इस शहद में कुछ नशा भी होता है क्योंकि यहा की मक्खियें कनैर के फूलों का रस बहुत चूसती हैं।

पाठक ! यह कोई ऐसी वैसी पहाडी नहीं है। यह मुल्क जारजिया की पहाडी का वह हिस्सा है जो अमरेशिया से आते वक्त मुसाफिरो को मिलता है, और इसके उत्तर काकेशस का पहाड दिखाई देता है। यह मुल्क (जारजिया) रूस के नक्शे मे मिल गया है और इसी सबब से यहां कहीं कहीं रूसी तिजारत और रूसी फौज भी दिखाई पडती है। यहा के मर्द ताकत में वैसे ही मशहूर हैं जैसे यहा की औरतें खूबसूरती मे।

सन् १७५३ की वसन्त ऋतु मे एक नौजवान निहायत उम्दे घोड़े पर सवार इसी पहाडी से जाता हुआ दिखाई पड़ता है जिसका हाल हम ऊपर लिख चुके हैं। इस नौजवान की उमर लगभग अट्ठारह वर्ष के होगी। इसका हर एक अग साफ सुडौल और खूबसूरत था मगर इसकी आखों से निर्दयता और दुष्टता साफ झलकती थी। इसकी अभी रेख निकल रही थी, सर के लबे लबे बाल घू घरवाले काले और पतले थे, दुम्बे के पोस्त की टोपी और काले रग का फौजी तरीके का कोट पहिने और एक पेटी कमर से कसे था जिसमें एक तेगा लटक रहा था, और इसके पैरों में जीन सवारी का घुटने घुटने तक का जूता था। इन सब चीजों पर ध्यान देने से यह एक बहुत ही चुस्त चालाक और फुरतीला आदमी मालूम पडता था और यह भी विश्वास होता था कि किसी दौलतमन्द घराने का लडका है।

यह अनुमान हो सकता था कि यह जवान अमरेशिया या रूस मे भी आगे मिनरेलिया से आता और टिफलिस की तरफ जाता होगा मगर

नहीं, उसने टिफलिस की सड़क छोड दी और एक पगडंडी की तरफ झुका जो सीधी काकेशस की पहाडी को गई थी।

शाम होते होते यह जवान एक घने जगल में जा पहुँचा। इसके बेखौफ चलने से मालूम होता था कि इसे उन डाकुओं का खौफ नहीं है जो प्राय इस राह से चलने वाले मुसाफिरों को लूट लिया करते हैं, और न राह भूल जाने की ही कोई फिक्र इसके चेहरे से जान पडती थी। थोडी दूर आगे बढ कर पेडों की आड में उसे एक रोशनी दिखलाई दी जिसे देखते ही यह पगडंडी छोड़ उसी तरफ को चला। कुछ ही दूर जाने बाद यह उस रोशनी के पास पहुँच गया जहा हरिनों की खाल के छ सात खेमे खडे दिखाई पड़ रहे थे।

दो तीन जगह पर आग जल रही थी जिसके चारो तरफ बैठे कई लोग खाना पका रहे थे। इन सभों की पौशाक और बदन की मजबूती तथा फुरती पर ख्याल करने से मालूम होता था कि ये लोग डाकू हैं, क्योंकि खाना पकाती समय भी इन लोगों ने अपने कमर से खजर तलवार तथा पिस्तौल अलग नहीं की थी, और एक किनारे पर उतनी ही बन्दूकें भी जोड कर खडी की हुई दिखाई पड रही थीं जितने ये लोग थे।

इस गरोह के पास पहुँचते ही उस जवान ने एक सीटी बजाई जिससे वे लोग चौकन्ने हो गये और समझ गये कि कोई दोस्त आ पहुँचा और इसी से जब वह खेमों के पास पहुँचा तो उनमें से एक ने उठ कर उसके घोडे की बाग थाम ली। जवान घोडे से उतर पडा और बोला, "एक आदमी इस घोडे की खबर लो और मुझे अपने सर्दार के पास ले चलो।"

उनमें से एक डाकू उस जवान को अपने सर्दार के पास ले चला जो इन खेमों में नहीं रहता था। एक अन्धियारे और घने जगल में घुमाता फिराता वह डाकू इसे बहुत दूर ले गया और तब एक खेमे के पास खड़ा कर दिया जिसके दर्वाजे पर आग जल रही थी।

यह चमड़े का खेमा उन सब खेमों से बड़ा तथा खूबसूरत था। इसके चारो ओर रेशमी झालर टँकी हुई थी और दरवाजे पर जरदोजी काम का नीला रेशमी परदा पडा हुआ था। उस डाकू ने इस जवान को खेमे के अन्दर जाने के लिये कहा और आप बाहर खडा रहा।

खेमे के अन्दर चमडे के बिछावन पर एक खूबसूरत नौजवान लेटा हुआ था जिसकी उमर लगभग २३ या २४ वर्ष के होगी। इसका गोरा और खूबसूरत चेहरा सुडौल और रोबीला था। कद लंबा और बदन दुबला था मगर हर एक अंग इसका साफ सुडौल और ताकतवर था। चेहरे से जवामर्दी बहादुरी और सर्दारी झलकती थी और यह भी जान पड़ता था कि यह अपने गरोह या उन डाकुओं का सर्दार है, क्योंकि इसकी पोशाक भी उन सब डाकुओं की तरह ही थी जिनका हाल हमने ऊपर लिख चुके हैं। इसकी कमर की जडाऊ पेटी में चादी के मूठ की तलवार और बेशकीमत पिस्तौल लगी हुई थी, और बगल मे एक बन्दूक भी पडी हुई थी। एक बेशकीमत लम्प खेमे के अन्दर जल रहा था जिसकी रोशनी इसके चेहरे पर अच्छी तरह पड रही थी।

साहब सलामत कर वह आने वाला इस सर्दार के पास बैठ गया और बातचीत करने लगा।

सर०। क्यों टोनर! तुम आ गये! क्या हाल है?

टोनर०। सब ठीक है सरदार।

सर०। मालूम होता है कि तुमने अलादीन ही की तरह लैला को भी धोखा दिया है।

टोनर०। हां ठीक है, जिस तरह मैंने अलादीन को कारस से चलने को कहा वैसे ही लैला को सिंग्रेलिया से चलने की सलाह दी।

सर०। खूब किया, मगर यह तो बताओ कि तुम्हें उस बात पर पूरा विश्वास है जो तुमने मुझसे कही थी? क्योंकि यदि मुझे इतने बड़े खजाने की लालच न हो तो मैं इस बखेडे में कभी न पड़ूँ।

टोनर०। मुझको पूरा विश्वास है और मैंने आपसे सब बातें ठीक ठीक कहीं हैं। वह सब माल इसी गुलिस्ता घाटी में ही है।

सर०। (धीमी आवाज से) बडे ताज्जुब की बात है! मैं तो समझता था कि इन काकेशस की पहाड़ियों का कोई हिस्सा, कोई कोना कोई खोह, मुझसे छिपी नहीं है बल्कि मैं एक एक कदम का हाल जानता हूं परन्तु आश्चर्य है कि अभी तक घाटी गुलिस्ता मैंने नहीं देखी बल्कि उसका नाम तक नहीं सुना!

टोनर०। मगर कप्तान! क्या तुमने पहाड़ी लोगों से भी कभी इस घाटी का जिक्र नहीं सुना?

सर०। मैंने लड़कपन में अपने पिता के मुंह से एक बार सुना था कि इन पहाड़ी में कहीं एक स्वर्ग तुल्य स्थान है।

टोनर० ठीक है अस्तु मेरी सचाई का यह भी एक सबूत है।

सर०। मगर टोनर! तुम इतने उलझाव का काम क्यों करते हो! तुम सीधे उसी पर एक दम धावा करने को क्यों नहीं कहते जो इस घाटी का मालिक बना बैठा है और जिसके तुम नौकर हो?

टोनर०। नहीं नहीं, वह मर जायगा पर घाटी का हाल कभी न बतलावेगा, मैंने कम कोशिश नहीं की है।

सर०। अच्छा अच्छा, वैसा ही किया जायगा जैसा तुमने विचारा है, पर मैं इस लिये कहता था कि शायद कोई सीधी राह निकल आवे। खैर अब खाना तैयार है, चलो खाकर आराम करें क्योंकि सवेरे तुमको अपने मालिक के पास टिफलिस जाना होगा।

दूसरा बयान

सुबह के वक्त इसी पहाड़ी में उस मुकाम से बहुत आगे बढ कर जिसका हाल हम ऊपर लिख आये हैं ७ आदमी घोड़ों पर सवार टिफलिस की ओर जाते दिखाई पड रहे हैं। उनके घोड़ों की तरफ ध्यान देने

से मालूम होता है कि कुछ रात रहते ही से वे सफर कर रहे है। इस समय वे अगल वगल इस तरह देखते जाते हैं मानो किसी को खोज रहे हों वा किसी की टोह मे हों। यह छओ आदमी उन्हीं डाकुओ मे से हैं जिनका हाल हम ऊपर लिख चुके है और इनकी लिबास और पौशाक भी वैसी ही है, फर्क अगर कुछ है तो केवल इतना ही कि ये लोग अपनी अपनी वन्दूकें पीठ पर लटकाये और आपुस मे बातें करते जा रहे है।

एक०। (जो इन सभो में सर्दार मालूम पडता है) हम लोगो को जो खवर मिली है उससे विश्वास होता है कि हम लोगों का काम इसी वक्त ओर यहीं पूरा होगा। आओ इन पेडो की झुरमुट मे घोडे को चरने के लिये छोड दें।

दूसरा०। अच्छी बात है, मगर यह तो कहो गाजी, यह क्या कोई मुहिम है?

गाजी०। हा जरूर है, मगर हमारे सर्दार ने अपना असली इरादा कुछ जाहिर नहीं किया है। इस मुहिम का सुझाने वाला टोनर है, उसी कहने से हमारे सर्दार ने हम लोगों को इधर भेजा है और आप खुद किसी दूसरी तरफ उसी फिक्र मे गया है।

तीसरा०। अच्छा यह टोनर कौन है जो कई दफे हमारे सर्दार से मिल चुका है?

गाजी०। इसके बारे में मै सिर्फ इतना ही जानता हूँ कि वह टिफलिस के किसी अमीर घराने का है। (चौंक कर) मगर बातों ही मे समय निकला जाता है! अभी मुझे वे बातें तुमसे कहनी हैं जो हमारे सर्दार कैरीकरामा ने मुझसे कही है। सुनो, हमलोग छ आदमी हैं और वे लोग तीन होंगे जिनसे इस वक्त मुकावला करना होगा, पर वे तीनों तुर्क, एक जवांमर्द सर्दार और दो उसके बहादुर साथी होंगे ताक्तवर घोडों पर सवार और हथियारों से सजे होंगे, और उन तीनों को जीते ही पकडना होगा।

चौथा०। अगर हथियार काम में लाये जायें तो ?

गाजी०। नहीं नहीं, हमारे सर्दार का हुक्म है कि अगर जान बचाने की जरूरत पड़ जाय तभी पिस्तौल या बन्दूक को छूना, नहीं तो जहा तक बन पड़े उन लोगों को जीते ही गिरफ्तार करके ले आना।

गाजी उस सड़क को देखने के लिये बढ़ा जिस पर से वे तीनों मुसाफिर आने वाले थे और फिर पीछे लौट अपने साथियों के साथ पेड़ों की झाड़ी में छिप बैठा। अपने घोड़ों को भी इस तरह पर पास रक्खा कि जब चाहें उन पर सवार हो जायें।

घन्टे भर के बाद दूर से तीन मुसाफिर आते दिखलाई पड़े। उन बहादुरों की लाल फुदने वाली टोपी और उनकी संख्या से गाजी को विश्वास हो गया कि ये वेही तीनों हैं जिनकी राह हम लोग बड़ी देर से देख रहे हैं। इन तीनों में से एक का घोड़ा कुछ आगे था जिसके कोट के सोनहले बटन तथा तलवार की म्यान और लैस इत्यादि सूर्य की किरनें पड़ने से चमक रहे थे।

ये तीनों मुसाफिर बेफिक्री के साथ जा रहे थे और इनके जी में किसी तरह का कुछ भी खटका न था। जब ये उस जगह पहुचे जहा वे डाकू छिपे हुए थे, तब गाजी का इशारा पा सब डाकू अपने अपने घोड़ों पर सवार होकर झाड़ी के बाहर निकल आए और दूसरे इशारे के साथ ही दो ने तो अलादीन को (जो उन दोनों तुर्कों का सर्दार था) और बाकी के चारों ने उसके दोनों साथियों को घेर लिया। मगर डाकुओं का मतलब पूरा न हुआ क्योंकि इनके धावे के साथ ही उन तीनों ने अपने अपने म्यान से तलवारें निकाल लीं और बाये छोड़ बायें हाथ में पिस्तौल ले लिये। जिससे डाकू अपने इरादे को पूरा न कर सके।

गाजी और एक दूसरा डाकू अलादीन की तरफ बढ़ा था। अलादीन ने पिस्तौल से एक का काम तमाम किया और गाजी पर तलवार चलाई। गाजी ने अपनी चालाकी से तलवार का वार बचा कर अलादीन को घे

पर से खींच लेने के लिये हाथ बढ़ाया, मगर अलादीन ने घोडे को पीछे हटा कर अपने को बचा लिया। इसी समय पीछे से भी गोलिया चलने की आवाज आई।

अलादीन ने यह भी देख लिया कि उसके साथियों पर क्या गुजरी। उन चारो में से जिन्होंने अलादीन के दो साथियों को घेरा था, दो की लाश जमीन पर थी और दो बहुत जख्मी हो गये थे अर्थात् एक का हाथ कट गया था और दूसरे की गरदन के नीचे तलवार लगी थी। अलादीन के साथियों ने भी वैसी ही बहादुरी दिखाई थी जैसी उनके सर्दार ने, हा एक आदमी के बाये हाथ पर कुछ तलवार का जख्म लगा था। बचे हुए दोनों डाकू बदहवास भागे और पुकार कर गाजी से कहते गये, "भागो और अपनी जान बचाओ !!"

गाजी बिजली की तरह अपने घोडे को चमका कर निकल गया और लगभग सौ गज की दूरी पर जाकर खडा हो गया। उसने अपनी बन्दूक हाथ में ले ली और निशाना ताक कर गोली चलाई पर अलादीन जानता था कि गुरजिस्तान के पहाडी आदमी गोली चलाने मे बहुत तेज और उस्ताद होते हैं अस्तु उसने अपने दुश्मन की चालाकी समझ ली थी और एक झाड़ी की तरफ बढ कर अपने को बचा लिया। अब उसने अपनी पिस्तौल गाजी की तरफ चलाई। लाचार होकर गाजी वहा से भागा।

अलादीन ने उन तीनो डाकुओं की लाश, जो इस लड़ाई में मारे गये थे, उठवा कर सड़क के किनारे करवा दी और आगे बढ़ा। समझ लिया कि ये लोग मामूली डाकू थे और सिवाय माल लूटने के उनका कोई दूसरा इरादा नहीं था, मगर फिर भी उसे कुछ ताज्जुब [illegible] हुआ

अला०। ताज्जुब है कि इन लोगों ने पेडों की आड से छिप कर गोली न चलाई और दिलावरी के साथ मुकाबला करने पर मुस्तैद हुवे ! मगर ये लोग आड की जगह से गोली चलाते तो हम लोगों की जान

कभी न बचती क्योंकि ये पहाड़ी लोग निशाना लगाने में बहुत होशियार होते हैं।

इब्राहीम०। (जो कुछ ज्यादे उमर का था) मालूम होता है उन डाकुओं का इरादा हमलोगों को कैद कर लेने का था जिसमें कुछ ज्यादे रकम माग सकें।

सला०। तुम्हारा सोचना ठीक हो सकता है और अगर उनका इरादा यही था तो ईश्वर ही ने हम लोगो की रक्षा की, साथ ही हाथों हाथ की लड़ाई मे उन लोगों ने भी अपने मुकाबले में तुर्की ताकत का इम्तिहान कर लिया और अपने किये का फल पाया।

इसी तरह की बातें करते ये लोग आगे बढे। शायद फिर डाकुओं का मुकाबला हो यह सोच कर दोबारा अपनी पिस्तौलों को भी भर लिया।

इब्राहीम०। मुझे तो शक होता है कि कहीं ये लोग उस मशहूर डाकू के साथी न हों जिसका भयानक नाम इस जिले में गूंज रहा है।

सला०। क्या तुम्हारा मतलब कैरीकरामा से है?

इब्रा०। जी हा।

सला०। ठीक है, उसकी विचित्र बातें शहर कारिस में मैंने भी खूब सुनी हैं।

इब्रा०। इसी छोटी सी लड़ाई ने हम लोगों को चिता दिया है कि इस तरफ का इक्का दुक्का सफर ठीक नहीं।

सला०। जो जवान मेरे पास सन्देसा लाया था उसके मुंह से मैंने सुना था कि इस रास्ते में डाकुओं का कोई खौफ नहीं है इसीलिये मैंने दो ही तीन आदमियो के साथ सफर करना मुनासिब समझा था। मैं सोचता था कि ज्यादे आदमियों के साथ सफर करने से रास्ते में पूछताछ बहुत होगी इससे जहा तक हो छिपे ही छिपे ठिकाने तक पहुंचना मुनासिब समझा। [illegible] देखो आगे एक गाव नजर आता है, चलो वहा के लोगों को इन डाकुओं की खबर दें।

अलादीन ने उस गाव में पहुच कर वहा के हाकिम को इस हमले की खबर दी जिसे सुन उसे भी बहुत ताज्जुब हुआ। डाकू सर्दार कैरी-करामा का नाम उसने भी सुना था मगर उसके गांव के नजदीक ऐसी घटना होगी ऐसा उसने कभी भी सोचा न था।

अलादीन कुछ आराम कर के उस गाव से आगे बढा। इसके दोनो साथी सिर्फ नौकर ही नहीं थे बल्कि खैरख्वाह और अच्छे दर्जे के मुसाहब थे और अलादीन को जान से ज्यादे मानते थे। अपने शहर में अलादीन एक बडे रुतबे का अमीर था, इसके सिवाय यह खूबसूरत भी ऐसा था कि जब बाहर हवा खाने को निकलता तो बहुत से मर्द और औरत उसको देखने के लिये घर से बाहर निकल आते थे। ताकत का तो कहना ही क्या था जिसका हाल अभी मालूम हो चुका है। घोडे पर चढने, कसरत करने हरबा चलाने और शिकार खेलने का शौक इसे हद से ज्यादे था। यह तो जानता ही न था कि खौफ किस चिडिया का नाम है, इतने पर भी रहमदिली का खजाना था, जरा भी किसी के दुख का हाल सुनता तो आखो में आसू भर लाता और जहा तक होता उनकी भलाई करने से न चूकता।

अलादीन अपने साथियों के साथ एक तिरमुहाने पर पहुँचा जहा यह मालूम करने के लिये कि अब किस राह से जाना चाहिये, उसे अटकना पडा, और वहा वह इस फिक्र मे चारो तरफ देखने लगा कि कोई मिल जाय तो उससे टिफलिस को राह पूछे इतने ही मे एक पत्थर का मेड पर बैठे हुए एक देहाती बूढे पर उसकी निगाह पडी। उसने उसके पास जाकर टिफलिस का रास्ता पूछा, जिसके जवाब में उसने सिर्फ इशारे से बतलाया कि 'यही सडक जारजिया को जाती है जिसके किनारे मैं बैठा हू।' इसके बदले में अलादीन ने उसे एक रुपया दिया, जिसको उसने बडी बेपरवाही के साथ उठा लिया और हमारे मुसाफिर ने वही सडक पकडी।

इन लोगों के जाने बाद वह देहाती बूढ़ा भी मेज़ पर से उतरा और जङ्गल में जाकर एक झोपड़ी में घुसा जो बहुत से दरख्तों की आड़ में थी। रुपये को उसने जमीन पर फेंक दिया और धीरे से बोला, "अफ-सोस! मुझे उसके हाथ से रुपया लेना पड़ा जिसको मैं अपना जानी दुश्मन समझे था और जिससे बदला लेने के लिये क़सम खा चुका था!"

एक आदमी ने जो उसी झोपड़ी में बैठा था जल्दी से उस रुपये को उठा लिया और पूछा, "क्यों दोस्त! तुम्हें किस बात का रंज हुआ!"

बूढ़ा०। कुछ नहीं, लो तुम अपने कपड़े लो और मेरे कपड़े मुझे दो और थोड़ा सा पानी भी ला दो जिसमें मैं अपने बदन और सिर की मिट्टी धो डालूं।

देहा०। क्या तुम्हारा वह काम नहीं हुआ जिसके लिये तुम्हें सूरत बदलनी पड़ी थी?

बूढ़ा०। तुम्हें इससे कुछ मतलब नहीं, तुम मुझे पानी दो तथा मेरा लिबास हथियार और घोड़ा ले आओ।

उस झोपड़ी के मालिक ने वैसा ही किया और वह बूढ़ा हाथ मुंह धो धोर अपना लिबास पहिन घोड़े पर सवार हो गया। अब अगर अला-दीन इसे देखता तो साफ पहिचान जाता क्योंकि यह वही गाज़ी था जिसने थोड़ी देर पहिले उनका मुकाबिला किया था।

अलाउद्दीन अपने दोनों मुसाहबों के साथ उसी सड़क पर चल पड़ा जिधर गाज़ी ने धोखा देकर उन्हें बहकाया या जाने को कहा था मगर उन लोगों में इस बूढ़े के बारे में बातें होने लगीं।

इमा०। क्या आपने उसकी बदमाशी पर ध्यान नहीं दिया? अपनी लाठी से मिट्टी के ढेलों के साथ खेलता था और आपकी बात का जवाब सर उठा कर नहीं दिया, किस बेपरवाही के साथ उसने राह बतलाई! मुझे तो उसके इशारे में साथ कुछ बदी मालूम होती थी।

अला० । (कुछ मुस्कुरा कर) इब्राहीम ! क्या तुम समझते हो कि एक देहाती आदमी किसी दरबारी के साथ ऐसा धोखे का बरताव करेगा !

इब्रा० । ठीक है, मगर मुझे यह भी विश्वास नहीं होता कि यह सड़क जो धीरे धीरे पतली होती जाती है टिफलिस को जाती होगी।

सचमुच यह रास्ता आगे से बहुत तंग होता जाता था और जैसे जैसे ये लोग आगे बढ़ते जाते थे दोनों तरफ के घने दरख्त ऊपर से मिल कर सड़क पर पड़ती हुई धूप को रोकते जाते थे। जंगल और भी घना होता जाता था।

अलादीन० । मैं तो समझता हू यही सड़क टिफलिस को नहीं होगी! खैर आगे अगर कोई गाव या आदमी मिलेगा तो उससे हम पूछ लेंगे। (चौंक कर) मगर देखो तो, किसी झरने से पानी के गिरने की आवाज आ रही है! प्यास के मारे मेरा जी बेचैन हो रहा है, चलो इसी आवाज की सीध पर बढ चलें।

अलादीन ने अपने घोडे को तेज किया। कुछ ही दूर आगे चलने पर पतली सडक खुलासा होने लगी और तब एक मैदान मिला जिसमें कोई रास्ता कहीं जाने का मालूम नहीं होता था। बगल की पहाड़ी पर से एक झरना गिर रहा था और मैदान में एक तरफ पेड़ों के [illegible] में एक खेमा खडा हुआ था जिसे देखते ही अलादीन ने कहा, "मालूम होता है कि किसी का डेरा पडा हुआ है, अब हम लोगों को रास्ते के बारे में भी ठीक ठीक मालूम हो जायगा।"

अलादीन धीरे धीरे उस चश्मे के किनारे पहुँचा और तब चौंक पड़ा क्योंकि उसने देखा कि एक नौजवान औरत उसी चश्मे के किनारे बैठी है और ऐसा मालूम होता था कि मानों इन घोड़ों के टापों की आवाज उसके कान तक पहुँची ही नहीं है।

तीसरा बयान

चश्मे से कुछ दूर ही अलादीन ने अपने घोड़े को रोका और उस हसीन औरत की तरफ देखने लगा जो वडी लापरवाही के साथ अपने पैरों को धो रही थी। यद्यपि उसका रंग कुछ सांवला था तथापि वह वेहिसाब खूबसूरत थी और वेशकीमती कपड़ों की तरफ ध्यान देने से किसी वड़े खान्दान की भी मालूम पड़ती थी। चेहरे पर डालने की नकाब उसने टोपी के ऊपर से पीछे की तरफ फेंकी हुई थी। पास वाले खेमे के दर्वाजे पर कीमती पौशाक पहिरे दो लौंडियों को भी अलादीन ने देखा। ऐसे घने जङ्गल में नहर के किनारे ऐसी हसीन औरत को देख उसके चित्त की कैसी हालत हुई होगी इसे वही जानता होगा और उस समय तो अलादीन की अवस्था और भी खराब हो गई जब उस औरत ने चौंक कर यकायक तिरछी निगाह उस पर डाली।

अलादीन ने उसे सलाम किया, साथ ही उसने नकाब की डोरी खैंची और अपने अलौकिक रूप को अलादीन की निगाहों से छिपा लिया।

इतने ही में अलादीन के दोनों साथी भी वहां आ पहुँचे जो कुछ दूर पीछे छूट गये थे। अलादीन ने उनकी तरफ देखा और कहा, "यह औरत इस जगह कहां से आई और क्या कर रही है? इसका हाल मालूम करना चाहिये।"

यह कहता हुआ अलादीन अपना घोड़ा आगे वढ़ा उस औरत के पास गया और बोला, "क्या आप मेहरवानी करके वतला सकेंगी कि टिफलिस की राह किधर से है?" उस औरत ने यह सुन वहुत मीठी [illegible] में जवाब दिया, "यह राह टिफलिस को सीधी नहीं जाती।"

अला०। (हाफिज के कान में) मुझे उस देहाती बुड्ढे पर पहिले ही शक हुआ था।

हाफि०। हां यहां से एक पगडंडी ऐसी जरूर गई है जो आगे

जाकर टिफलिस की सडक में मिल गई है मगर जो इस इलाके को अच्छी तरह नहीं जानता वह उस राह से नहीं जा सकता। (कुछ रुक कर) मैं खुद भी टिफलिस ही को जा रही हूँ।

अला०। अगर आपके साथ कोई अच्छे निगहबान न हों तो मैं उम्मीद करता हूँ कि आप इस सफर में मुझे अपना साथी बनावेंगी। राह में मैं आपकी पूरी हिफाजत करूंगा और आपकी बदौलत मुझे भी राह में भटकना न पडेगा।

अलादीन की बात का जवाब उस औरत ने कुछ देर तक न दिया मगर इतना मालूम होता था कि जवाब देने के लिये वह बहुत कुछ गौर कर रही है। आखिर कुछ देर बाद वह बोली, "आपके साथ सफर करना मुझे मुनासिब नहीं मालूम होता। मेरे साथ कई आदमी हैं और उनको मुझसे पहिले ही यहां आकर मेरा इन्तजार करना चाहिये था मगर वे अभी तक यहां नहीं पहुँचे, खैर इसका जवाब तो मैं सोच के दूंगी लेकिन इस समय यदि आप मेरी मेहमानी कबूल करें तो मेरी लौंडियां आप लोगों की खातिर करेंगी जो इस खेमे के पास खड़ी हैं।"

यह सुनते ही अलादीन अपने घोडे से कूद पड़ा और उसने अपने घोडे की बाग हाफिज के हाथ में दे दी। इब्राहीम के चेहरे से मालूम होता था कि अलादीन की इन बातों से वह बहुत नाखुश है मगर मालिक के लेहाज से कुछ बोलने की हिम्मत नहीं करता। वह चुपचाप हाफिज को साथ ले उसी खेमे की तरफ बढ गया जिसके दरवाजे पर वे दोनों लौंडियां बैठी हुई थीं और पास ही तीन घोडे भी चर रहे थे। इब्राहीम और हाफिज के पहुँचते ही वे दोनों उठ खड़ी हुई और इन्होंने देखा कि उनमें से एक सावली हबशिन और दूसरी हसीन गुर्जी औरत है।

हाफिज और इब्राहीम उन दोनों औरतों से बातचीत करने लगे। इधर चश्मे के किनारे बैठी उस औरत ने अपने पास घास पर बैठ जाने

का अलादीन को इशारा किया और अलादीन के बैठने बाद अपने चेहरे पर से नकाब हटा कर उससे बातचीत करने लगी।

अला०। एक दुष्ट देहाती ने धोखा देकर मुझे इस रास्ते से जाने को कहा तौभी उसका नतीजा मेरे लिये अच्छा ही हुआ क्योंकि आपसे मुलाकात हो गई। मगर मुझे इस बात का विश्वास हो गया है कि यह रास्ता मामूली मुसाफिरों के चलने लायक नहीं है।

औरत०। (चौंक कर) क्या आपसे भी उन लोगों का सामना हुआ जिनका ख्याल करने ही से मैं कांप उठती हूँ?

अला०। अगर आपका मतलब डाकू कैरीकरामा से है तो मैं कह सकता हूं कि हां!

औरत०। (डर से कांपती हुई) क्या आपको भी डाकू मिले थे?

अला०। आज सुबह ही को तो! मगर (हंस कर) मुझसे मिल कर उनको कुछ खुशी न हुई होगी।

अलादीन ने डाकुओं से मुकाबला होने का हाल कहा जिसको सुन वह औरत ताज्जुब से भर गई। बड़ी मुश्किल से अपना जी ठिकाने कर उसने अलादीन को डाकुओं के हाथ से बच जाने पर मुबारकबादी दी और तब उसकी और उसके साथियों की दिलावरी की तारीफ करने लगी। इसके बाद अलादीन के पूछने पर उसने कहा, "मेरा नाम मिरहा है और मैं टिफलिस की रहने वाली हूँ। मेरा बाप टिफलिस के भारी सौदागरों में था पर साल भर हुआ उसका देहान्त हो गया। किसी जरूरी काम के लिये मुझे एक गांव में जाना पड़ा था जहां से लौट कर मैं अब फिर टिफलिस जा रही हूं। मेरे दोस्तों ने जिनके यहां मैं टिकी हुई थी, रास्ते में पहरे का इन्तजाम कर दिया था, लेकिन इस सुबह के सोहावने समय और जंगल की कैफियत ने मुझे उनका इन्तजार करने न दिया और मैं आगे बढ़ कर इस जगह चली आई, मगर यह कहती आई थी कि जब तक वे लोग न पहुंचेंगे मैं फलानी जगह ठहरूंगी। अब देर हो जाने के

कारण मुझे सदेह होता है कि शायद वे लोग किसी दूसरी राह मे आगे बढ गये है। यहा बैठी यही सब सोच रही थी कि आप लोग आ पहुचे।"

अलादीन ने कहा "मगर अब आपको डरना न चाहिये क्योंकि हमलोग हिफाजत के लिये पहुँच गये हैं।'

मिरहा ने आहिस्ते से ताली बजा कर अपनी लौंडियो को बुलाया और कुछ इशारा करने के साथ ही उन्होने खाने पीने की अच्छी अच्छी चीजें और शराब लाकर उसी जगह घास पर रख दीं तथा कुछ जंगली मेवे भी ले आईं। दोनों खाने लगे, मगर शराब किसी ने बिल्कुल न पी।

खा पी कर सब घोडों पर सवार हो रवाने हुए अलादीन और मिरहा का घोडा साथ साथ था और उनके पीछे अलादीन के दोनों साथी मिरहा की दोनों लौंडियों के साथ साथ जा रहे थे मगर ऐसा मालूम होता था कि इस साथ और ऐसे सफर से इब्राहीम बहुत नाखुश है क्योंकि जहा तक उससे बन पड़ता वह चुपचाप अलग ही अलग चलता था।

अलादीन और मिरहा आपुस में मीठी मीठी बातें करते चले जा रहे थे और मौके मौके की बातचीत से अलादीन को यह भी मालूम होता था कि मिरहा किसी बडे खान्दान का लड़का होने पर भी खुशगुफ्तार है। शाम होते होते तक दोनों की दोस्ती बहुत बढ गई यहा तक कि अब यह बिल्कुल नहीं मालूम होता था कि इन दोनों की आज ही मुलाकात हुई है।

सूर्य अस्त हो रहा था जब दूर से इन लोगों को एक रोशनी नजर आई जिसको देख अलादीन ने मिरहा से कहा "आपने कहा था कि आगे एक गढी मिलेगी जिसमें रात को रहने की जगह मिल जायगी। जान पडता है यह रोशनी वहीं पर हो रही है। चलो घोडे बढावें और वहा पहुँच कर आराम कर लें क्योंकि इधर कई कोस हमलोग बहुत धीरे धीरे आये है।'

निरहा० । नहीं, वह मुकाम तो यहां भर और चलने पर मिलेगा यह रौशनी शायद किसी दूसरे गांव में हो रही है ।

जला० । तो इसी गांव में ठहर कर कुछ देर दम ले लेना चाहिये क्योंकि दिन भर चलने से घोड़े बहुत थक गये हैं ।

निरहा० । (मुसकुरा कर) जो आप कहिये मुझे मंजूर है, क्योंकि आप हमारे मुहाफिज जो ठहरे ।

चौथा बयान

थोड़ी ही देर में ये लोग उस गांव में जा पहुंचे । यह रोशनी एक छोटी सी सराय में हो रही थी, जिसमें पहुंच कर ये लोग घोड़ों पर से उतर पड़े । और लोग तो अन्दर चले गये मगर घोड़ों के दाने घास की फिक्र में इब्राहीम सराय के बाहर ही रह गया ।

इस सराय का भठियारा निहायत ही बदजात और चालाक आदमी मालूम पड़ता था । अपने मुसाफिरों का इन्तजाम करने के बाद वह बाहर निकला और इनके हर एक घोड़ों को इस तरह देखने लगा जैसे उम्दे नस्ल के घोड़ों के देखने का बहुत शौक रखता हो । सब घोड़ों को देख कर जब उसने निरहा के घोड़े पर निगाह डाली तो यकायक उसके मुंह से एक ऐसा लफ्ज निकल गया जिसको सुनते ही इब्राहीम चौंक पड़ा और बहुत गौर से भठियारे को देखने लगा, इसके बाद उससे देर तक बातचीत भी करता रहा ।

भठियारे ने क्या कहा और इब्राहीम क्यों चौंका तथा फिर इन दोनों में क्या बात चीत होने लगी सो सब इस जगह हम कहना पसन्द नहीं करते हैं, इतना जरूर कहेंगे कि आखिर में इब्राहीम ने कुछ रुपये भठियार के हाथ में दिये और कहा, "ऐ मेरे दोस्त ! यह तुम्हारी नजर है ! तो खबरदार अब यह हाल किसी दूसरे से मत कहो ।" भठियारे ने रुपये ले लिये और मुसकुरा कर चुप हो गया । आधे घन्टे में घोड़े दाना

घास खाकर तैयार हो गये और हमारे मुसाफिरों ने पुन: अपना सफर शुरु किया।

रास्ते में इब्राहीम ने बहुत चाहा कि अलादीन से निराले में बातचीत करे मगर मिरहा के सबब उसे कोई मौका न मिला जिससे वह लाचार हो रहा। यकायक उस गढी के अन्दर से एक चिराग की रौशनी दिखलाई पडी जिसे देख मिरहा ने कहा, "इस गढी का मालिक हमारे बाप का एक दोस्त है जो हमलोगों की बहुत खातिर और मेहमानदारी करेगा, मगर सिर्फ एक ही रौशनी दिखाई देने से मुझे शक होता है कि वह इस समय घर में है नहीं। खैर अगर न भी होगा तो कोई हर्ज नहीं, उसके नौकर चाकर हमलोगों को तकलीफ न होने देंगे।"

सराय से चलने के बाद अब तक के रास्ते में मिरहा ने अलादीन के साथ अपनी मुहब्बत हद्द से से ज्यादे दिखलाई जिससे अलादीन अपने को एकदम भूल गया और मिरहा का इश्क पूरे तौर से उसके सर पर सवार हो गया। वातचीत करते सब लोग उस गढी के पास पहुँचे। यह गढी बहुत मजबूत पत्थर की बनी हुई थी और मालूम होता था कि किसी पुराने वक्त की इमारत है।

इन लोगों के पहुँचते ही भड़कीली पौशाक पहिने एक खिदमतगार बाहर निकल आया जिसने मिरहा को पहचान कर सलाम किया और पूछने पर बताया, "हमारे मालिक घर में नहीं हैं तो भी आप लोगों को किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती।" यह सुनते ही सब लोग घोड़ों से उतर गढ़ी के अन्दर गये, और साईसों ने जो उसी जगह मौजूद थे आकर घोड़ों को थाम लिया। इस गढी के अन्दर कई कोठरियां और सजे हुए कमरे थे जिस में दर्जे बदर्जे इन लोगों का डेरा पड गया। और यहां कई लौंडियां भी मौजूद थीं जिन्होंने खाने पीने का सामान बहुत जल्दी ठीक कर दिया। खाने में जंगली जानवरों का कबाब, शराब और मेवों के सिवाय जंगली शहद भी था।

मालिक मकान के न होने के सबब सिरहा ने खुद मेहमानदारी का काम अपने ऊपर लिया और एक गिलास शराब का भर कर अलादीन को देते हुए मुस्कुरा कर कहा, "चाहे आपको इसकी आदत न हो मगर आज दिन भर की थकावट मिटाने के लिये इसे जरूर पीना होगा।" अलादीन ने गिलास ले लिया और बेउज्र पी गया। पर इसके बाद भी खाते खाते सिरहा ने कई और गिलास शराब के अलादीन को पिलाये तथा कुछ आप भी पीया, यहां तक की अलादीन को हद से ज्यादे निशा चढ गया और वह सिरहा को मुहब्बत भरी निगाहों से देख देख हंसने लगा। शराब पिलाने के बाद सिरहा ने शहद खाने के लिये भी जिद किया। अलादीन ने पहिले कभी इस तरह पर शहद नहीं खाया था मगर सिरहा की जिद से उसको वह भी खाना पड़ा, यह शहद नेहायत उम्दा मगर नशीला था और इसके खाने से अलादीन का नशा और भी ज्यादे हो गया। यहां तक कि सिरहा की मुहब्बत भरी मीठी मीठी बातें कुछ भी समझ में न आने लगीं और न यही मालूम होने लगा कि वह उसका क्या जवाब देता है, उसकी आखों के सामने अंधेरा हो गया और सर में बेहिसाब चक्कर आने लगे।

सिरहा ने एक गिलास और भी शराब का भर अलादीन के सामने किया और मुस्कुरा कर कहा, "अलादीन! तुमने अपनी मुहब्बत में मुझको फसा लिया! इसके एवज में तुम भी अपनी मुहब्बत का मुझसे इकरार करो और यह गिलास मेरे हाथ से लेकर पी जाओ।"

अलादीन ने यह सुन हंस कर सिरहा की तरफ देखा मगर उसे इतनी ताकत न थी कि वह इस बात का कोई जवाब देता, हां गिलास उसके हाथ से लेकर बेखौफ पी गया। सिरहा ने फिर उस गिलास को भरा और बोली, "ऐ मेरे प्यारे! इसको भी पीयो और मुझसे अपनी मुहब्बत का वादा करो!" इसके बाद अलादीन की तलवार को छू कर वह बोली, "दोस्त! जब तुम टिपलिन से मालामाल होकर लौटोगे और

मैं भी तुम्हारे साथ रहूँगी, उस वक्त जो कोई तुम्हारा दुश्मन निकले उस पर इस तलवार को उठाना।"

इतना कह मिरहा ने उस तलवार को कई बार चूमा बल्कि बच्चों की तरह बहुत देर तक उस के साथ खेलती रही और इसके बाद फिर एक गिलास शराब का भर अलादीन के पास ले गई। इसी समय दरवाज़ा खुला और उसका वफादार इब्राहीम आता दिखलाई पड़ा जिसे देख मिरहा दूसरे कमरे में चली गई।

नौजवान अलादीन उठ बैठा। मालूम नहीं क्यों, इब्राहीम को अपनी खुशी पर मुबारकबाद देने के लिये या ऐसे खुशी के वक्त पर वहां आने की शिकायत करने के लिये, पर जो कुछ भी हो, उठने के साथ ही अलादीन का पैर डगमगाया और अगर इब्राहीम थाम न लेता तो वह जरूर ही गिर पड़ता।

इब्राहीम के हाथों में जाते ही अलादीन बदहवास हो गया और उसे दीन दुनिया की कुछ खबर न रही। बहुत देर के बाद जब उसे कुछ कुछ होश आया तो मालूम हुआ कि वह एक कोच पर लेटा हुआ है, कमरे में एक धीमी रोशनी हो रही है, इब्राहीम उसके पास खड़ा सर पर पानी देता हुआ धीरे धीरे कह रहा है, "ऐ सरकार! खुदा के लिये जल्दी उठिये और अपने को सभालिये क्योंकि आप इस वक्त बड़े भारी खतरे में हैं।" अलादीन ने उठने की कोशिश की मगर उठ न सका क्योंकि उसका सर सीसे की तरह भारी हो रहा था और आंखों के सामने चकाचौंध सा बंधा था। हां, इतना वह अलबत्ते समझ गया कि उसका वफादार इब्राहीम उसको उठाने की कोशिश कर रहा है। इसी समय इब्राहीम ने एक गिलास पानी का भर कर अलादीन के मुंह से लगाया।

गले के नीचे पानी उतरने ही से अलादीन की तबीयत कुछ ठिकाने हुई और उसने इब्राहीम की तरफ देखा।

इब्रा० । जल्दी उठिये, देर न कीजिये, मैं फिर कहता हूँ कि आप बड़ी भारी बला में गिरफ्तार हो गये हैं ।

अला० । (चौंक कर) ऐ ! यह क्या कहते हो ? क्या मुझे कोई धोखा दिया गया है !!

यह कह उसने अपनी तलवार म्यान से निकालनी चाही मगर अफसोस ! तलवार म्यान से बाहर न हो सकी यह देख अलादीन और भी घबड़ाया और तलवार के कब्जे की तरफ देखने लगा । मालूम हुआ कि पतली तार से तलवार का कब्जा इस तरह बांध दिया गया है कि किसी तरह तलवार निकल ही नहीं सकती ।

इब्रा० । ठहरिये मैं खोल देता हूं, शायद गढ़ी से बाहर होते होते हम लोगों को तलवार की जरूरत पड़े ।

अला० । हाफिज कहां है ?

इतने ही में दरवाजा खटका और हाफिज आता दिखलाई पड़ा ।

इब्र० । (हाफिज से) क्या उसको गिरफ्तार कर लिया ?

हाफि० । हां उस मक्कारा को तो पकड़ लिया और उसके नौकर को भी बांध लिया मगर साईसों को गिरफ्तार करना अभी बाकी है ।

इब्रा० । (जल्दी से) अगर यहां से बाहर होने तक कैरीकरामा का गरोह नहीं पहुंचा तो हम उन्हें भी बेकार कर देंगे ।

अला० । (चौंक कर) है ! क्या कहा ? कैरीकरामा ! वह यहां कहां ? और सिरहा कहां है ?

इब्रा० । बस इस वक्त ज्यादे बातचीत का मौका नहीं है, आप जल्दी चलिये ।

अलादीन और उसके दोनों साथी कमरे से बाहर निकले । दरवाजे पे पहुंचते देखा क्या कि रस्सी से जकड़ी हुई सिरहा पड़ी है ।

सिरहा० । अलादीन ! क्या तुम्हारा दिल इतना सख्त हो गया कि मुझे बेबस देख कर भी तुम्हें रहम नहीं आता ।

अला० । इब्राहीम यह क्या बात है ?

इब्रा० । बस बस, इस बारे में आप कुछ मत बोलिये, हमलोग जो कुछ कर रहे है बेजा नहीं करते ।

इब्राहीम की बात सुन अलादीन चुप हो रहा और समझ गया कि शायद इस वक्त ऐसा ही मौका होगा । कमरे के बाहर होकर इब्राहीम ने जंजीर चढ़ा दी और कहा "बस, इससे ज्यादे तरद्दुद करने की जरूरत नहीं ।"

तीनो आदमी अस्तबल में आये और घोडो पर जीन कस उस गढी के बाहर हो गये । तब इब्राहीम ने कहा, "अब हम लोगों को बेतहाशा घोडे छोडने चाहिये ।"

चादनी खूब खिली हुई थी जिसकी रौशनी में ये लोग बराबर घोडा फेंकते हुए तेजी के साथ बढने लगे, यहा तक कि एक गाव नगर आया तौ भी इन्होंने घोड़ो को न रोका और सीधे सराय की तरफ बढते चले गए सराय उस वक्त बन्द थी मगर इनके पहुँचने पर भटियारे ने दरवाजा खोला और सराय के अन्दर लेजाकर टिकने के लिये एक अच्छी कोठरी दी तथा इनके घोडो का भी मुनासिब बन्दोबस्त कर दिया ।

अब अलादीन को हाल दरियाफ्त करने का मौका मिला और उसने इब्राहीम से पूछा, "यह सब क्या तमाशा हो गया ?"

इब्राहीम० । यह तो आप खूब जानते हैं कि मै शक्की आदमी हू । पहिले तो मुझे उसी जगह शक हुआ जब देहाती ने जगल का रास्ता बतलाया, उसके बाद मिरहा पर भी मुझे सदेह होने लगा जिसने बहुत जल्द दोस्ती बढा ली थी, फिर जब हमलोग सराय मे पहुँचे तब मेरा शक यकीन के साथ बदल गया क्योंकि उस सराय के भटियारे की जब मिरहा के घोडे पर निगाह पडी तब उसके बदन पर एक खास दाग देख वह चौंक पडा और उसके मुह से एक ऐसी बात निकली जिससे मेरा कलेजा धड़कने लगा । मैने रिशवत देकर उससे खुलासा हाल पूछा तब

उसने खुल कर कहा कि यह घोडा कैरीकरामा का है। और इतना सुनते ही मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यह मिरहा जरूर कैरीकरामा की जोरू बहिन या कोई माशूका होगी।

मैंने बहुत कोशिश की कि निराले मे आपसे कुछ बातचीत करूं मगर वह बदजात इस तरह आपसे हिलमिल रही थी कि मुझको बिल्कुल मौका न मिला, सिवाय इसके अगर मै आपसे कुछ कहता भी तो आप मेरी बातों को न मानते और सैकडो दलीलें और बहस निकाल कर मेरी बातो को हंसी में उडा देते। अस्तु मैने आपसे कुछ कहना मुनासिब न जाना।

लेकिन गढी पर उतरने से मेरे जी का खटका और भी ज्यादे हो गया जब आप और मिरहा खाना खाने को बैठे और इसकी दोनों लौंडियां मेरे और हाफिज के साथ खाने को बैठ गईं। मुझको भी शराब पिलाने और शरद खिलाने की कोशिश उन दोनों लौंडियों ने बहुत की मगर मैं उनके फन्दे में न फँसा और हाफिज को भी बचाये रहा। आप तो नशे में चूर हो रहे थे मगर मुझे चैन न पडती थी। कुछ थोडा बहुत खाना खाकर मैं उठ बैठा और टोह लेने के लिये इधर उधर घूमने लगा। जब अस्तबल में गया तो दो आदमियों को आपस में धीरे धीरे बातचीत करते सुना। छिप कर सुनने से मालूम हुआ कि हम लोग धोखे से ठगे गये हैं और कैरीकरामा का कोई साथी जिसका नाम गाजी है, थोडी ही देर में बहुत से आदमियों को लेकर यहां पहुचा ही चाहता है।

मैं अस्तबल से सीधा आपके पास पहुंचा, मुझे देख मिरहा हट गई और आप भी उठ खडे हुए मगर आपको होश कुछ भी न था। मैंने आपको सेज पर लेटा दिया और होश में लाने की फिक्र करने लगा। हाफिज को इस हाल कट कर मैं पहिले ही से समझा बुझा चुका था और वह बडी हुस्यारी से मेरे कहे मुताबिक काम कर रहा था। इस

गढ़ी के सब दरवाजे बन्द थे और बाहर सदर फाटक पर भी ताला लगा था जिसकी ताली मिरहा की कमर में थी । उसकी कमर से ताली लेकर हाफिज ने उसकी मुश्कें बांध दीं और उसकी दोनों लौड़ियों और मुलाजिमों को तो वह पहिलेही बांध चुका था। बहुत कोशिश के बाद जब आप होश में आये तब मैंने आपको भागने के लिये कहा। इसके आगे का हाल तो आप जानते ही हैं।

नौजवान अलादीन ने अपने दोनों खैरखाह नौकरों की वफादारी की तारीफ करके ईश्वर को धन्यवाद दिया और तब आराम करने लगा।

पांचवां बयान

पाठक इस बात को तो जान ही चुके हैं कि कैरीकरामा वही डाकू था जिसने काकेशस की पहाड़ी में डेरा डाला था या जिसके पास टोनर गया था। आज वही कैरीकरामा एक दूसरे जंगल में सायेदार पेड़ों के [illegible]च घास पर बैठा हुआ है। पास ही थोड़ी दूर पर गाजी भी बैठा है। [illegible] कुछ दिन बाकी है और जंगल में बहुत सन्नाटा है। न जाने ये [illegible] किस विचार में यहा बैठे हैं मगर इनके दोनों घोड़े उसी जगह घास चर रहे हैं जिससे यह भी जान पड़ता है कि यह लोग राह चलते [illegible] यहां अटक गए हैं।

कैरीकरामा के खूबसूरत चेहरे से उदासी और तरद्दुद झलक रहा [illegible] और वह कभी कभी ऊंची सांसें भी लेता था। बहुत देर तक चुप रहने के बाद उसने सर उठा कर गाजी की तरफ देखा और कहा, "चाहे जो हो पर मुझे विश्वास नहीं होता कि तीन तुर्की जवानों ने तुम्हारे ऐसे ऐसे छ तेज और होशियार डाकुओं को हरा दिया !!"

गाज़ी० । मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि आपके उस हुक्म की बदौलत मुझे भागना पड़ा जो कि आपने अलादीन को जीते पकड़ने की बाबत दिया था।

कैरीक० । (चेहरे से गुस्सा दिखला कर) मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ कि व्यर्थ किसी की जान लूं । बेचारे अलादीन ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं है और न उसकी बदौलत मुझे किसी तरह की तक्लीफ ही मिली है। फिर मैं उसकी जान लेने के लिये हुक्म क्यों देता? मगर तुमको इस बात का खयाल करना चाहिये था कि लाचारी की हालत में जरूर हरबे से काम लेते और जिन्दा या मरा किसी तरह उसको मेरे पास ले ही आते!!

गाजी० । (गुस्से से) तो क्या आप समझते हैं कि मैने कोशिश नहीं की? मैने बहुत कोशिश की मगर फिर भी हमारे साथियों को भागना ही पड़ा और इस बात का मुझे खुद अफसोस है क्योंकि आज तक कभी ऐसी नौबत नहीं आई थी, और तिस पर आप मुझको दुत-कार रहे है!!

कैरीक० । (कुछ सोच कर) क्या कहूँ!

गाजी० । खैर, अलादीन मेरे हाथ से निकल गया तो क्या हुआ फिर भी सिरहा की चालाकी से बच कर वह कहीं नहीं जा सकता! मुझे यकीन है कि शटी में पहुच कर वह जरूर गिरफ्तार हो गया होगा।

कैरीक० । (सर हिला कर) मुझे यह भी उम्मैद नहीं, क्योंकि अभी तक उसकी कोई खबर नहीं मिली।

गाजी० । कोई सबब होगा।

कैरीक० । नहीं, बेचारी सिरहा ऐसी नहीं कि खुशखबरी पहुँचाने में देर करे।

गाजी० । यही सब सोच कर मेरी सलाह पहिले ही से दूसरी तरह की थी।

कैरीक० (झुंझला कर) मैं नहीं चाहता कि मैं अपने मातहतों से राय लेना चाहूं, मेरा काम हुक्म देने का है। अफसोस! टोनर की टेढ़ी मेढ़ी चालों की बदौलत मुझे इतनी तकलीफ उठानी पड़ी, खैर देखूं मेरे और साथी क्या काम करके आते हैं।

के जाने की खबर मसऊद ने उसे दी थी। सूरत बदले हुए वह उस सराय में पहुँचा जिसमें लैला उतरी हुई थी और अपने घोड़े के लिये भठियारे से जगह चाही। इसके बाद घोड़े के बहाने से उस सराय के अस्तबल में गया और देखा कि तीन घोड़े उसी निशान के बंधे हैं जैसे कि मसऊद ने कहे थे, इससे उसे विश्वास हो गया कि लैला जरूर इसी सराय में उतरी हुई है।

केरीकरामा ने अपने लिये भठियारे से एक छोटी कोठड़ी ली थी और जब भठियारे का आदमी खाना लेकर आया तो बात ही बात में उसे मालूम हो गया कि लैला अपनी दो लौंडियों के साथ पूरब तरफ के कमरे से उतरी हुई है।

जब आधी रात हुई केरीकरामा ने अपने कुरते से एक टुकड़ा फाड़ उसे नकाब की जगह अपने चेहरे पर लगाया, बीच में देखने के लिये आँखों की जगह दो छेद कर दिये और अपनी कोठड़ी से निकल कर उस कमरे के बाहर वाले दालान में पहुँचा जिसमें लैला टिकी हुई थी। वहाँ एक लम्प जल रहा था। दर्वाजे के साथ कान लगाने से मालूम हुआ कि इसके अन्दर कोई भी जागता नहीं है क्योंकि धीमी धीमी खुर्राटे की आवाज आ रही थी। कैरीकरामा ने खंजर निकाल कर हाथ में ले लिया और उस कमरे के अन्दर घुसा, देखा क्या कि लैला एक मसहरी पर सोई हुई है और उसके दोनों बगल दोनों लौंडियां चारपाइयों पर खुर्राटे ले रही हैं।

छठवां बयान

कैरीकरामा ने जब उस कमरे को गौर से देखा तो उसे एक अजब समा नजर आया यह कमरा सराय के सब कमरों में अच्छा था। मुल्क अरबिया के रिवाज के मुआफिक फर्श से दो फीट ऊँची गद्दी बिछी हुई थी जिसके ऊपर निहायत खूबसूरत मसहरी पर लैला सोई हुई थी।

एक कोने में लम्प जल रहा था जिसकी रोशनी लैला के खूबसूरत चेहरे पर बखूबी पड रही थी और मसहरी के बारीक परदे के अन्दर से उसकी सूरत साफ नजर आरही थी। उसकी उम्र करीब सत्रह वर्ष के होगी। चमकदार सोनहरे बालो की लटें तकिये पर छिटकी हुई थीं और उसके चेहरे से भोलापन झलकता था। उसकी खूबसूरती की तारीफ मे तो इतना ही कह देना बहुत है कि वह खूबसूरती के लिये मशहूर अपने मुल्क की भी एक ही हसीन गिनी जाती थी।

कैरीकरामा ने उसे देख जी में कहा "इसे जो लोग सितारे सिगरेलिया कहते है सो बहुत ही ठीक है। बेशक इसके जैसी खूबसूरत लडकी दूसरी न होगी!"

मगर उधर लैला को सोये देर न हुई थी और वह अभी कच्ची नींद में थी। कैरीकरामा के अन्दर जाते ही उसकी नींद उचट गई और जरा सी पलक खोल कर उसने देख लिया मगर यह बात कैरीकरामा ने बिल्कुल न जानी।

नाजुक लैला को ऐसा मौका कभी न पडा था। उसका दिल बहुत हा मे था, फिर भी उसने इस समय अपने को बहुत सम्भाला, अपनी आंखें वैसे ही बन्द कर लीं, और खुर्राटा लेती रही। इस समय अगर वह चिल्लाती भी तो उसकी आवाज सरायवालों में से कोई न सुनता क्योंकि उसका कमरा एक निराले कोने मे था अस्तु उसने सोचा कि इस समय चुपकी रहना ठीक है क्योंकि कैरीकरामा के धीरे धीरे आने से उसे साफ मालूम पडता था कि उसकी नीयत चोरी करने की है।

कैरीकरामा समझे हुये था कि लैला बेखबर सोई हुई है अस्तु वह धीरे धीरे पैर रखता उसकी मसहरी के पास जा खडा हुआ। लैला ने पुनः जरा सी पलक उठाई और देखा क्या कि उसके हाथ मे खंजर इस तरह पर है कि जरा भी वह हिले तो उसके कलेजे मे जरूर भोंक देगा।

कैरीकरामा ने झुककर लैला को देखा और निश्चय कर लिया कि

यह मोर्छे हुई है। लैला का एक हाथ मसहरी के नीचे लटक रहा था, जिसमें एक मानिक की अंगूठी जिसके नग पर कुछ खुदा हुआ था चमक रही थी। कैरीकरामा ने उसी अंगूली पर हाथ डाला।

यह मौका लैला के लिये बहुत नाजुक था। पासही आइने वाली मेज पर लैला के बेशकीमत गहने पडे हुये थे और वह अपने गले में एक नेहायत उमदा मोतियों का कण्ठा पहिरे हुए थी। दूसरे हाथ में भी कई बेशकीमत अंगूठियां थीं मगर उन सभों को छोड़कर खास इसी अंगूठी पर डाकू का हाथ डालना लैला के लिये बहुत दुखदाई हुआ क्योंकि वह इसे बहुत ही चाहती थी यहां तक कि इसे किसी तिलिस्म की ताली समझे हुए थी। फिर भी उसने अपने चेहरे से कुछ जाहिर न होने दिया। कैरीकरामा ने अंगूठी उतार ली और लैला को आहट से मालूम हुआ कि वह अब दर्वाजे की तरफ जा रहा है। उसने पुन. अपनी पलक उठाई और लौटते हुए कैरीकरामा के कद को बखूबी देखा। जैसेही कैरीकरामा ने कमरे से बाहर होकर दर्वाजा बन्द किया वैसे ही लैला उठ बैठी और अपनी दोनों लौंडियों जुबेदा और अमीना को आवाज देने लगी। वे दोनों घबड़ा कर उठीं और लैला के पास जाकर उसकी घबडाई हुई सूरत देख और भी डरीं। लैला के गुलाबी चेहरे पर जर्दी आ गई थी और उसका कलेजा धक धक कर रहा था। दोनों लौंडियों ने लैला से इसका सबब पूछा। लैला ने इशारे से उन्हें उस कमरे का दर्वाजा भीतर से बन्द कर लेने को कहा। धीरे धीरे टूटी फूटी आवाज में जुबेदा और अमीना से बिल्कुल हाल कहा। जिसे सुन वे एक दम घबड़ा गईं।

जुबेदा०। अगर आप उस बदमाश को दुबारा देखें तो पहिचान लेंगी?'

लैला०। नहीं, मैंने उसकी सूरत नहीं देखी। हां कद उसका लंबा और दुबला था।

अमी० । और उसका लेबास ।

लैला० । लेबास के बारे में भी मैं ठीक ठीक नहीं कह सकती ।

जुबेदा० । मगर यह ताज्जुब की बात है कि सिवाय अंगूठी के उसने और कोई भी चीज न ली ।

अमी० । यह कोई मामूली चोर नहीं मालूम पड़ता ।

लैला० । इसमें कोई शक नहीं, उसे सिर्फ उस अंगूठी से ही गर्ज थी ।

इतना कह कर लैला कुछ सोचने लगी क्योंकि उस अंगूठी की जरू- रत उसे हद से ज्यादे थी पर ऐसा क्यों था और वह अंगूठी किस मस- रफ की थी यह बात वह अपनी दोनों कमसिन लौंडियों से भी नहीं कहा चाहती थी ।

जुबेदा० । चलो तलाश करें, शायद चोर इसी सराय में हो ।

अमी० । हां जरूर ऐसा करना चाहिये ।

लैला० । (सिरहाने से एक घड़ी निकाल कर) देखो आठ बज गये हैं, क्या अभी तक डाकू सराय में रह सकता है । अब तलाश करनी गुल शोर मचाना बड़ी भूल है । जिसने अच्छी अच्छी चीजों को छोड़ कर सिर्फ एक अदनी अंगूठी की चोरी की और वह भी ऐसी होशि- यारी के साथ, क्या उसकी छोटी गरज थी या अब वह तुम्हारी कोशिश से पकड़ा जा सकता है । सिवाय इसके तुम यह भी जानती हो कि हम सफर में मैं अपने को [illegible] छिपाये हुए हूँ । इन्हीं सब बातों को सोच कर अब चुपही रह जाना बेहतर मालूम होता है और मैं तुमसे भी कहे देती हूँ कि यह हाल किसी से न कहना ।

हाथ मुंह धो, कुछ जलपान कर लैला ने सफर की तैयारी की और हुक्म दिया कि घोड़े तैयार करने लगें जायें । इतने ही में सरायवाले ने आकर लैला से अर्ज किया, "हुजूर, [illegible] मैं समझता हूँ अब आगे सिर्फ दो सवारों के साथ जाना मगर [illegible] मुनासिब नहीं ।"

लैला० । क्यों ? साफ साफ कहो ।

सरायवाला० । क्या आपने मशहूर डाकू कैरीकरामा का नाम अभी तक नहीं सुना ! जो शैतान से भी ज्यादे मशहूर हो रहा है । उसने बड़ों बड़ों के नाकों दम कर दिया है और चारो तरफ हाथ साफ किया करता है तिस पर भी अभी तक किसी ने कभी उसकी सूरत नहीं देखी यद्यपि उसकी मण्डली के बदमाश चारो तरफ घूमा करते हैं ।

लैला० । (खौफसे कांप कर) मगर मुझसे तो कहा गया था कि रास्ते में कोई खौफ नहीं है ॥

सरायवाला० । तो आपको गलत खबर दी गई है, अभी अभी मुझे पता लगा है कि रात को इस सराय में कैरीकरामा ने डेरा डाला था।

लैला० । (चौंक कर) क्या तुम उसकी हुलिया मुझसे कह सकते हो ?

सरायवाला० । मुझे उसे देखने का तो मौका नहीं मिला है, भी मै कह सकता हूं कि वह एक कमसिन, खूबसूरत, लम्बा जवान रही पोशाक, सो तो उसकी हमेशा बदला ही करती है ।

लैला० । रात को सराय में रहने से उसकी क्या गरज थी ?

सरायवाला० । गरज की तो बात ही दूर है, मुझे यह भी नहीं मालूम होने पाया कि यही कैरीकरामा है । अगर मैं जान जाता तो उसका सर काट कर इनाम के लाखों रुपये न ले लेता और जन्म भर खुशी से गुजरान न करता ॥

लैला० । तब तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि वह कैरीकरामा ही था ?

सरायवाला० । कुछ रात रहते ही जब कैरीकरामा अपने घोड़े पर सवार हो कर सराय के बाहर हुआ तो उसी समय असीरिया का एक सौदागर सराय में टिकने के लिये आ पहुंचा । कैरीकरामा के चेहरे पर एक निगाह डालते ही उसे वह पहिचान गया । खौफ के मारे सौदागर का चेहरा जर्द हो गया और जब तक भागते हुये कैरीकरामा के घोड़े

के टापों की आवाज आती रही तब तक वह उसी तरफ देखता रहा। बाद मे भी बडी मुश्किल से उसने इतना कहा, 'कैरीकरामा!'' साईस की जुबानी यह सब हाल सुनकर वहा आया जहां वह टिका हुआ था तो मैने मेज पर एक अशरफी पाई जो मेरे किराये से बहुत ज्यादे थी।

अब लैला को जरा भी शक न रहा कि वह कैरीकरामा ही था जो रात को उसके हाथ से अंगूठी उतार कर ले गया मगर यह बात उसने सरायवाले से न कही! साथही उसने यह भी सोचा कि कैरीकरामा का मुझसे जो कुछ मतलब था सो तो निकल ही गया, अब वह मुझे क्यों सतावेगा मगर तो भी सरायवाले के जिद करने से और कैरीकरामा के खौफ से उसने दस बारह सिपाहियों को अपने साथ लेजाना कबूल किया।

यह सब बातचीत जो सरायवाले और लैला से हुई जुबेदा और अमीना ने बिलकुल न सुनी क्योंकि वे दूसरे कमरे मे सफर की तैयारी रही थीं। सराय वाले के जाने के बाद लैला ने उनसे सिर्फ इतना ा कि आगे राह में हिफाजत के लिये कई आदमी साथ कर देने को ने वाले से कह दिया है।

। तैयारी हो जाने पर लैला उस सराय से टिफलिस की तरफ रवाने हुई।

सातवां बयान

लैला और उसकी दोनों लौंडिया घोडो पर सवार वहा से रवाने हुईं। उनके साथ साथ हिफाजत करने के लिये बारह गुर्जी जवान जा रहे थे। दोपहर के बाद वह जगह आ पहुँची जहा से लोग दो घंटे के लिये पडाव डालकर आराम करने वाले थे और जहा से अपने साथी उन बारहों जवानों को भी वापस करने का इरादा था जिन्हें हिफाजत के लिये लिया था मगर उस जगह एक ऐसी खबर सुनी कि लैला को अपना इरादा तोड़ देना पड़ा।

यह खौफनाक खबर कैरीकरामा की न थी बल्कि रास्ते पर एक शेर के आजाने की थी। लैला और उसकी दोनों लौंडियां यह बात सुन बहुत डरीं और कांपने लगीं। आखिर यह सलाह ठहरी कि बारह आदमियों में से दस को तो वापस कर दिया जाय मगर दो आदमियों को और थोड़ी दूर तक आगे ले चलना चाहिये।

थोड़ी देर ठहरने बाद दो आदमियों को साथ ले लैला आगे बढ़ी। कई कोस तक धीरे धीरे जाने के बाद यकायक सड़क के किनारे ही एक जगह गुर्राहट की आवाज मालूम पड़ी जिससे लैला का कलेजा कांप गया और उसने अपने घोड़े की बाग रोकी, तब तक उसकी दोनों लौंडियां और वे गुर्जी जवान भी उस जगह आ पहुँचे जो कुछ पीछे थे। लैला ने अपने डर का कारण दोनों गुर्जियों को कहा। उन्होंने उसको धीरज दे पीछे कर लिया और आप आगे आगे चलने लगे। दोही चार कदम आगे बढ़े होंगे कि पत्ते खड़खड़ाये और झाडी में से एक कद्दावर शेर निकल कर एक गुर्जी जवान पर झपटा। दूसरे ने अपने साथी की मदद करनी चाही और फौरन पिस्तौल का वार उस शेर पर किया। गोली खाते ही शेर का गुस्सा बढ गया और उसने बड़े जोर से गरज कर उस दूसरे गुर्जी को भी घोडे से नीचे खैंच लिया। उनके घोडे बेतहाशा जंगल में भागे। लैला और उसकी दोनों लौंडियों के घोडे भी उनके कब्जे में न रहे और अपने अपने सवारों को लेकर भागे।

इतने ही में पीछे से कई गोलियों के चलने की आवाज लैला के कान में आई। लैला ने अपने घोडे को सभाला और पीछे की तरफ फिर कर देखा तो तीन आदमी नजर आये जो उसको इशारे से कह रहे थे कि ठहरो अब कोई खौफ नहीं है।

इन तीनों में से एक घोडा दौड़ा कर लैला के पास आया और बोला "इस शेर को हम लोगों ने मार लिया है और यद्यपि आपके सिपाहियों को जख्म भारी लगा है तो भी उम्मीद है कि उनकी जान बच जायगी।

मैं अपने साथियों को उनके जख्म बांधने को कह आया हूँ और यह कहने के लिये यहां आया हूँ कि आप अब बिल्कुल न डरें।"

यहां पर साफ साफ कह देना उचित है कि यह तुर्की जवान अला-दीन था और उसके दोनों साथी हाफिज और इब्राहीम थे। इस तुर्क की बात से लैला को पूरी तसल्ली हो गई और वह बोली—

लैला०। क्या मैं और मेरी लौंडियां उन जख्मियों की कुछ मदद कर सकती हैं?

अला०। आपके तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं। इस काम में मेरे दोनों साथी बहुत होशियार हैं क्योंकि उनको अक्सर लड़ाई झगड़ों में ऐसा मौका पड़ा करता है। आप मेहरबानी करके इसी जगह खड़ी रहें, मैं बहुत जल्द उन दोनों को देख कर लौटता हूँ।

यह कह अलादीन फिर उसी तरफ चला गया। उसके जाते ही लैला ने अपनी लौंडियों से कहा, 'आओ, घोड़े से उतर कर कुछ जगह बैठें और इन घोड़ों को भी चरने के लिये छोड़ दें क्योंकि ये अभी तक खौफ के मारे कांप रहे हैं।"

लैला जुबेदा और अमीना अपने अपने घोड़ों से उतर पड़ीं। घोड़ों की बागडोर एक पेड़ से साथ बांध दी और किनारे बैठ कर आपस में बातें करने लगीं।

लैला०। हमारे भाग्य से ही ये मुसल्मान लोग आ गये।

जुबेदा०। हां, मगर कैसा खूबसूरत जवान है!!

अमीना०। देखने से पूरा बहादुर मालूम पड़ता है तिस पर कामिल और खूबसूरत भी है।

लैला०। (कुछ नाक भौं चढ़ाकर) चुप भी रहो।

कुछ देर तक वे लोग चुप रहीं। तब तक अलादीन भी आ पहुँचा और बोला, 'आपके सिपाहियों की जान बच जायगी, इसी तरह पास

हो में एक झोंपडी है, जख्मियों को उसी में ले जाकर उनके आ. ...कर बन्दोबस्त करे देता हूँ।"

लैला०। मैं उस अहसान का बदला कहां तक दे सकती हूँ जो आपने मेरे साथ किया है। हां, उन दोनों सिपाहियों की जानिसारी का बदला देना मेरा फर्ज है, (जेब से कई अशर्फियां निकाल और अलादीन को दे कर) मेहरबानी करके यह मेरी तरफ से उनको दे दीजियेगा।

अलादीन अशर्फी लेकर बोला, "इसमें कोई शक नहीं कि वे बहादुर थे। उनको दूना इनाम मिलेगा क्योंकि इतना ही मै अपनी तरफ से उन्हें दूंगा।"

यह कह अलादीन फिर जानेही वाला था कि उसके दिल में कुछ आया और वह लैला की तरफ देख के बोला, "आपके सिपाहियों की जो कुछ दशा हुई आप जानती ही हैं, ऐसी हालत में आपका अकेले सफर करना ठीक नहीं। मैं उन आदमियों से सुन चुका हूँ कि आप टिफलिस को जा रही हैं और मैं भी उधर ही को जा रहा हूँ अस्तु मुझे उम्मीद है कि आप मेरे साथ सफर करना कबूल करेंगी।" लैला तो असल में यह चाहती थी कि किसी का साथ इस सफर में न करे मगर बहुत सी बातों को सोच विचार उसने ऐसी हालत में अलादीन का साथ छोड़ना मुनासिब नहीं समझा और इसीलिये अलादीन के साथ चलना मंजूर कर लिया। सिवाय इसके अलादीन की सूरत शक्ल से उसके दिल पर यह भी साबित हो गया था कि यह मुसलमान बहुत नेक, रहमदिल बहादुर और किसी शरीफ खान्दान का है।

लैला ने उसके साथ सफर करना कबूल किया इससे अलादीन को हद से ज्यादे खुशी हुई वह जल्द घोड़ा दौड़ा कर उन जख्मियों के पास पहुंचा और घण्टे भर के अन्दर ही पूरा बन्दोबस्त करके इब्राहीम और हाफिज को साथ लिये फिर लैला के पास पहुंच गया।

अब यहा से ये छ आदमी आगे की तरफ रवाने हुए। लैला के साथ से हाफिज को तो बडी खुशी हुई मगर इब्राहीम की तबीयत न भरी। हा थोडी दूर जाते जाते उसका शक सुबहा बहुत कम हो गया क्योंकि उसने मिरहा और लैला की चालचलन हाव भाव और बातचीत मे बहुत कुछ फर्क पाया।

अलादीन और लैला आगे आगे जाते थे। पीछे पीछे लैला की दोनों लौंडिया और उनके पीछे इब्राहीम और हाफिज थे।

इस समय लैला को देख अलादीन को ताज्जुब हो रहा था कि वह मिरहा के इश्क मे कैसे फस गया क्योंकि मिरहा और लैला में जमीन और आसमान का फर्क था। अलादीन को विश्वास हो गया कि लैला से बढ कर खूबसूरत दुनिया मे कोई न होगा।

इधर उधर की बहुत सी बातें करने के बाद लैला ने अलादीन से कहा, "मैंने सुना है कि इस जगल मे खाली जानवरों ही का खौफ नहीं है।"

अला०। और कौन सा खौफ आपको पैदा हुआ?

लैला०। कैरीकरासा का!!

अला०। ओ! वह क्या चीज है! मैंने भी उसका नाम सुना है? मुझे तो कोई डर की बात नहीं दिखाई पडती।

लैला यह सुन चुप हो रही और दोपट्टी जगलों की सैर करती जाने लगी। शाम का वक्त था जब हमारे मुसाफिरों को वह गाव दिखाई दिया जहा इन लोगों को रात भर ठहरना था और जहा से टिफ्लिस पच्चीस मील बाकी रह जाता था। मगर उस गाव के कुछ दूर इधर ही एक अजब बेढब मामला हो गया।

सडक के किनारे दो गरीब, एक बूढा और एक बुढिया बैठे हुए थे जो दोनों ही लुञ्ज और बहुत कमजोर थे। इन सवारों को आते हुए देख ये भीख मागने की नीयत से सडक पर आ बैठे। इन दोनों को देख कर

अलादीन और लैला के जी में दया आई, लैला ने एक रुपया निकाल कर बुढ़िया के हाथ में दिया और अलादीन ने भी एक रुपया निकाल कर बूढ़े को दिया, मगर जिस वक्त बूढ़े को देने के लिये अलादीन अपने बटुये से रुपये निकाल रहा था उस वक्त अलादीन का घोड़ा बहुत तेजी पर था और इत्तिफाक से अलादीन के हाथ वाले बटुये से निकल कर कई रुपये जमीन पर गिर पड़े जिनमें एक मानिक की अंगूठी भी थी जिसे देखते ही लैला चौंक पड़ी। अलादीन ने जल्दी से उतर कर रुपये और अंगूठी अपने बटुये में रख लिये और घोड़े पर सवार होकर लैला के साथ चला मगर लैला ने जब से अंगूठी अलादीन के बटुये में देखी तब से उसके दिल में तरह तरह के खयाल पैदा होने लगे। क्योंकि उसे यह वही अंगूठी मालूम हुई जो रात उसकी उंगली से निकाली गई थी। सराय वाले ने जो हाल कैरीकरामा का बयान किया था वह बिलकुल आंखों के सामने फिरने लगा और उसने कैरीकरामा के लिबास के बारे में जो कुछ बयान किया था वह भी याद आ गया। वह अलादीन के साथ कैरीकरामा के हुलिये का मिलान करने लगी। कैरीकरामा का कद अलादीन के कद से बिलकुल मिलता था अस्तु उसे यकीन हो गया कि जरूर कैरीकरामा यही है। क्योंकि, वह सोचने लगी, कि अगर यह कैरीकरामा नहीं है तो यह अंगूठी इसके पास कैसे आई?

फकीरों को रुपया देकर चलने के बाद बहुत दूर तक लैला अपना मुंह अलादीन की तरफ से फेरे रही और तब अपने को बहुत कुछ सम्हाल कर अपने घोड़े को तेज करती हुई अलादीन से बोली, "घोड़े को तेज कीजिये, अब बहुत देर हो रही है।"

अलादीन को लैला की तबीयत की क्या खबर थी, उसने खुशी के साथ 'बहुत अच्छा' कहा और अपने घोड़े को बढ़ाया। कई मिनट में गांव में पहुंचा, उसमें एक बहुत ही खराब छोटी सी सराय थी जिसमें भाग साथ छोटे छोटे कोठरे थे। उस सराय के पास ही एक मकान ललैा के

उतरने के काबिल था मगर उसका मालिक एक दौलतमन्द आर-मेनियन था। लैला ने दरियाफ्त किया कि इस मकान का मालिक कौन है और वह इसमें मुझे उतरने देगा या नहीं ?

इत्तिफाक से मालिक मकान वहीं खड़ा था। उसने लैला की बात सुन कर कहा, "यह मकान मेरा ही है मगर इस वक्त खाली नहीं है।"

लैला उसका जवाब सुन उदास हो गई मगर अल्लादीन समझ गया कि आरमेनियन लालची है अस्तु उसने किनारे ले जाकर उसे बहुत कुछ समझाया और कहा कि मकान देने में तुम उज्र मत करो, किराये से बहुत ज्यादा तुमको मिल जायगा। वह लालची आरमेनियन इस बात को सुन खुश हो गया और उसने लैला को उस मकान में चलने के लिये कहा।

अल्लादीन उसी सराय में उतर गया और लैला जाहिरा में उससे अच्छी तरह बातचीत कर के बोली "मैं इसी मकान में ठहरती हूँ सुबह को हमारा आपका फिर साथ होगा।" अलादीन इस बात को सुन और भी खुश हुआ।

आगे आगे लैला और पीछे पीछे आरमेनियन और उसकी दोनों लौंडियां उस मकान की तरफ चलीं पर जब वे अल्लादीन की नजर की ओट हो गईं तब उसने अपनी दोनों लौंडियों को यह कह कर कि "जल्दी मेरे साथ घोड़ा फेंकती चली आओ और अपना जान बचाओ" घोड़ा दौड़ाया। आरमेनियन मुंह देखता ही रह गया और लैला अपनी दोनों लौंडियों के साथ उस शहर के बाहर निकल गई।

आठवां बयान

लैला बराबर भागती चली गई और उसकी दोनों लौंडियां भी उसके पीछे पीछे घोड़ा फेंकती चली गईं, मगर उस तेजी से [illegible] सकीं कि [illegible] जो रास्ता उसे सामने नजर आया [illegible]

इसी पर चल पडी मगर बहुत दूर निकल जाने बाद अफसोस ! वहा से भी मिली जहा से एक पगडंडी घूमी हुई थी तो लैला जर देने के लिये अपनी का रास्ता लिया। इस वक्त घोड़े थके हुये मारे गई थी। उसकी खूबसूरती दिन भर इन पर बड़ी मेहनत पडी थी अस्तु धीरे धीरे चलने लगी। अब उसकी लौंडियों सतब से तुम्हें उसकी कोई भागने का सबब मालूम करें।

लैला०। मेरे भागने से तो तुम लोगों के कतान के र) क्या मेरे सब क्योंकि तुम उस खतरे को नहीं जानती थीं पक्का हाल मे किसी के हाथ से कि वह जवान जिसने शेर को मारा और जो गाव साथ आया तथा जिसे तुम लोगों ने तुर्की शरीफजादा मुलाकात की जिसने मशहूर डाकू कैरीकरामा था। बड़ी चालाक

जुबेदा०। है ! क्या वही था ?

लैला०। हा वही था जिसने नकाव डाल सराय में चोरी की थी। तुम्हें नहीं मालूम कि सराय में भठियारे से और मुझसे बडी देर तक बातें होती रहीं। उस वक्त तुम लोग सफर की तैयारी में लगी हुई थीं। भठियारे ने कैरीकरामा का हुलिया बहुत कुछ मुझसे बयान किया था। जब वह तुर्की रास्ते में मिला तब मैंने उन बातों पर कुछ खयाल नहीं किया, मगर जब उसने फकीर को रुपया देने के लिये बटुआ खोला तब कई रुपयों के साथ साथ एक अंगूठी भी जमीन पर गिर पडी, जिसे देखते ही मैं पहिचान गई कि यह मेरी वही अंगूठी है जो रात को सराय में मेरी अंगुली से उतारी गई थी। इसके बाद मैंने हुलिया मिलाना शुरू किया। वे सब निशान उसमें मिल गये जो भठियारे ने कैरीकरामा के बारे में मुझसे कहे थे। उस वक्त मैं बहुत डरी मगर अपने को ऐसा सम्भाला कि वह बिल्कुल नहीं समझ पाया कि लैला मुझे पहिचान गई।

जुबेदा०। अफसोस ! ऐसे खूबसूरत नौजवान के ऐसे बुरे काम !

शमीना०। मैंने तो समझा था कि हिफाजत करने वाला एक

कैरी०। फिर तो मैं अपने इस डाकू के पेशे को बिल्कुल छोड़ दूं और किसी दूसरे शहर में जाकर जन्म भर तुम्हारे साथ खुशी से दिन बिताऊं और या फिर उस घाटी गुलिस्तां में बस जाऊं जो स्वर्ग से भी बढ़कर है, जहां हमेशा बहार का मौसिम बना रहता है और जहां से इनामी दौलत हम लोगों को मिलने वाली है।

निरा०। एक हिसाब से हम लोगों का आधा काम तो हो ही गया है बल्कि मुझे तो यह उम्मीद है कि हमारे गरोह वाले अलादीन को भी गिरफ्तार करके अब लाते ही होंगे क्योंकि वे लोग बड़ी तेजी से उसके पीछे गए हैं।

कैरी०। और तुम एक काम करो (हाथ में वह अंगूठी दे कर) यह अंगूठी लो और खुद लैला बन कर टिफलिस पहुंच जाओ, वहां दोस्त और तुमसे जरूर मुलाकात होगी। अगर सुनो कि अलादीन सब अपने साथियों के वहां पहुंच गया है तब तो समझ लेना कि हम लोगों की मेहनत बिल्कुल बेकार हो गई और सीधे लौट कर अपने उस पहाड़ी मकान में चली आना लेकिन अगर देखना कि अलादीन वहां नहीं पहुंचा तो समझ लेना कि हम लोगों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और तब वहीं ठहर जाना, मैं भी बहुत जल्द पहुंच जाऊंगा।

निरा०। और लैला का क्या होगा?

कैरी०। असली अंगूठी के खो जाने से शायद तो उदास होकर वह अपने घर लौट गई होगी और शायद अगर टिफलिस गई भी तो क्या हर्ज है, मैं काजी और मसऊद के साथ उसी तरफ जाता हूं और उसे बगैर गिरफ्तार किये न छोड़ूंगा।

इसके बाद का दिन निरा और कैरीदगामा ने इसी जंगल में गुजारा। निरा कैरीदगामा की खास प्यारी बीबी थी और कैरीदगामा को बहुत चाहती थी, इसी तरह कैरीदगामा भी उससे बहुत मुहब्बत रखता था। यह बात तै हो चुकी थी कि निरा सीधी टिफलिस को जाये और

कैरीकरामा कुछ देर अलादीन की राह देख कर तब टिफलिस को
रो और रास्ते में मौका देख लैला को भी गिरफ्तार कर ले। अस्तु
सन्ध्या को दोनो ने वहां से कूच किया। मिरहा अपनी दोनो लौंडियों
को साथ लेकर टिफलिस की तरफ रवाने हुई और कैरीकरामा कुछ देर
तक इन लोगों की राह देखता रहा जो अलादीन को गिरफ्तार करने
गये थे। जब वे न आये तो लाचार कुछ देर वाद यह भी मसऊद और
गाजी को साथ लेकर टिफलिस को रवाना हुआ और एक पगडडी रास्ते
से जल्दी ही उस सडक पर जा पहुँचा जहा से लैला जाने वाली थी।
एक झाडी में छिप कर वैठ रहा और सडक की तरफ टकटकी लगा कर
देखने लगा। थोडी ही देर के वाद अपनी लौंडियों और वहुत से सिपा-
हियों को साथ लिए लैला आती दिखलाई पडी, मगर इतने आदमियों
को उसके साथ में देख कैरीकरामा की हिम्मत न पडी कि उस पर हमला
करे। लाचार अफसोस करके रह गया। लैला आगे वढ गई और
कैरीकरामा वहुत देर तक वहीं वैठा सोचता रहा कि अव क्या करना
मुनासिव है। आखिर उसने यह निश्चय कर लिया कि लैला और
अलादीन के पहिले ही टिफलिस पहुंच कर टोनर से मिले और कोई
अच्छी कार्रवाई करे।

यह सोचते ही कैरीकरामा ने मसऊद के साथ अपनी पौशाक वदल
ली और गाजी को वहुत कुछ समझा कर खुद टिफलिस की तरफ रवाना
हुआ, फिर भी सीधी सडक छोड पेचीली ही राह से चला। इसी वजह
से लैला या अलादीन से उसकी मुलाकात न हुई।

इधर मिरहा वहा से रवाने होकर जङ्गल जङ्गल छिपती हुई टिफ-
लिस की तरफ जा रही थी। वह वरावर दिन को सफर करती और जगह
जगह अपने घोडे को आराम देती चली जाती थी।

एक दिन दोपहर के वक्त जव कडी धूप पड रही थी, मिरहा एक
घने जङ्गल में पहुची जहा एक छोटा सा पानी का झरना भी वह रहा

आराम और तरावट लेने के लिये मिरहा वहा उतर गई। थोड़ीही देर बाद कई घोड़ो के टापो की आवाज आई। पहिले तो मिरहा यही समझी कि शायद अलादीन वगैरह आ रहे है जिन पर उसकी सवारी खुल गई थी और इसी सबब से वह अपनी लौंडियो के साथ झाडी में छिप गई मगर जब वे घोड़े पास आये तो शक मिट गया और मालूम हुआ कि तीन औरतें घोड़ो पर सवार चली आ रहीं हैं जो धूप के सबब अपने चेहरो पर नकाब डाले हुए हैं। इनको देख मिरहा आड से निकल आई। लैला ने मिरहा को देख कर अपने चेहरे से नकाब हटा ली और उसके चेहरे पर निगाह डालते ही मिरहा समझ गई कि मशहूर खूबसूरत लैला यही है।

लैला ने भी उस धूप की गर्मी में आराम करने के लिये उसी जगह को पसन्द किया जहा मिरहा टिकी हुई थी और घोडे से उतर पडी। वह खुशी खुशी मिरहा से मिली और उसी जगह बैठ कर उसका नाम गाव पूछने लगी मगर अफसोस! लैला बिल्कुल नहीं जानती थी कि इस फरेबी मिरहा के पेट में वैसा ही जहर भरा हुआ है जैसा उस साप के मुंह में जो इन दोनो के पास ही घास पर घूम रहा है और घड़ी घड़ी [illegible] कर इन दोनो की तरफ देखता हुआ सोच रहा है कि पहिले किसको काटूं !!

दसवां बयान

अगर सचमुच देखा जाय तो मिरहा बहुत ही नेक और पाक औरत थी। उसको नेकी इज्जत और धर्म्म का बहुत खयाल रहता था। जब इसकी शादी हुई थी तब उसको या उसके बाप मा को यह बिल्कुल नहीं मालूम था कि वह एक डाकू के साथ ब्याही जा रही है और शुरू में मिरहा जब कैसरगामा के पास आई तो थोड़े दिनों तक [illegible] की चाल से उसे बहुत ही बुरी मालूम होती थी मगर कुछ ही दिनों बाद

कैरीकरामा से उसको इतनी मुहब्बत हो गई कि जिसको सब से बढ़ कर पक्का इश्क कहना चाहिये। इसी वजह से अब जो कुछ भी कैरीकरामा उसे कहता था उसे मिरहा दिलोजान से पूरा करती थी। इस वक्त अगर कैरीकरामा का हुक्म न होता तो वह लैला को कभी बुरी निगाह से न देखती मगर क्या करे, वह कैरीकरामा और उसके हुक्म को सब से बढ़ कर समझती थी। इस समय लैला को देख कर उसकी खूबसूरती की वजह से मिरहा के दिल में एक तरह की मुहब्बत पैदा हुई, मगर साथ ही कैरीकरामा के हुक्म को ख्याल करके उसको अपनी नीयत बदलनी पड़ी और वह सोचने लगी कि किस तरह लैला को गिरफ्तार करना चाहिये। लड़ कर तो किसी तरह भी वह लैला को गिरफ्तार नहीं कर सकती थी क्योंकि दोनों के साथी बराबर थे इसलिये मिरहा ने यह सोचा कि लैला के साथ ही साथ सफर करे और मौका पाकर उसे किसी ऐसी जगह ले जाय जहां कैद कर लेना कुछ मुश्किल न हो।

बहुत देर तक लैला और मिरहा मामूली बातें करती रहीं। इसके बाद खाना लाने के लिये मिरहा ने लौंडियों को हुक्म दिया। जो कुछ सफर में खाने को मौजूद था ला कर उन लौंडियों ने वहीं रक्खा जहां ये दोनों बैठी हुई थीं।

मिरहा की खूबसूरती भी किसी तरह कम न थी इसलिये लैला को इस बात का गुमान भी न हुआ कि मिरहा उसके साथ बदी किया चाहती है, अस्तु वह उसके साथ खाने से इन्कार न कर सकी। दोनों ने मिल कर भोजन किया। इसके बाद लौंडियों ने जल्दी से जमीन साफ कर डाली और फिर दोनों में मीठी मीठी बातें होने लगीं। इतने ही में एक और औरत वहां आ पहुंची जो अपने बगल में एक मामूली छोटा सा सन्दूक लिये हुई थी। इस औरत की पोशाक बिल्कुल तुर्की ढंग की थी, उम्र लगभग तीन पैंतीस वर्ष के होगी, रङ्ग रूप सांवला था, चेहरे पर [illegible] की नकाब डाले हुए थी।

इन दोनों औरतों के पास पहुँच कर इसने कहा, "मेरे पास हर तरह की अच्छी अच्छी दवायें और बढ़िया से बढ़िया इत्र मौजूद है जिन्हें देख आप बहुत खुश होंगी। मुझे मामूली औरत न समझियेगा। मैं बराबर घूमा ही करती हूँ और अच्छे अच्छे दरबारों में मेरी चीजें पसन्द की जाती हैं तथा मेरी दवाओं के मुकाबले में अच्छे अच्छे हकीमों की दवा हार मानती है। (बैठ कर और सन्दूक खोल कर) यह देखिये इस बुकनी से किसी तरह का भी जहर हो मैं आराम कर सकती हूँ। अभी दो महीने हुए हैं कि रूस के एक बड़े भारी सरदार को मैंने इसकी बदौलत आराम किया है। उनके गुलाम ने कहवे में मिला कर उनको जहर दे दिया था। मेरी दवा न होती तो कोई उम्मीद उनके बचने की न थी।"

इस औरत का नाम फात्मा था जिसकी बातों को सुन कर मिरना और लैला दोनों हंस पड़ीं और सोचने लगीं कि यह बोलने में बड़ी ही तेज है, मगर इनके हंसने से फात्मा को और भी बात करने का हौसला हुआ और वह बोली, "आप यह न समझियेगा कि मैं झूठ बोलती हूं। मैं खुदा की कसम खाकर कहती हूँ कि जो कुछ मैंने कहा उसमें से एक बात भी झूठ नहीं है। अभी थोड़े ही दिन हुये कि मैंने एक आदमी को ऐसे तरीके से ऐसे मजे में आराम किया है कि जिसका किस्सा सुन कर आप बहुत ही खुश होंगी और मुझे तो अभी तक इस बात का शक है कि इसे आराम करने के लिये आंखों में पट्टी बांध कर लोग मुझे बिहिश्त (स्वर्ग) तो नहीं ले गये थे। तभी से मुझे यह भी शक होता है कि बिहिश्त भी इसी दुनिया में बल्कि शायद इसी पहाड़ी के आस पास कहीं है क्योंकि बिहिश्त में जिन जिन चीजों का होना मैंने किताबों में पढ़ा है वे सब इस मैंने अपनी आंखों से देखी थीं।'

फात्मा की आखिरी बात सुन लैला और मिरना को बहुत ही ताज्जुब हुआ बल्कि मिरना तो उस किस्से को सुनने के लिये और भी बेचैन हुई क्योंकि उसको शक हो गया कि कहीं यह इसी बाग़ी गुलिस्तां के

ज़िक्र तो नहीं करती जिसकी तलाश में कैरीकरामा परेशान है या जिसके सबब से इस बिचारी लैला को तकलीफ पहुँचाने का इरादा मैं कर रही हूँ।

निरहा०। हा हा, मैं जरूर सुनूंगी, कहो वह कौन सा किस्सा है?

लैला०। हा, मेरा भी जी चाहता है कि उस अद्‌भुत कहानी को सुनू।

फात्मा०। अच्छा तो सुनिये मैं कहती हूँ।

फात्मा ने इस तरह कहना शुरू किया, "अट्ठारह महीने से कुछ ज्यादा की बात है। जाडे के दिन थे और मैं टिफलिस ही में थी जहा बडे बडे बडे इलाज मेरे हाथों से हुए थे तथा वहा के रहने वाले मुझे बहुत चाहने भी लगे थे। एक दिन एक इज्जतदार आदमी मेरे मकान पर आया और बोला, 'मै तुम्हारी तारीफ सुन कर आया हूँ। मेरा एक दोस्त बीमार है। अगर तुम उन्हें अच्छा कर दो तो मैं तुम्हारा जन्म भर एहसान मानूंगा और जहा तक बन पडेगा तुम्हें इनाम देने में भी कसर न करूंगा। मगर उस दोस्त के मकान तक ले जाती वक्त रास्ते में कई जगह तुम्हारे आखों में पट्टी बाधने की जरूरत पडेगी और सफर भी कुछ दूर का है। अगर तुम इसे कबूल करो तो जितना तुम चाहोगी मै उतना ही इनाम दूगा और हमेशा तुम्हारा दोस्त और मददगार बना रहूँगा।"

'यह कह कर उसने कुछ रुपया भी मेरे हाथ पर रख दिया। मै राजी हो गई और जहा वह कहे वहा उसके साथ चलने का वादा कर दिया। जब शाम हो गई बल्कि कुछ कुछ अन्धेरा हो गया तब वह मुझे लेने के लिए आया और दो घोडे भी अपने साथ लेता आया जिन पर हम दोनों सवार हो टिफलिस से रवाना हुए। रात भर बराबर जंगल ही जंगल चले गये। जब सुबह हुई एक पहाड के दर्रे में कई घन्टे [illegible] किया हम लगों नदी बहुत ज्यादे थी जिसे दूर करने के लिए

मेरे साथी को आग सुलगानी पडी थी। इतनी देर में हमारे घोडे भी सुस्त और ताजी हो गये। हम लोग फिर वहा से रवाने हुए। कुछ आगे जाकर उसने मेरी आखो पर पट्टी बाध दी, वह भी ऐसी कि मैं किसी तरह जरा भी नहीं देख सकती थी। कहिये, इस किस्से को सुनते सुनते आप लोग घबडा तो नहीं गई ?'

सिग्रा०। नहीं नहीं, कहती जाओ, मैं बहुत दिल लगा कर सुन रही हूँ।

कामा०। अच्छा तो सुनिये।

मेरी आखो पर पट्टी बधी गई पर मै बराबर घोडे पर सवार रही। मेरे घोडे का बाग वही आदमी थामे हुए था। थोडी दूर जाने के बाद घोडे की चाल से मुझे मालूम पडा कि मै किसी ऊ ची नीची जमीन पर चल रही हू। जब शाम हुई हम लोग रुक गये। मेरी आखो पर से पट्टी खोल दी गई, मैने देखा कि किसी बडे भयानक जगल में आ पहुची हूँ। सर्दी बहुत ज्यादे थी जिसे मिटाने के लिए मेरे साथी ने वहा आग सुलगाई और कुछ खा पी कर आराम करने बाद हम लोग फिर चल खड़े हुए। मेरी आखो पर फिर पट्टी बाधी गई मगर अबकी घोड़े पर सवार न हुए, पैदल ही चलना पडा। दोनो घोडे खाली बागडोर से उसी जगह एक पेड के साथ बाध कर छोड दिये गये।

वह आदमी अब भी मेरा हाथ पकड कर लिये जाता था। चाल से मालूम हुआ कि मै अब किसी खोह में जा रही हूँ। थोडा देर चलने बाद रुक कर उसने मुझसे कहा, 'देखो अब तुम्हें सीढियां उतरनी पडेंगी।" यह सुन मै होशियार हो गई। इतने ही मे एक दर्वाजा खुलने की आवाज आई और वह मेरा हाथ पकड कर कई चक्करदार सीढियों से नीचे उतार ले गया। नीचे पहुचने के साथ ही हवा गर्म मालूम होने लगी और सर्दी से घबराई हुई तबीयत ठिकाने हुई। कुछ आगे बढने के साथ ही पीछे का दर्वाजा इस जोर से बन्द हुआ कि मै डर गई, ऐसा मालूम हुआ मानों दो पत्थर की चट्टानें आपस में लड गई हों।

जैसे जैसे आगे जाते थे हवा वहुत अच्छी मालूम पड़ती थी और वहते हुए झरनों की आवाज बरावर कानों में आती थी। थोडी दूर निकल जाने के वाद मेरे साथी ने मेरी आखों की पट्टी खोल दी। मालूम हुआ कि रात हो गई और चादनी छिटकी हुई है। उसी चादनी में मैं चारो तरफ निगाह दौडा दौडा कर वडे शौक से देखने लगी। हर तरफ मेवों के दरख्त लहलहा रहे थे और हद से ज्यादे गुलाव के फूल खिले हुए थे। वाहर इतनी ज्यादा सर्दी थी पर वहा वहार का मौसिम हो रहा था। मैं उस जगह की तारीफ कहा तक करू ! विहिस्त भी उससे वड कर न होगा। मैं ताज्जुव भरी निगाहों से चारो तरफ देख ही रही थी कि मेरे साथी ने हस कर मेरी तरफ देखा और कहा, "देखो फात्मा ! खवरदार, वाहर की दुनिया में जा कर यहा का हाल किसी से मत कहना, अगर कहोगी भी तो कोई न मानेगा उलटे तुम्हें झूठा वनावेगा।"

लैला०। वेशक ऐसी ही वात है।

फात्मा०। मगर मैं खुदा और रसूल की कसम खाकर कहती हूँ कि मेरा किस्सा विल्कुल सच्चा है !

निरहा०। हा हा, कहती चलो, रुको मत ! (दिल में) चाहे और कोई माने या न माने पर मै तो जरूर सही मानती हूँ।

फात्मा०। अच्छा सुनिये मैं कहती हूँ। वह आदमी मुझको फूलों और मेवों के दरख्तों में घुमाता फिराता ले चला। रास्ते में उसने कुछ फूल तथा फल तोड के मुझे भी दिये। अहा ! जो स्वाद मुझे उन फलों से मालूम हुआ मैं उसे जन्म भर न भूलूंगी। इसके वाद मेरा साथी मुझको एक छोटी सी इमारत की तरफ ले चला जो वहुत ही खूबसूरत और पत्थरों की वनी हुई थी तथा चन्द्रमा की रोशनी पडने से खूव चमक रही थी। पास ही उसके एक छोटा सा पानी का झरना भी वह रहा था। चारों तरफ गुलाव खिले हुये थे जिनकी मीठी खुशबू सब तरफ फैल

रही थी, मुझे उस मकान के अन्दर जाना पड़ा क्योंकि उसी में वह बूढ़ा मरीज था जिसके लिये मुझे ऐसी अजूबी जगह में जाना नसीब हुआ था।

मैं थोड़े ही में अपनी कहानी समाप्त किया चाहती हूँ। आठ दिन तक वहां रह कर मैं उस बीमार की दवा करती रही और जब तक वहां रही बराबर घूम घूम कर उस जगह का आनन्द लेती रही। इस बीच में वह बीमार भी चङ्गा हो गया। जब तक मैं वहां रही सिवाय मेरे, मेरे साथी के, और उस बीमार के, चौथा और कोई कभी भी दिखाई न दिया।

सिरहा०। क्या तुमने वहां और भी कुछ देखा?

फात्मा०। मैंने तो इतनी चीजें वहां देखीं कि अगर बयान करूं तो दो दिन बीत जायें। और चीजों के सिवाय कई खोह भी वहां मेरे देखने में आए मगर डर के मारे मैं उनके अन्दर न गई। आखिर मेरा साथी मुझे वहां से वापस ले चला। उस जगह को छोड़ते वक्त मुझे कितना रञ्ज हुआ मैं ही जानती हूँ।

फात्मा ने इतना कहा ही था कि सिरहा एक दम चौंक कर चिल्ला उठा।

ग्यारहवां बयान

सिरहा के चिल्लाने से सभों को ताज्जुब हुआ लौंडियां भी उसी जगह दौड़ आईं और 'क्या हुआ?' 'क्या हुआ?' पूछने लगीं। सिरहा ने अपने पैर का कपड़ा हटाया और तब मालूम हुआ कि एक सांप उसके जूते के साथ लटका हुआ है। उस सांप को देख सब के सब घबड़ा गये और विश्वास हो गया कि जरूर इसी ने सिरहा को काटा है। अब सिरहा के जीने से सभों को नाउम्मेदी हो गई मगर फात्मा ज्यों की त्यों उसी तरह बेखौफ बैठी रही। उसके चेहरे से किसी तरह की घबराहट या उदासी न मालूम पड़ती थी। उसने उसी जगह से एक लकड़ी उठा कर सांप को मार डाला और इसके बाद लौंडियों से बोली, "सिरहा को ऊपर ले चलो।"

फात्मा के कहने से सब कोई मिरहा को ऊपर ले आये। फात्मा ने अपने सन्दूक से एक दवा निकाल कर उस जगह लगाई जहा सांप ने काटा था और जहर मिटाने वाली कोई बुकनी पानी में मिला कर पिलाई भी।

मिरहा की हबशिन लौंडी दौड कर जंगल से एक बूटी लेने गई जिसको वह साँप का जहर दूर करने के लिये बहुत अच्छा समझती थी।

अमीना मिरहा का सर अपनी गोद मे लिये हुये थी और जुबेदा हाथ थामे तरद्दुद से उसका मुंह देख रही थी। लैला आखों से आसू गिराती हुई घुटना टेके उसके बचने के लिये भगवान से प्रार्थना कर रही थी।

मिरहा पर बदहवासी आती जाती थी, जिसे देख लैला घबड़ा कर उठ खडी हुई और फात्मा से पूछने लगी, "क्या तुम मिरहा को बचा सकती हो? अगर तुम्हारी मेहनत से इसकी जान बच जायगी तो मैं तुमको मालामाल कर दूंगी।"

फात्मा०। आदमी का काम दवा करने का है, मारना और जिलाना खुदा के अख्तियार में है। मैं अभी ठीक ठीक नहीं कह सकती कि तुम्हारी हमजोली बचेगी या मरेगी।

लैला०। (अफसोस और तरद्दुद से) तुम्हारी बातों से तो कोई उम्मीद नहीं पाई जाती!!

इतने मे मिरहा ने आखें खोलीं और धीरे से लैला की तरफ देख कर कहा, "हा, मेरे बचने की अब कोई उम्मीद नहीं है, मै समझती हूँ कि मेरी मौत मेरे पास आ खड़ी है, मगर अफसोस! लैला, मेरे सबब से तुमको बहुत तकलीफ हुई!!"

लैला को यह सुन ताज्जुब हुआ कि इसने मेरा नाम कैसे जाना? मगर मिरहा लैला के चेहरे पर ताज्जुब की निशानी देख कर बोली, "प्यारी लैला! तुमको मैं पहचानती हूँ और मुझको तुमसे बहुत कुछ

लैला० । क्या मेरा और भी कोई दुश्मन है ?

मिरहा० । (बहुत बारीक और आखिरी आवाज में) हां, दोनर !

इसके बाद मिरहा ने अपनी आंखें बन्द कर ली और फिर कोई आवाज उसके मुंह से न निकली । लैला को उसकी हालत पर बहुत ही अफसोस हुआ और वह यह समझ कर कि इसका दम निकल गया आंसू बहाती वहां से उठ खड़ी हुई और उस जगह गई जहां सब औरतें बैठी हुई थीं ।

लैला की सूरत देखते ही से वे समझ गईं कि मिरहा का काम तमाम हो गया । सभों को अफसोस हुआ और उसकी दोनों लौंडियां तो फूट फूट कर रोने और चिल्लाने लगीं ।

फातमा ने कहा, "खुदा के कारखाने में कोई हाथ नहीं डाल सकता ! मारना जिलाना सब उसी के अख्तियार में है ! मौत के सामने कोई दवा काम नहीं करती !" इस वक्त फातमा की बातें लैला को बहुत बुरी मालूम हुईं, क्योंकि वह समझ गई कि अपनी और अपनी दवा की तारीफ में जो कुछ यह औरत डींग हांक चुकी है उसी को छिपाने के लिये अब यह सब बात बना रही है । फिर भी वह फातमा से कुछ न बोली और मिरहा की दोनों लौंडियों को दिलासा देने के बाद कहने लगी, "अब तुम लोग इसके दफन की फिक्र करो ।"

इसी समय लैला को मिरहा की वह बात याद आई जो उसने यहां से तुरन्त चले जाने के बारे में कही थी, अस्तु वह फातमा के हाथ में कुछ अशर्फी दे अपनी दोनों लौंडियों के साथ घोड़े पर सवार हो वहां से रवाने हो गई ।

कुछ दूर निकल जाने बाद लैला ने मिरहा की बातें अपनी लौंडियों से कहीं और वह अंगूठी भी दिखाई । दोनों लौंडियों को अंगूठी मिलने की बड़ी खुशी हुई और वे देर तक इस बात पर ताज्जुब करती रहीं कि यह [illegible] की चीज़ थी ।

लैला बोली, "मगर मैं मिरहा से यह वादा कर चुकी हूँ कि कोई ऐसा काम न करूंगी जिससे कैरीकरामा को तकलीफ पहुँचे।"

लैला सड़क पर पहुँची और एक देहाती से जो उसी सड़क पर जा रहा था पूछा, "टिफलिस की राह कौन है?" जिसके जवाब में उस देहाती ने कहा, "यही सड़क सीधी टिफलिस को गई है जो यहां से बीस मील है।"

लैला मिरहा के बारे में बहुत कुछ सोचती विचारती टिफलिस की तरफ रवाना हुई मगर अफसोस, उसे मिरहा की जबान से यह बात नहीं मालूम हो पाई कि अलादीन कैरीकरामा नहीं है!

बारहवां बयान

उस समय चार बजे होंगे जब लैला मिरहा को मुर्दा छोड़ टिफलिस की तरफ रवाने हुई। घोड़े काफी सुस्ता चुके थे इसलिये बीस मील का सफर सिर्फ तीन घंटे में खतम हो गया और लगभग सात बजे शाम के लैला टिफलिस में जा पहुँची। अभी बहुत अन्धेरा नहीं हुआ था जब पूछती पाछती वह उस मंसूर सौदागर के दर्वाजे पर जा पहुँची जहां इसको जाना था। यह मंसूर एक बहुत ही मशहूर सौदागर था और इस शहर के छोटे छोटे बच्चे भी इसका नाम जानते थे इसलिये लैला को उसके मकान तक पहुँचने में कोई दिक्कत न हुई।

यह घबराहट लैला ने भी देखी मगर इसका कुछ खयाल न किया और मिरहा की आखिरी बात जो उसने टोनर के बारे में कही थी अपने दिल ही में छिपा रक्खी। टोनर लपक कर लैला के पास आया और अदब से सलाम करके बोला, "आइये, मकान के अन्दर चलिये!" लैला ने भी हँस कर टोनर की सलाम का जवाब दिया और उसके पीछे पीछे मसूर सौदागर के आलीशान मकान में चली। फाटक के अन्दर जाते ही कई आदमियों ने उनके घोड़े थाम लिये। लैला और उसकी लौंडियां नीचे उतरीं। इसी समय एक बूढ़ी औरत भी घर से निकल कर लैला के पास पहुँची जो देखने में बड़े दर्जे की कोई लौंडी मालूम पड़ती थी। वह लैला को साथ लिये एक बहुत अच्छे सजे कमरे में पहुँची और बोली, "यह कमरा आपके रहने के लिये ठीक किया गया है। हमारा मालिक मसूर सौदागर किसी जरूरी काम के लिये कहीं बाहर गया है मगर जाती वक्त हम लोगों से कह गया है कि आपके आने पर आपके साथ वही बर्ताव करें जैसा कि इस मकान के मालिक के साथ किया जाता है।

लैला०। मैं उनको धन्यवाद देती हूँ, मगर यह तो कहो कि वे आवेंगे कब तक?

बूढ़ी औरत०। वे दो ही एक दिन में आ जायँगे और तब तक आप को किसी तरह की तकलीफ न होगी। आप इस मकान को अपना ही समझें और हम लोगों को अपने ही लौंडी गुलाम मान कर हुक्म दें कि आपके लिये और किस चीज की जरूरत है?

लैला०। मुझे और किसी चीज की जरूरत नहीं है और मेरा काम मेरी इन्हीं दोनों लौंडियों से चल जायगा, मगर मैं चाहती हूँ कि जब तक तुम्हारे मालिक न आ जायें तब तक मैं यहां अकेली ही रहूँ।

बूढ़ी०। बहुत अच्छा, जैसा आपकी मर्जी! यह देखिये बाग में जाने का दर्वाजा है, जब आप चाहें वहां जाकर अच्छी तरह टहल सकती हैं, आपको कोई भी न देख सकेगा, और यहां बाग में पिछली तरफ

एक दर्वाजा भी है जिसे खोल कर आप जब चाहें बाहर की तरफ भी जा सकती हैं। ताली इसकी वह खूंटी से लटक रही है। इसके सिवाय और जो कुछ जरूरत हो मै हाजिर ही हूँ।

पहिले लैला ने घूम कर उन कमरों को देखा जिनमें उसका डेरा डाला गया था। एक कमरा बैठने, एक सोने, और एक नहाने के लिये ठीक किया गया था। जरूरत की सभी चीजें इन कमरों में मौजूद थीं।

लैला अभी अभी सफर से आई थी इसलिये उसके बदन पर गर्द पटी हुई थी। उसने पहिले नहाने का विचार किया और अच्छी तरह नहाने धोने बाद जब बैठने वाले कमरे में आई तो वहां अच्छी अच्छी खाने की चीजें कायदे से टेबुल पर सजी हुई देखीं जिसके प एक चांदी की घंटी इस लिये पड़ी हुई थी कि जब किसी को बुला) इसी जररत पड़े तो इसको बजा कर बुलायें। ई है।

लैला खा पी कर निश्चिन्त हुई। अब उसको मालूम हुआ कि े से सफर की तकलीफ समाप्त कर एक आराम की जगह पहुंच गई, मगर मन्सूर सौदागर के न मिलने से वह कुछ उदास थी क्योंकि उसे यह जानने की बहुत जल्दी थी कि उसे इतनी दूर से मन्सूर ने क्यों बुलाया। उस बूढ़ी औरत ने फिर आकर लैला से पूछा, "और जिस चीज की जरूरत हो हाजिर की जाय?" जिसके जवाब में लैला ने कहा, "बस अब मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है।" जिसे सुन वह बूढ़ी औरत वहां से चली गई।

रातभर इन लोगों ने आराम किया। सुबह उठ कर लैला नहाने के कमरे में गई और तब तक लौंडियों ने वहां आ कर खाने पीने की चीजें टेबुल पर सजा दीं। लैला खा पी कर बाग में टहलने गई। इस बाग के तीन तरफ ऊंची दीवार और एक तरफ सौदागर का मकान था। बाग बहुत ही खूबसूरत और अच्छे अच्छे फल फूलों से भरा हुआ था जिसमें घंटे दो घंटे तक लैला अपनी लौंडियों के साथ टहलती रही, फिर अपने कमरे

में आई। उस वक्त वह बूढ़ी औरत वहां मौजूद थी जिससे पूछने पर लैला को मालूम हुआ कि सौदागर कल जरूर यहां पहुंच जायेगा।

शाम को लैला जब बाग से घूम कर कमरे में आई तब उसी बूढ़ी औरत ने पहुंच कर कहा, "एक औरत आपसे मिलने के लिये आई है, अगर हुक्म हो तो हाजिर करूं।"

लैला०। (ताज्जुब से) कौन औरत? मुझसे तो यहां किसी से जान पहिचान नहीं है!!

बूढ़ी०। उसने अपना नाम फातमा बतलाया है।

लैला०। (कल की बातें याद करके) हां ठीक है, उसे आने दो।

लैला का हुक्म पा कर बूढ़ी औरत चली गई और फातमा को ले आई। आज फातमा वही लिबास पहिने हुई थी जो कल उसके बदन पर था हां, मगर दवा का सन्दूक उसके बगल में न था। फातमा ने लैला को झुक कर आदाब किया और बोली—"यकायक मेरे आने से आपको जरूर ताज्जुब हुआ होगा।"

लैला०। ज्यादे ताज्जुब तो यह है कि तुमको मेरा पता कैसे मालूम हुआ।

फातमा०। (असल बात का जवाब न दे कर) मगर मैं आपके पास एक जरूरी मजहबी बात के लिये हाजिर हुई हूं।

लैला०। वह क्या?

फातमा०। जब मिसरा को सरा छोड़ कर आप चलीं आईं तब मैं दोनों लौंडियों की जुबानी मुझे मालूम हुआ कि मिसरा शाह शैतान की बीबी थी और आपके साथ बहुत कुछ बुराई करने की नीयत कर चुकी थी।

लैला०। हां हां, मुझे मालूम है, मगर मैं उसकी जिन्दगी में ही उसका सब कसूर माफ कर चुकी हूं।

फातमा०। ठीक है, मगर उन्हीं लौंडियों से यह भी मालूम हुआ कि मुझ

कहा है कि मैं आपको मजहबी तरीके पर उसका कसूर माफ करने के लिये राजी करूं। आप जानती ही हैं कि जब तक मुर्दे के पास जा कर उसका कसूर माफ न किया जाय तब तक उसे माफी नहीं कहते। इसी सबब से उसकी दोनों लौंडिया मिरहा की लाश को इस शहर में ले आई हैं। मेरी दवा से मिरहा को आराम नहीं हुआ इसका मुझको हद से ज्यादा रन्ज है और मैं चाहती हूँ कि और नहीं तो एक यही नेकी उस के साथ कर जाऊं।

लैला को मजहबी बातों का बहुत ख्याल रहता था अस्तु थोडी देर सोचने बाद उसने सर उठा कर फात्मा की तरफ देखा और पूछा, "मिरहा की लाश कहां है ?"

फात्मा०। यहां से दूर नहीं है (हाथ से इशारा कर के) इसी तरफ दो चार गलियों के बाद एक मकान है जिसमें लाश रक्खी हुई है।

लैला०। अगर तुम लोगों को मजहब का इतना ख्याल है तो मैं भी यही चाहती हूं कि तुम्हारे साथ चल कर जिस तरह तुम कहती हो उसी तरह से मिरहा का कसूर माफ कर दूं, मगर मुझे यह कैसे यकीन होगा कि तुम मुझे धोखा न दोगी ?

फात्मा०। मैं खुदा और रसूल तथा अपने मरे हुए मां बाप की कसम खा कर कहती हूं कि मेरी नीयत आपके साथ बुराई करने की नहीं है और मेरे साथ चलने पर किसी तरह की तकलीफ आपको न होगी। आप खुद भी सोच सकती हैं कि आपसे और मिरहा से मेरी यहीं पहिले पहिल मुलाकात हुई थी, उसके बाद मिरहा मर ही गई फिर मैं किस लिये आपसे दुश्मनी करूंगी।

फात्मा की बात सुन कर लैला फिर बहुत देर तक सोचती रही मगर कोई बात ऐसी उसके खयाल में न आई जिससे वह फात्मा को धोखेबाज समझ सकती अस्तु वह एकदम उठ खड़ी हुई और बोली "अच्छा चलो, मैं तुम्हारे साथ चलती हूं।"

लैला की दोनो लौंडियां जुबेदा और अमीना ने हर तरह से लैला को समझाया और जाने से रोका, यहां तक कि रो रो कर बहुत तरह की कसमे भी दीं, मगर लैला ने एक न मानी और अपना इरादा न बदला। फातमा को ठहरने के लिये कह कर लैला नहाने वाले कमरे मे गई जहां अपने कुल जेवर उतार कर एक अलमारी मे रक्खा तथा वह अंगूठी भी उतार कर उसी मे रख ताला बन्द कर ताली उसी जगह कहीं छिपा दी, इसके बाद लौट आ कर जुबेदा को अपने साथ चलने के लिये कहा। अमीना को समझा दिया कि तुम इसी कमरे मे रहो और जब वह बुड्ढी औरत यहां आवे तब उससे मेरे कहीं जाने का हाल न कह कर कह देना कि लैला सोई है। लाचार दोनों लौंडियों को लैला का हुक्म मानना पड़ा।

जुबेदा और फातमा को साथ लिये लैला बाग में गई और उसका पिछला दर्वाजा खोल बाहर हो फातमा के साथ सा । उस मकान की तरफ रवाना हुई जिसमें मिरहा की लाश थी।

तेरहवां बयान

अपनी लौंडी जुबेदा को साथ लिये हुये लैला फातमा के पीछे पीछे रवाने हुई। गर्मी का मौसिम, अंधेरी रात, तथा बदली भी घिर रही हुई थी जिसके सबब अच्छी तरह रास्ता दिखलाई नहीं देता था पर इसी बीच में यकायक बिजली चमकी जिससे बहुत दूर दूर तक सड़क और चारो तरफ की मकान इमारतें पल भर के लिये आंखों के सामने साफ दिखाई दे गई। इसी चमक में लैला की निगाह एक आदमी पर पड़ी जो झपटा हुआ आगे की तरफ जा रहा था और उसे देख कर वह चौंक गई क्योंकि यह वही अबदुर्रहमान था जिसको लैला अब तक मरा समझे हुये थी।

अबदुर्रहमान को जुबेदा और फातमा ने नहीं देखा, [illegible]

ही की निगाह पड़ी जो उसे देखते ही झझक के खड़ी हो गई और डरसे कांपने लगी। फिर कुछ सोच कर आगे बढ़ी मगर तरह तरह के खयाल उसके जी में आने लगे।

अलादीन को देख कर जब लैला अटकी तब फात्मा आगे बढ़ गई थी मगर वह अपने पीछे लैला को न आती देख पीछे लौटी और लैला से बोली "क्यों आप अटक क्यों गईं? बिजली से डरीं तो नहीं?"

लैला०। नहीं, मगर इस चमक में मैंने एक चीज ऐसी देखी कि जिससे मुझे कुछ शुबहा हो गया।

फात्मा०। बहुत अच्छा, अगर मुझ पर आपका विश्वास नहीं है तो चलने की कोई जरूरत नहीं, इसी जगह से लौटिये। मैं तो पहिले ही कसम खा कर कह चुकी हूं कि आपको कभी धोखा न दूंगी बल्कि अब भी कहती हूं कि आपको वहां किसी तरह की तकलीफ न होगी। (अपने कमर से खन्जर निकाल कर) लीजिये, यह खन्जर मैं आपको देती हूँ, जब आपको जरा भी शुबहा मालूम हो तो बेधड़क इसे मेरे कलेजे में मार दीजियेगा।

लैला०। (खन्जर ले कर) खैर मैं इसे तो लिये लेती हूं मगर तुम यह तो कहो कि वहां सिवाय मेरे क्या और भी कोई होगा जहां तुम मुझे लिये चलती हो?

फात्मा०। एक आदमी वहां और होगा लेकिन वह आपकी तरफ उँगली भी नहीं उठावेगा।

लैला०। अच्छा चलो।

लैला कुछ सोचती हुई फिर फात्मा के पीछे पीछे चली, थोड़ी ही देर में दोनों एक फाटक के पास पहुंचीं जिसकी खिड़की खुली हुई थी। अन्दर की तरफ निरहा की हबशिन लौंडी हाथ में चिराग लिये खड़ी थी जिसने लैला को सलाम किया और मोटी की राह से इधर चलने का इशारा कर आप रोशनी दिखलाने लगी।

जीती जागती थीं मुझे तुम्हारी बुरी नीयत का हाल बिल्कुल मालूम न था। तुमने आपही मुझसे सब कुछ कहा और मैंने भी उसी वक्त तुम्हारे जीते ही जी सब कसूर माफ कर दिया। अब तुम्हारी लाश के पास आ कर फिर तुम्हारे कसूरों को माफ करती हूँ और दुआ मांगती हूँ कि खुदा तुम्हारी रूह को अच्छे से अच्छा दर्जा दे।"

लैला ने रोते रोते और भी बहुत कुछ कहा जिसके सुनने से उन सभों की आखों से आसू टपकने लगे जो वहा मौजूद थे। मगर कुछ ही देर बाद फात्मा ने लैला को हाथ पकड़ कर उठाया और कहा, 'बस बहुत हुआ। इसमें कोई शक नहीं कि आपने बहुत सच्चे दिल से दुआ मांग कर यह रस्म पूरी की।।"

इस समय अलादीन ने फिर लैला से कुछ कहने का इरादा किया मगर फात्मा ने इशारे से उसको रोका जिससे उसका हौसला न पड़ा। लैला ने अभी तक एक निगाह भी अलादीन पर न डाली थी क्योंकि वह उसे वैरीकरामा समझे हुए थी मगर इस बात से अलादीन को बहुत ही ताज्जुब हो रहा था और वह बार बार सोच रहा था कि 'क्यों लैला इतनी बेमुरोवत हो रही है कि मेरी तरफ आख उठा कर भी नहीं देखती। क्या मैंने इसका कोई कसूर किया है !' मगर करे क्या, फात्मा की उस जगह कुछ ऐसी हुकूमत थी कि बिना उसके हुक्म के कोई चूं तक नहीं कर सकता था, लाचार अलादीन को भी चुप ही रह जाना पड़ा।

फात्मा, लैला और जुबेदा को साथ लिए हुए मकान से नीचे उतरी। इदगिन ने रोशनी दिखलाई। फाटक के बाहर आकर तीनों ने अपने अपने चेहरे पर नकाब डाल ली और उस तरफ रवाने हुईं जहां लैला टिकी हुई थी। बाग के दर्वाजे पर पहुंच कर लैला ने खंजर फात्मा के हाथ में दे दिया और कहा, "मुझे माफ करना मैंने व्यर्थ ही तुम्हारे ऊपर शक किया था।" फात्मा ने खंजर ले लिया और मुस्कुरा कर यह

इसकी लम्बी और सफेद दाढी छाती तक लटक रही थी, आखों पर चश्मा लगाये हुए था तथा स्याह टोपी के ऊपर सफेद तजेब का कपड़ा अम्माने [मुडासे] के तौर पर बाधे हुए था। लम्बा और ढीला कोट पहिरे था। इसकी सूरत देखने ही से बुद्धिमान लोग उसे नेक, रहमदिल और धर्मात्मा कह सकते थे। सिवाय इसके वह बडा कामकाजी भी मालूम होता था।

अलादीन की पोशाक वही थी जो हम पहिले लिख चुके हैं। मगर लैला की पोशाक इस समय बहुत ही बढी चढी थी। इसी तरह लैला का हुस्न भी इस वक्त बहुत ही चढा बढा मालूम होता था मगर अलादीन भी अपने ढग का निराला ही दिखाई पडता था।

बूढे सौदागर ने एक एक करके दोनो को मेहरबानी और मुहब्बत की निगाह से बडी देर तक देखा। बहुत कुछ जमाना देखे हुए होने के सबब वह सूरत से ही आदमी की पहिचान बहुत कुछ कर सकता था, इसी से इसने पहिले अपनी निगाह की तराज़ू में अलादीन और लैला को अच्छी तरह तौला। और तब धीरे धीरे कहा, "चाहे मै अपनी उम्र के सबब तुम दोनो से बडा मालूम होता हू और तुम दोनों ने अदब के साथ मेरे सामने खडे होकर मेरी इज्जत की है मगर असली बात पर अगर ख्याल किया जावे तो मै तुम दोनों से रुतबे में बहुत ही कम हू। (लैला की तरफ देख कर) 'शाहज़ादी! आप बैठ जायें!' (अलादीन की तरफ देख कर) 'हुज़ूर भी बैठ जायें!'"

एक दूसरे ही से मुझे अपनी अंगूठी वापस मिली, और अब आपकी जुबानी यह मालूम हुआ कि ये कुर्स के पाशा के भतीजे हैं इस लिये मैं इनसे माफी मांगती हूं।

अला०। (लैला से) आपने बहुत अच्छा किया जो यह बात कह दी नहीं तो मैं बहुत ही परेशान हो रहा था और बार बार सोचता था कि आपने मेरा साथ क्यों छोड दिया।

लैला को यद्यपि यह निश्चय हो गया कि यह कैरीकरामा नहीं है मगर एक खटका उसके दिल में बना ही रहा और वह यह कि मिरहा की लाश के पास फिर ये क्यों दिखाई पडे लेकिन इसके बारे में लैला ने इस जगह कुछ कहना मुनासिब न समझा।

मसूर०। खुदा का शुक्र है कि आप लोगों के दिलों का शक जाता रहा। अब मुहब्बत से आप दोनों हाथ मिलाइये और खुश होइये क्यों कि आप दोनों का खून एक है और आपस में आप दोनों चचेरे भाई बहिन होते है।

यह सुनते ही अलादीन और लैला दोनों खुशी और ताज्जुब से घबरा उठे, मगर चूंकि इन दोनों को विश्वास था कि मसूर सौदागर कभी झूठ न बोलेगा इस लिये तुरत ही दोनों ने उठ कर हाथ मिलाया।

मसूर०। मेरे नोजवान दोस्तो! तुम दोनों उस प्रिन्स डेनीयल के पोते और पोती हो जो किसी समय सिगरेलिया का बादशाह था।

यह कहता हुआ मंसूर अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और उसने दोनों के सिर पर हाथ रख दुआ दे कर कहा, "खुदा तुम दोनों को खुश रक्खे और तुम लोगों की मुरादें पूरी करके तुम दोनों को उस अजीबोग़रीब दौलत का मालिक बनावे जो किसी तीसरे की तरफ से मैं तुम लोगों को देने वाला हूं। अच्छा मेरे दोस्तो! अब अपनी अपनी जगह बैठ जाओ और सुनो कि मैं क्या कहता हूं।

लैला सौदागर के दाहिने और अलादीन बाईं तरफ बैठ गया और

अलादीन समझ गया कि सौदागर का मतलब इस बात से है कि मैं तभी इस में शरीक हो सकता हूँ जब मुसलमानी मजहब छोड़ ईसाई बन जाऊं।

मन्सूर कहता गया, - "उस फकीर ने बादशाह को वह भेद बतला दिया और आखीर में यह भी कहा कि आप अकेले मेरे साथ चलकर उस जगह को देख भी लीजिये। फकीर के कहने से बादशाह अकेला फकीर के साथ साथ उस जगह गया और उसने वहा के बिल्कुल भेद को जान लिया जिससे उसको बहुत कुछ फायदा हुआ। थोड़े दिन के बाद वह फकीर मर गया तब उसकी जगह बादशाह ने मुझको दी। प्रिन्सडेनियल के दो लड़के भी थे मगर कई बातों को खयाल करके उसने उन दोनों में से किसी को भी यह भेद न बतलाया पर मुझे बता दिया। ऐ अलादीन! तुम प्रिन्सडेनियल के छोटे शाहजादे के लड़के हो।"

अलादीन यह सुनते ही चौंक पड़ा और कुछ पूछना चाहता था कि इसे इशारे से रोक मन्सूर ने कहा "अलादीन! तुम्हारे पैदा होने के कुछ ही दिन बाद तुम्हारी मा मर गई और तुम कुछ ही महीने के थे जब प्रिन्सडेनियल और जार रूस के बीच में लड़ाई हो गई। रूसी फौज इतनी ज्यादा थी कि प्रिन्सडेनियल उनके मुकाबले में न ठहर सका और उसने बदख्शां के किले के भीतर से लड़ना शुरू किया। महीनों इसी तरह लड़ाई होती रही पर आखिर रूसियों ने वह किला भी छीन लिया। उस समय ऐ अलादीन!

दोनों ताज्जुब से मसूर का मुंह देखते हुए सोचने लगे कि देखा चाहिये अब यह सौदागर क्या कहता है।

मसूर ने कहा, "प्रिन्स डेनियल मिंगेलिया का खुद मुख्तार बादशाह था और उसकी अच्छी तबीयत और नेकनीयती के सबब उसकी रेआया उसको बहुत ही चाहती थी।

"पच्चीस वर्ष के लगभग हुआ होगा और तुम दोनो का जन्म अभी नहीं हुआ था जब एक फकीर प्रिन्सडेनियल से मिलने को आया। प्रिन्स-डेनियल से जो कोई भी मिलने को आता वह सभी से मिलता बल्कि ईसाई मजहब के फकीरो से तो वह बहुत ही खुशी से मुलाकात करता था, क्योंकि उस मजहब पर उसको बहुत विश्वास और मुहब्बत थी और वह बराबर उसकी तरक्की की कोशिश किया करता था।

"फकीर ने एकान्त में बादशाह से मुलाकात की और कहा, 'ऐ बादशाह! इस वक्त दुनिया मे एक बडे भारी भेद के जाननेवाले दो आदमी हैं। कई हफ्ते पहिले तीन आदमी थे पर उनमें से एक मर गया, और अब दो ही बाकी रह गये हैं, मगर एक पुरानी रेवाज के मुताबिक जो बहुत दिनों से चली आती है, यह भेद तीन आदमियो को जानना चाहिये। सब कोई बशर्ते कि ईसाई मजहब के हो। हमारे साथियों में से तीसरे के मर जाने से हम दोनो को फिर तीन पूरा करने की जरूरत पडी और मेरी निगाह में आपसे बढ कर और कोई नजर नहीं आता, इसीलिये मै यह भेद कहने के लिये आपके पास आया हूँ।'

"बादशाह ने खुश हो कर उस भेद को जानना मजूर किया और फकीर ने पूरी तौर से यह भेद बादशाह को समझा दिया।"

इतना कह मंसूर कुछ देर के लिये चुप हो गया और तब फिर अलादीन और लैला की तरफ देख के बोला, "मै इस वक्त तुम दोनो के सामने वह भेद खोला चाहता हूँ। लैला को तो अभी बता सकता हूं मगर अलादीन! तुम्हारा जानना न जानना तुम्हारे ही हाथ में है।"

अलादीन समझ गया कि सौदागर का मतलब इस बात से है कि मैं तबही इन में शरीक हो सकता हूँ जब मुसलमानी मजहब छोड़ ईसाई बन जाऊं ।

मन्सूर कहता गया, - "उस फकीर ने बादशाह को वह भेद बतला दिया और आखीर में यह भी कहा कि आप अकेले मेरे साथ चलकर उस जगह को देख भी लीजिये। फकीर के कहने से बादशाह अकेला फकीर के साथ साथ उस जगह गया और उसने वहां के बिल्कुल भेद को जान लिया जिससे उसको बहुत कुछ फायदा हुआ। थोड़े दिन के बाद वह फकीर मर गया तब उसकी जगह बादशाह ने मुझको दी। प्रिन्सडेनियल के दो लड़के भी थे मगर कई बातों को खयाल करके उसने उन दोनों में से किसी को भी यह भेद न बतलाया पर मुझे बता दिया। ऐ अलादीन! तुम प्रिन्सडेनियल के छोटे शाहजादे के लड़के हो।"

अलादीन यह सुनते ही चौंक पड़ा और कुछ पूछना चाहता था कि उसे इशारे से रोक मन्सूर ने कहा "अलादीन! तुम्हारे पैदा होने के कुछ ही दिन बाद तुम्हारी मां मर गई और तुम कुछ ही महीने के थे जब प्रिन्सडेनियल और ज़ार रूस के बीच में लड़ाई हो गई। रूसी फौज इतनी ज्यादा थी कि प्रिन्सडेनियल उसके मुकाबले में न ठहर सका और उसने [illegible] के किले के भीतर से लड़ना शुरू किया। महीनों इसी तरह लड़ाई होती रही पर आखिर रूसियों ने वह किला भी जीत लिया। उस वक्त ऐ अलादीन! तुमको लेकर तुम्हारा बाप न जाने किस तरफ भाग गया और रूसी जनरल ने प्रिन्सडेनियल और उसके बड़े लड़के और पतोहू को गिरफ्तार कर लिया। उसका इरादा इन तीनों को मार डालने का था मगर ज़ार की रिआया के बहुत आरजू मिन्नत करने से उसने प्रिन्सडेनियल को इस शर्त पर छोड़ दिया कि वह दुनिया से अपना सम्बन्ध बिल्कुल तोड़ दे। बादशाह इस शर्त को मंजूर न करते मगर अपने लड़के और पतोहू को बचाने के लिये उन्हें यह बात मंजूर करनी

पड़ी। रूसी जनरल ने उनको तो वहा से तुरत चले जाने का हुक्म दिया और उनके बडे लडके और पतोहू को शाहजादों की तरह कैद में नजरबन्द रखवा दिया।

"बादशाह डेनियल वहा से रवाना हो कर सीधे उस जगह चले गये जहा का भेद उस फकीर ने उनसे कहा था और जो इस लायक थी कि दुनिया भर की आफतों से बच कर वहा रहने वाले खुशी में अपनी जिन्दगी बिता सकें, मगर ऐ अलादीन! प्रिन्स डेनियल के छोटे लडके और पोते अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे बाप की गिरफ्तारी के लिए परवाना जारी हुआ और सैकडों आदमी तुम लोगों की खोज मे निकले। थोडे दिन के बाद यह मालूम हुआ कि वह मय अपने लड़के के काकेशस की पहाडी में जाकर मर गया मगर वास्तव मे यह खबर झूठ थी।

"मुल्क सिगरेलिया को रूसियों ने फतह तो कर लिया मगर वहां की रिआया उनके काबू में न हुई और बराबर सरकशी ही करती रही। लाचार होकर रूसियों ने कमेटी करके यह निश्चय किया कि पुराने शाही खान्दान का ही कोई आदमी वहा की गद्दी पर बैठाया जाय और रूसी फौज उसकी और रूस के व्यापार की हिफाजत के लिए तैनात की जाय। आखिर यह बात ठीक हो गई और लैला! बादशाह डेनियल का बडा लडका अर्थात् तुम्हारा बाप जो तुम्हारी मा के साथ रूसियों की कैद मे था वहा की गद्दी पर बैठाया गया। इसके दो वर्ष बाद तुम्हारी पैदाइश हुई। तुम्हारा बाप तुमको दो वर्ष का छोड कर मर गया और तब तुम वहा की मालिक और शाहजादी मानी जाने लगी।"

पन्द्रहवां बयान

मन्सूर ने कहा – "बादशाह डेनियल काकेशस की पहाडी में रहने लगे। मैं कभी कभी उनसे मिलने को जाता था। दो तीन वर्ष के बाद उनको यह मालूम हुआ कि सिगरेलिया की गद्दी फिर उनके खानदान में आ

गई और तब से वे कुछ दिलजमई के साथ वहा रहने लगे, मगर उनको अपने दूसरे बेटे और पोते के लिये बहुत उदास रहना पड़ता था जिनका कहीं पता न लगता था और साथ ही साथ उन्होंने अपने बारे में भी कभी कोई खबर अपने बड़े बेटे को यह सोच कर न भेजी कि रूसी कहीं उसे परेशान न करें।

"मैंने काकेशस की पहाड़ियों में बहुत खोज की मगर अलादीन! तुम्हारे बाप का कहीं पता न लगा, बल्कि यही सुनने में आया कि दोनों बाप बेटों की लाश काकेशस की पहाड़ियों में पाई गई। यह हाल मैंने बादशाह को कहा जिसे सुन वह और भी उदास हुआ मगर उसने उस गुप्त जगह से निकलने का कभी इरादा न किया जहा वह रहता था और जहा का हाल मैं उस गुप्त भेद की तरह अभी अभी तुम लोगों से कहूँगा।

'करीब डेढ़ वर्ष की बात होगी कि एक दफे बादशाह बहुत बीमार हो गये। मुझे उनकी दवा कराने की फिक्र हुई। आखिर इसी शहर की एक औरत को जिसका नाम फात्मा था और जिसने बहुत से इलाज इस शहर में ऐसे किए थे जिनके सबब से उसका नाम मशहूर हो रहा था मैंने बादशाह की दवा करने के लिये पसन्द किया। किसी हकीम को न ले जाकर इस औरत को वहा ले जाने का एक सबब यह भी था कि वहां का भेद कोई जानने न पावे क्योंकि इस बात को शायद दूसरा कोई मंजूर न करता कि आंख में पट्टी बांध कर वहा जाना होगा।

'मुख्तसर यह कि उस औरत को ले कर मैं वहा गया। रास्ते में उसने उन शहरों का बहुत सा हाल कहा जहा का वह खुद सफर कर चुकी थी और इसी बीच में कार्स के बादशाह और पाशा मुहम्मदशाह और उनकी नेकियों की बहुत तारीफ करते हुए यह भी कहा कि "उसने एक लड़के को जंगल में पाकर अपने भतीजे की तरह पोसा और पाला है।" अलादीन! सब से पहिले इसी की बातों को सुनकर मुझे यह सन्देह हुआ शायद वह लड़के तुम ही तो नहीं हो।

"उस औरत फात्मा को मै बादशाह के पास ले गया और उसकी दवाइयों ने थोडे ही दिन में बादशाह को आराम कर दिया। इसके कुछ दिन बाद मैंने कार्स के बादशाह मुहम्मदशाह के पास एक चिट्ठी लिख कर तुम्हारे बारे में पूछा। बादशाह ने बहुत मेहरबानी करके मेरी चिट्ठी का जवाब दिया और लिखा कि 'कटाइस फतह होने के दो महीने बाद जब मैं शिकार को गया हुआ था तब एक नौजवान को गोद में बच्चा लिये हुए एक पेड के नीचे बैठे मैंने देखा और तर्स खाकर उसका हाल पूछा मगर अफसोस, वह कुछ जवाब न दे सका क्योंकि वह अपने होश हवास में न था ' "

इतना सुनते सुनते अलादीन की आखो से आसू बहने लगे, लैला भी रो रही थी और मसूर का भी जी उमड आया था, मगर अपने को बहुत कुछ सम्हाल उसने थोडी देर बाद फिर कहना शुरू किया —

"अलादीन ! तुमको और तुम्हारे बाप को कार्स के बादशाह मुहम्मद शाह ने अपने घर ले जाकर बहुत आराम से रक्खा और हर तरह से पता लगाना चाहा मगर तुम्हारे बाप की जुबानी उसे कुछ भी हाल न मालूम हो सका क्योंकि उसकी हालत इतनी खराब हो रही थी कि वह कभी पूरी तरह होश मे न आया और थोडे ही दिन के बाद मर गया। मगर तुम्हारी और तुम्हारे बाप की उस रोज की पोशाक जब तुम दोनों जगल मे मिले थे बादशाह ने अपने पास रख छोडी थी। जब मेरी चिट्ठी के जवाब में उन्होंने ये सब बातें लिखीं तो साथ ही तुम दोनों के वे कपडे भी भेज दिये जिन्हें मैंने ले जाकर तुम्हारे दादा डेनियल को दिखलाया। डेनियल ने कपडों को तुरत पहिचान लिया और कहा, 'बेशक ये कपडे मेरे लडके और पोते के ही हैं और इन्हें ही पहिर कर वे उस वक्त कटाइस से भागे थे जब रूसियों के गोले हम लोगों पर पड रहे थे।'

"अलादीन ! तब से हम लोगों को विश्वास हो गया कि तुम्हीं बादशाह डेनियल के पोते हो। तुमसे मिलने की चाह तुम्हारे दादा

बादशाह डेनियल को बहुत थी मगर इलियो के डर से वह तुमसे न मिल सका फिर भी उसने यह निश्चय कर लिया कि उसके मर जाने पर यह सब हाल तुमसे पूरा पूरा कह दिया जाय। यह तथा इसके सिवाय बादशाह ने और भी बहुत सी बातें मुझको समझाईं जिनके पूरा करने का मैंने उनसे वादा किया। महीने भर के लगभग हुआ कि बादशाह डेनियल भी मर गया। अब उन तीनों आदमियों में से सिर्फ एक मैं ही रह गया जिसको उस भेद का हाल मालूम है। कई महीने पहिले यद्यपि हम तीन आदमी इस भेद को जानने वाले थे मगर बादशाह डेनियल के साथ साथ वह दूसरा आदमी भी जो टिफलिस का एक पादडी था मर गया जिससे यह भेद अब सिर्फ मुझ ही को मालूम रह गया है।

'तुम्हारे दादा कह गये थे कि उनके बाद लैला को यह भेद बता दिया जाय और अलादीन भी जब ईसाई मजहब में आ जाय तो उसे भी यह भेद बतला दिया जाय जिसमें फिर तीन के तीन इस भेद के जानने वाले पूरे हो जायें। अस्तु इन्हीं सब बातों को कहने के लिये मैंने टोनर को भेज कर तुम दोनों को बुलवाया है।"

इतना कह मसूर चुप हो गया। लैला ने पूछा, 'यह अंगूठी किस लिये भेजी थी?" मसूर ने जवाब दिया, 'यह एक ही रंग की दो अंगूठियां भेजने में मेरा दो मतलब था एक तो यह कि शायद तुम लोगों के पास से हो कर लौटते वक्त रास्ते में टोनर पर कोई आफत आ जाय तो मैं यह दोनों अंगूठियां देख कर पहचान सकूं कि तुम दोनों वही हो जिनके पास मैंने सन्देसा भेजा था। दूसरी बात यह कि बादशाह डेनियल के मरने बाद मैंने सोचा कि अगर शायद मैं भी मर जाऊं तो यह भेद छिपा ही रह जायगा, यह सोच मैंने यह सब हाल जो तुमसे कहा है एक कागज पर लिखा और दूसरे कागज पर इस भेद का खुलासा हाल लिख कर एक लिफाफे में बन्द कर दिया और उसके ऊपर यह लिखा कि जो दो आदमी एक ही रंग ढंग की पहचाने नजर की अंगूठी दिखलावें

उनको यह कागज दे दिया जाय। वह लिफाफा मेरे निज के सन्दूक में बन्द है जिसकी हकदार इस वक्त सिर्फ लैला ही है।"

इतना कह मंसूर ने अलादीन से पूछा, "क्या तुम अपने दादा की बात मान के ईसाई बनने को तैयार हो?" अलादीन ईसाई मजहब अखतियार करने पर राजी हो गया। तब मंसूर ने लैला से कहा, "तुम थोडी देर के लिये अपने कमरे में चली जाओ तो मै इस मजहब के बारे में अलादीन को कुछ समझाऊ। लैला उठ कर अपने कमरे में चली गई और अपनी दोनों लौंडियों को उस कमरे से हटा आप अकेली बैठ उन सब बातों को सोचने लगी जो मसूर सौदागर के जबानी सुनी थीं और साथ ही इसके फात्मा के क़िस्से को भी याद करने लगी जो उसने मिरहा के सामने कहा था।

लैला बैठी इन्हीं सब बातों को सोच रही थी कि किसी ने दर्वाजा खटखटाया। लैला ने पुकार कर कहा, 'कौन है सामने आओ।" और टोनर की सूरत दिखाई पडी।

पन्द्रहवां बयान

यकायक टोनर को देख लैला को बहुत ताज्जुब हुआ और वह तरह तरह की बातें सोचने लगी। टोनर के बारे में उसे बहुत कुछ शक था मगर मंसूर से उसकी तारीफ सुन कर टोनर पर इलजाम लगाने का मौका उसे न मिला, बल्कि वह सोचने लगी कि शायद मिरहा का मतलब किसी दूसरे से रहा हो।

टोनर ने आते ही बहुत अदब से झुक कर सलाम किया और हाथ बाध कर सामने खडा हो गया।

लैला०। कहो टोनर! तुम किस लिये आये?

टोनर०। (फिर सलाम करके) एक तो मैं आपको सलाम करने आया, दूसरे आपसे कई जरूरी बातें भी पूछने को थीं।

लैला० (ताज्जुब में आकर) वह क्या ?

टोनर० । हर एक नौकर यही चाहता है कि उसका मालिक उससे बराबर खुश रहे पर इस वक्त हमारे मालिक की खुशी आपही की खुशी पर मुनहसिर है । उनके हुक्म से जिस भारी काम के लिये मैं आपके पास गया था, जहां तक मैं समझता हूँ उसे मैंने इमानदारी से पूरा किया मगर आपकी जबानी यह सुन कर कि रास्ते में आपको तकलीफ हुई मुझे बहुत ही रन्ज हुआ । खास कर अगर मेरा मालिक यह सुनेगा कि टोनर की बदौलत सफर में लैला को तकलीफ हुई तो वह मुझसे जरूर रन्ज हो जायगा ।

लैला० । हां मुझे याद आता है कि मैंने यहां आ कर घोड़े पर से उतरने के पहिले तुमसे कहा था कि कई घटनायें ऐसी हुईं जिनसे मुझको कुछ तकलीफ हुई, मगर अब उनका कहना व्यर्थ है ।

टोनर० । ठीक है, मगर तबही से मुझे यही फिक्र लगी है कि कहीं मुझसे कुछ भूल तो नहीं हो गई ॥

लैला० । नहीं नहीं इसमें तुम्हारे भूल की क्या बात हो सकती है । तुमसे तो मुझे कोई शिकायत नहीं है ।

टोनर० । (फिर सलाम करके) अब मेरा जी ठिकाने हुआ नहीं तो मुझे बहुत कुछ फिक्र लगी हुई थी ।

टोनर की बातचीत ने लैला को धोखे में डाल दिया और वह मिरहा की उस बात को एकदम भूल गई जो उसने टोनर के बारे में कही थी बल्कि उसने अपने हाथ से एक बेशकीमत अंगूठी निकाल कर कहा, "टोनर, यह मेरी निशानी लो। तुमने अपना काम बहुत ईमानदारी के साथ किया जिसके लिये मैं अंगूठी तुम्हें देता हूँ ।" मगर टोनर ने घुटना टेक हाथ जोड़ कर कहा, "अगर मैं इस अंगूठी को ले लूंगा तो लोग जरूर कहेंगे कि टोनर लालची था । मैं बस इतने ही में खुश हूँ कि आप मुझसे रंज नहीं हैं ।

इतना कह चालाक टोनर सलाम कर तुरत बाहर चला गया। उसके जाने के बाद लैला उसके बारे में बहुत कुछ सोचती रही पर आखिर उसने यही निश्चय किया कि जरूर जैसा कि अलादीन के बारे में मुझको धोखा हुआ था वैसाही टोनर के बारे में भी हुआ, और असल में टोनर बहुत नेक है।

लैला इन्हीं सब बातों को सोच रही थी कि जुबेदा और अमीना वहा आ पहुँची, जिन्हें देख लैला ने कहा, "आओ मेरे पास बैठो, मुझे तुमसे कई बातें कहनी हैं। यह सुन उसकी दोनो लौंडिया उसके पास बैठ गई। लैला ने कहा, अलादीन के बारे में जिसका साथ छोड कर हम लोग भागे थे, मुझे बहुत बडा धोखा हुआ। आज वह भी उस मसूर सौदागर के पास बैठा हुआ था जिस की जबानी मुझे मालूम हुआ कि अलादीन एक बडे रुतबे का आदमी बल्कि फार्स के बादशाह का मुंह बोला भतीजा है। इतना ही नहीं इससे भी ज्यादे खुशी की एक बात मैं तुमको सुनाती हूँ जो यह कि अलादीन मेरा चचेरा भाई है। तुमने कई दफे सुना होगा कि मेरा चचा रूमियों की लड़ाई के वक्त अपने लडके को लेकर भागा था, वह लडका यही अलादीन ही है।"

यह सुन वे दोनो लौंडिया बहुत ही खुश हुई और लैला को अपने भाई से मिलने की मुबारकबादी देती हुई बहुत देर तक खुशी खुशी बातचीत करती रहीं, मगर इसी समय यकायक उस बूढी औरत के आ जाने से बातचीत बन्द हो गई जिसने कहा, 'हमारे मालिक मसूर सौदागर ने आपको बुलाया है।" लैला यह सुनते ही उठ खडी हुई और सौदागर के कमरे की तरफ चली।

लैला और अलादीन के मरतबे का हाल इस घर में सिवाय टोनर के और कोई गैर आदमी नहीं जानता था क्योंकि सौदागर को यही मजूर था कि इन दोनों के इस शहर में आने का हाल किसी को न मालूम हो और जिस काम के लिए इन दोनो को बुलाया गया है वह छिपे ही छिपे हो जाय।

लैला उस कमरे में पहुँची जहां मंसूर सौदागर बैठा हुआ था मगर उस जगह अलादीन न था। सौदागर लैला को देख कर उठ खड़ा हुआ और जब लैला बैठ गई तब उससे बोला, "बड़ी खुशी की बात है कि अलादीन ने अपना पुराना मजहब ईसाई कबूल किया।"

यह सुनतेही लैला बहुतही खुश हो कर बोली, "अपने चचेरे भाई से मिलने की खुशी तो मुझे हुई ही थी मगर अब यह सुन कर कि उसने अपना पुश्तैनी मजहब कबूल कर लिया, खुशी का हद न रहा। अब मैं अपनी राजगद्दी पर अलादीन को ही बैठाऊंगी क्योंकि वह उसी के लायक है।"

मंसूर ने कहा, "नहीं नहीं, वह गद्दी तुम्हारी ही है क्योंकि तुम बड़े भाई की औलाद हो, मगर अभी मुझे तुम्हारे दादा डेनियल की आखरी वसीयत पूरी करनी है जो कह गये थे कि जब अलादीन अपने मजहब में आ जाय तो उसकी शादी लैला के साथ हो जानी चाहिये और इसके बाद उस गुलिस्ता घाटी का भेद जो छिपा हुआ है दोनों को बता दिया जाय। अगर मेरी निगाहें मुझे धोखा नहीं देतीं तो अलादीन को भी तुम से बहुत ही मुहब्बत है और तुम भी उससे प्रेम करती हो अस्तु तुम लोगों को अपने दादा की वसीयत मान लेनी चाहिये। अब कुछ देर के लिये मैं यहां से जाता हूं क्योंकि अलादीन को तुमसे कुछ बातचीत करनी है।" यह कह सौदागर उठ खड़ा हुआ और दूसरे कमरे में चला गया।

सौदागर के जाते ही अलादीन ने उस कमरे में पहुँचकर मुहब्बत से लैला का हाथ थाम लिया और कहा, "आज का दिन बहुत ही मुबारक है।"

मंसूर की बात याद करके लैला शर्मा गई मगर अपने को रोक उसने अलादीन की बात का कुछ जवाब दे दिया। अलादीन लैला के पास बैठ गया और दोनों आपस में बातचीत करने लगे। निरहा की लाश के

पास अलादीन को देख कर जितना ताज्जुब लैला को हुआ था उतनाही लैला को देखकर अलादीन को भी हुआ था। अब मौका पाकर अलादीन नें पूछा "क्यों लैला! कल तुम उस लाश के पास कैसे पहुँच गई थी?"

लैला०। यही बात मैं तुमसे पूछने वाली थी मगर जब तुमने पूछ लिया तो मै ही पहिले अपना हाल कहती हूँ। टिफलिस आती वक्त मुझसे मिरहा से मुलाकात हुई थी।

लैला ने अपने सफर का बिल्कुल हाल बयान करके कहा, 'मिरहा ने मरते वक्त मेरी अंगूठी मुझे वापस कर दी और मैने भी उसका कसूर माफ कर दिया मगर यहा आने पर फात्मा ने मुझसे मिल कर कहा कि मजहबी तौर पर जब तक मै उसकी लाश के पास खड़ी होकर उसका कसूर न माफ करुगी तब तक उसकी जान को आराम न मिलेगा अस्तु वही बहुत कुछ समझा बुझाकर मुझे वहा ले गई थी।"

अला०। ठीक है, वही फात्मा मुझे भी वहा ले गई थी। उसने ले जाकर वह मकान मुझे दिखलाया और अपनी नेकनीयती के बारे में बहुत सी कसमें खा कर कहा कि मिरहा ने जो कुछ बुराई तुम्हारे साथ की थी उसे मजहबी तौर पर माफ करने के लिये रात को तुम इस मकान में आओ। मैने भी इसमें कोई हर्ज न देखा और फात्मा की बात को कबूल किया।

लैला०। मगर यह तो बताओ कि मिरहा ने तुम्हारे साथ क्या बुराई की थी जिसका कसूर माफ कराने के लिये फात्मा तुम्हें वहा ले गई?

अलादीनने अपने सफर का हाल शुरु से आखिर तक सुनाया लैला से कहा, मगर इतना छिपा लिया कि रास्ते मे मिरहा को देख कर उस पर रीझ गया था।

लैला०। मंसूर सौदागर की बातचीत से यह तो मालूम ही हो गया कि यही वह फात्मा है जो हमारे दादा डेनियल की दवा को रख गई थी।

अला० । हां ठीक है, और निरहा के पास ही उस बचाव कर लिया विचित्र कथा तुमसे कही भी थी जिसको मिलाने से पूरा वि‹
है कि यह फात्मा वही है । तरह से

यह बातचीत हो ही रही थी कि मंसूर सौदागर उस कमरे में भीन पहुंचा जिसने नौकरों को खाना लाने के लिये हुक्म दिया ।

मंसूर सौदागर की बीबी को मरे बहुत दिन हो गये थे । उसकी कई औलादें भी थीं जिनकी शादी हो चुकी थी मगर वे लोग दूसरे दूसरे शहरों में सौदागरी का काम करते थे, यहां कोई भी मौजूद न था इस लिये इस वक्त सिर्फ मंसूर सौदागर, लैला और अलादीन इन तीनही प्राणियों ने साथ बैठ कर भोजन किया ।

सत्रहवां बयान

[illegible] से बातचीत करने के कुछ ही देर बाद टोगर उस मकान के बाहर निकला और बहुत सी गलियों में घूमता फिरता एक गरीब महल्ले के छोटे से मकान के पास पहुंच कर खड़ा हो गया जहां इधर उधर देख उसने मकान की कुण्डी खटखटाई । एक औरतने दर्वाजा खोल उसे भीतर [illegible] लिया और फिर दर्वाजा बन्द कर लिया ।

सामने [illegible] दालान में उदास [illegible] मैले कपडे पहिरे हुये एक आदमी को टोगर ने देखा जो [illegible] में फकीर [illegible] था और जिसने उसके पहुं- चते ही सिर उठा कर उसकी तरफ देखा और तब गुस्से से कहा, शैतान ! तेरी [illegible] से मुझे बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी ।"

पास अलादीन को देख कुछ बुराई कर ही गई क्योंकि उसने लैला को लैला को देख दी।

नें पूछा नर० । वह अगूंठी उसके किसी काम की भी तो न थी, तिस पर के समय में।

कैरी० । हां यह तो तुम सच कहते हो, बेशक उसका कोई कसूर नहीं और वह जी जान से मुझे प्यार करती थी। उसने जो कुछ किया अच्छा ही किया। मैं जिस वक्त घुटने टेक कर उसकी लाश के पास खड़ा हुआ तो मुझे तो ऐसा मालूम होने लगा मानों कोई दूसरा ही शख्स हो गया हूं। खैर पिछली बातों को भूल कर यह बताओ कि तुम्हारे मालिक का ध्यान अब तुम्हारी तरफ से कैसा है? उसे किसी तरह का खुटका तो नहीं हुआ?

टोनर० । नहीं, उसे मेरे ऊपर कुछ भी शक नहीं है। मैं दिलेरी करके लैला के पास भी गया था और उसकी बातों से यद्यपि मैंने यह मालूम कर लिया कि मंसूर को मुझ पर कोई शक नहीं है मगर लैला का विश्वास मेरे ऊपर पूरा नहीं मालूम होता। और परसों आने के वक्त उसने मुझे विचित्र भाव से देखा था। और आज भी उसी अन्दाज से कई दफे मुझे देखा। चाहे उसने खयाल किया हो कि टोनर न समझा होगा मगर मैं खूब समझ गया।

कैरी० । मैंने पहिले ही तुमसे कहा था कि तुम वे दोनों अंगूठियां मुझे दे दो और मैं मिरहा को लेकर अलादीन और लैला बन कर चला चलूंगा, पर तुमने न मालूम क्या सोचकर यह टेढ़ी चाल चलाई।

टोनर० । मैं अगर तुमको अंगूठी दे देता और तुम जो चौतीस वर्ष के हो इक्कीस वर्ष के अलादीन बनकर और बीस वर्ष की मिरहा सत्रह वर्ष की लैला हो कर जाती और मंसूर को कहीं मालूम हो जाता, तब मेरी क्या दुर्गति होगी? और मैं कार्स और क्टाइस जाकर अलादीन और लैला को अंगूठी देना कैसे साबित करता॥

कैरी० । यह तो पहिले ही कहा कि तुमने अपना बचाव कर लिया मगर मुझे फसा दिया ।

टोनर० । मैंने यह भी तो कह दिया था कि मैं अपने को हर तरह से बचाऊंगा । तुम्हारे आदमियों को मुनासिब था कि लैला और अलादीन को कैद कर लेते और फिर तुम दोनों अगर अंगूठिया लेकर और नकली अलादीन और लैला बन कर आते तो कोई हर्ज न होता मेरा मालिक जब चाहता पता लगा लेता कि मैंने अंगूठिया किसको दी हैं ।

केरी० । ठीक है, तुमने यह कहा था ।

टोनर० । मुझको अपने जान की न फिक्र थी, अगर अलादीन और लैला को कैद करके तुम और निरहा अंगूठी लेकर आते और हमारे मालिक को कोई शक हो जाता तो वह जरूर मुझको बुला कर पूछता कि "क्या यही दोनों आदमी हैं जिनको तुमने अंगूठियां दी हैं ?" उस समय मैं अगर देखता कि इसे थोड़ा ही बहुत शक है तो मैं दिलेरी से कह देता कि हां यही दोनों हैं ....

कैरी० । और अगर उसे पूरा शक होता तो शायद तुम यह भी दिलेरी से कह देते कि यह लोग दगाबाज हैं ॥

कैरी० । यह क्यों पूछते हो ?

टोनर० । मैं इस वास्ते पूछता हूँ कि अगर तुमको उस बखेड़े से छुट्टी मिल गई हो तो तुम आगे कुछ काम कर सकते हो ।

कैरी० । मिरहा के मर जाने बाद उसकी वफादार लौंडिया उसकी लाश छिपा कर उसके एक रिश्तेदार के घर जो इसी शहर में रहता है ले आई और तब उन्होंने मुझे इसकी खबर की मैं यहा आया और मुझे उसकी लाश के देखने का मौका मिला, बस इससे ज्यादे मैं और कुछ कर न सका क्योंकि एक तो मिरहा के किसी रिश्तेदार को यह बिल्कुल नहीं मालूम कि उसकी शादी किसी डाकू के साथ हुई है दूसरे इस बात का भी डर था कि उसके रिश्तेदारों या और किसी को अगर मालूम हो जाता कि मिरहा की लाश के पास कैरीकरामा आया हुआ है तो उन लोगों के लिये और मेरे लिये भी बड़ी ही आफत हो जाती । इसी सबब से मैं मिरहा के पास ज्यादे न ठहर सका । और आज वे लोग मिरहा की लाश गाड़ने को ले जायेंगे । अफसोस ! मिरहा !!

अपनी स्त्री के गम में कैरीकरामा ने सिर नीचा कर लिया और लम्बी लम्बी सांसें लेने लगा । टोनर उसे दम दिलासा देने वाली बातें कहने लगा मगर कैरीकरामा ने रोक कर कहा—

कैरी० । अफसोस ! तुमको नहीं मालूम कि मैं इस समय कैसी मुसीबत में पड़ा हूं ।

टोनर० । [ताज्जुब में आकर] इसका क्या मतलब ?

कैरी० । मेरे साथियों ने मेरा साथ छोड़ दिया, हरामजादे गाजी ने मेरी तरफ से सभों का दिल फेर दिया और सभों को यह समझा कर कि कैरीकरामा तो दिनरात ऐश में पड़ा रहता है जिस गरोह का मैं मालिक था उसका मालिक अब खुद बन बैठा है । सिर्फ एक जमशेद अभी तक मेरा साथ दिये जाता है, उसी ने मुझसे सब हाल कहा है ।

टोनर० । (कुछ सोच कर) मगर गाजी ने ऐसी बदमाशी की तो मेरी समझ में तुम्हारा फिर इस शहर में रहना ठीक नहीं है।

कैरी० । (जोश में आकर) गाजी इतनी बदमाशी नहीं कर सकता कि मुझे गिरफ्तार करावे ! आखिर उसे भी तो कुछ डर है ! अब तो वह आप ही गरोह का सर्दार बन बैठा है इससे उसकी तबीयत भर गई है, मगर अफसोस तो यह है कि मेरे पास इस वक्त सिवाय थोड़े रुपये और एक अशर्फी के और कुछ भी नहीं है और मै पूरा मुफलिस बन रहा हूँ !

टोनर० । यह तो और भी बुरी खबर तुमने सुनाई और अब मुझे समझ लेना चाहिए कि इस काम की बुनियाद ही मिट गई।

कैरी० । खैर तुम यह तो बताओ कि इस भेद का हाल पहिले तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

टोनर० । मैं लड़कपन से देखता आता हू कि मेरा मालिक मन्सूर सौदागर कभी कभी छिप कर बाहर जाया करता है और आठ दस या पन्द्रह रोज मे वापस आता है। सब कोई यही समझते थे कि यह सौदागरी के काम के लिए जाता है मगर मुझको इसका विश्वास न होता था। थोड़े ही दिन हुए वह बाहर से आकर कई दिन तक बहुत उदास रहा बल्कि कभी कभी रोया भी करता था, और उसके रंग ढंग से मालूम होता था कि मानों उसका कोई बड़ा भारी दोस्त या अजीज मर गया है। एक दिन वह कमरे का दर्वाजा बन्द करके कुछ लिखने लगा, यह देख मुझे और भी उत्कंठा हुई। इत्तिफाक से वह लिखता लिखता दूसरे कमरे में चला गया। मैं मौका पाकर उस कमरे में घुस गया और उस कागज को पढ़ने लगा जो वह लिख रहा था। उसमें गुलिस्तां की तारीफ लिखी हुई थी और यह भी लिखा हुआ था कि वह शहर स्वर्ग से कम नहीं है और वहां दौलत और जवाहिरात के ढेर लगे हैं। यह हाल पढ़ कर मेरे मुंह में पानी भर आया। मगर अफसोस ! मैं उसके आगे और पढ़ न सका।

कैरी० । बस बस अब तुम उस गुलिस्तां घाटी का जिक्र और मेरे सामने न करो जिसके मिलने की अब कोई उम्मीद न रही बल्कि अगर बता सकते हो तो कोई ऐसी तर्कीब बताओ जिससे मेरी दोनो आरजूयें पूरी हो ।

टोनर० । वह कौन सी ?

कैरी० । एक तो यह कि मैं फिर एक गरोह ठीक करके अपना काम जारी कर दूं, और दूसरे यह कि गाजी से बदला लूं ?

टोनर० । मगर इस काम के लिए तो रुपये की बहुत ही जरूरत पड़ेगी ।

कैरी० । इसमे भी क्या कोई शक है ।

टोनर० । (कुछ सोच कर) खैर मै रुपये मिलने की भी एक तर्कीब तुम्हें बता सकता हूँ ।

कैरी० । अहा ! अगर ऐसा करो तो मै तुम्हारा जन्म भर एहसान-मंद रहूँ !!

टोनर० । मगर मै फिर भी कहे देता हूँ कि अपने को जहा तक होगा बचाऊंगा और जहा अपने को फसता देखूंगा तुमको फसा दूंगा !!

कैरी० । कोई हर्ज नहीं, मै बहुत सभाल कर काम करूंगा ।

टोनर० । अच्छा तो फिर आज आधी रात को तुम जमशेद को साथ लेकर मन्सूर सौदागर के मकान के पिछवाड़े की तरफ पहुँचो । मै वहा मौजूद रहूँगा और जब तुम बाग के पिछले दर्वाजे को अपनी उंगली से तीन दफे ठोंकोगे तो दर्वाजा खोल दूंगा । इसके बाद जो कुछ करना होगा मै वहीं तुम्हें बताऊंगा ।

कैरी० । अच्छा मै जरूर आऊंगा ।

टोनर० । मगर मैं फिर कहता हूँ, देखना, खूब सभले रहना ।

कैरी० । कोई हर्ज नहीं, मै सब तरह से होशियार रहूँगा ।

इसके बाद टोनर ने और भी बहुत कुछ कैरीरगामा को समझाया

जिसके लिखने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि समय पर वह सब खुल ही जायगा।

शाम का पांच बज चुका था जब टोनर कैरीकरामा से बातचीत कर वहां से बाहर निकला मगर अपने मालिक के मकान पर न जाकर वह शहर के बाहर की तरफ चल पड़ा। थोड़ी देर बाद वह एक लम्बे चौड़े मकान के दर्वाजे पर जा खड़ा हुआ जहां उसने एक मनहूस सूरत तुर्क से कुछ बातें कीं जो दर्वाजे ही पर खड़ा था। उसकी बातें सुन तुर्क ने फाटक खोल दिया और टोनर मकान के अन्दर घुसा जिसके बाद उस तुर्क ने फिर दर्वाजा बन्द कर लिया। अब टोनर जिस जगह पहुंचा वहां बहुत सी खूबसूरत और हसीन कुआरी औरतें बैठी थीं जिनके हुस्न और जमाल को देख टोनर की आंखों में चकाचौंध आ गया।

अठारहवां बयान

ये औरतें कौन थीं? वहां क्यों थीं? वह जगह कौन सी थी? और टोनर वहां क्यों गया? इसके लिखने की अभी कोई जरूरत नहीं है। हां इतना हम अवश्य कहेंगे कि इन औरतों में से जो वहां मौजूद थीं दो तीन औरतें बहुत ही उदास और सुस्त मालूम पड़ती थीं और उनकी आंखें आंसुओं से डबडबाई हुई थीं मगर बाकी सब की सब बहुत खुश दिखाई देती थीं। टोनर इन सभों को देखता और घूमता फिरता एक छोटे कमरे के पास पहुंचा जिसके अन्दर एक बुड्ढा आदमी मसनद पर बैठा हुक्का पी रहा था। सूरत शक्ल और पोशाक से वह मुसलमान मालूम पड़ता था और उसकी रुआबदार नाक बता रही थी कि वह भी तुर्क है।

वह आदमी टोनर को देख संभल कर बैठ गया और साथ ही टोनर ने झुककर उसे सलाम किया।

तुर्क० (जिसका नाम मुस्तफा पाशा था) कहो तुम किधर आये और क्या काम करते हो?

टोनर०। मै मंसूर सौदागर का नौकर हूँ जिसका नाम शायद आपने भी सुना होगा।

मु० या०। वेशक मैंने मंसूर का नाम सुना है। वह बडा भारी सौदागर है और उसने बडी दौलत पैदा की है। खैर, तो तुम किस लिये आए हो?

टोनर०। सुनिये, हमारे मालिक के यहा एक बहुत ही हसीन औरत आई है जिसकी उम्र सत्रह वर्ष की है और खूबसूरती की तरफ ध्यान देने से तो वह एक परी मालूम होती है।

पृ० मु० या० (उन औरतों की तरफ इशारा करके) यह सब भी बहुत खूबसूरत है।

टोनर०। वेशक हैं, और अगर मैंने उसको न देखा होता तो जरूर कहता कि इनसे बढ कर खूबसूरत न होंगी मगर अब यही कहना मुनासिब है कि उसके मुकावले में ये सब ऐसी हैं जैसे अच्छे जवाहिर के सामने पैर के नीचे की मिट्टी।

मु० या०। ऐ नौजवान! क्या तुम इन लोगों को देख कर ऐसी बात कह रहे हो!

टोनर०। मै खूब देख कर वल्कि कसम खा कर कहता हूँ कि उसके सामने ये सब कुछ भी नहीं है, हा उसमें एक ऐब जरूर है।

मु० या०। वह क्या?

टोनर०। उसके दिमाग में कुछ फर्क पड गया है।

मु० या०। क्या वह पागल है?

टोनर०। हा कुछ कुछ।

मु० या०। बकती झकती है?

टोनर०। नहीं, बकती तो नहीं मगर अपनी खूबसूरती की शेखी उसे बहुत है और वह अपने को सितारे सिम्र लिया हो समझे हुई है जिसका जिक्र शायद आपने भी सुना होगा और जिसका नाम लेता है।

मु० या० । हां, मैंने लैला की खूबसूरती का जिक्र सुना है, लेकिन इस औरत में अगर इतना ही है तो कोई ऐब नहीं । वह अपने को जो चाहे समझा करे ।

टोनर० । बस और कोई ऐब उसमें नहीं है, मगर बातचीत में इतनी होशियार है कि अगर कोई नया आदमी उससे मिले और बातचीत करे तो वह जरूर यही समझेगा कि यह सितारे मिंगरेलिया लैला ही है ।

मु० या० । और कोई चाहे ऐसा समझे मगर मैं ऐसा कभी न समझूंगा क्योंकि मैं खूब जानता हूं कि लैला, मिंगरेलिया की शाहजादी, मंसूर सौदागर के घर कभी नहीं आ सकती । अच्छा, तुम मतलब की बात करो ।

टोनर मुस्तफा याकूब की तरह घसका और धीरे धीरे कुछ बातें करने लगा । बातें थोड़ी ही देर में खतम हो गईं । मालूम होता है कि दोनों में कुछ मामला तै हो गया क्योंकि खुशी खुशी टोनर वहां से उठा और अपने मकान की तरफ रवाने हुआ । रास्ते भर वह अपने दिल में सोचता था कि उसकी खोज तो नहीं हुई या उस पर किसी ने किसी तरह का शक तो नहीं किया ? मगर मालूम हुआ कि उसका डर बेकार था । और किसी को उस पर कोई शक न हुआ था ।

आधी रात हो गई । टोनर उठा और चुपके से उस बाग में पहुँचा जो इस मकान के पीछे की तरफ पड़ता था । रात अच्छी थी, सितारे छिटके हुए थे और चन्द्रमा भी कुछ कुछ निकला आता था । जिसे देख टोनर ने सोचा कि अगर अन्धेरी रात होती तो बहुत अच्छा होता । ‘खैर फिर भी हैदराना अपना काम बखूबी कर लेगा ।’ पीछे के दर्वाजे पर पहुंच कर टोनर इन्तजार करता खड़ा हो रहा । यकायक तीन मर्तबे खटका हुआ जिसे सुनते ही टोनर ने उस चाभी से जिसे उसने पहिले ही अपने कब्जे में कर लिया था दर्वाजा खोल दिया । हैदराना और उसका

साथी जमशेद बाग के अन्दर चले आये। टोनर ने दर्वाजा बन्द करके ताली कैरीकरामा के हाथ मे दे दी और ये तीनों आदमी धीरे धीरे आगे की तरफ बढ़े। जब उस दर्वाजे पर पहुँचे जो लैला के कमरे में जाने का रास्ता था, तो टोनर ने कैरीकरामा से कहा, "अपने औजार निकालो और यह दर्वाजा खोलो।"

कैरीकरामा ने अपने कमर से कई तरफ के औजार निकाले और कुछ ही देर में दर्वाजा खोल दिया।

टोनर ने कैरीकरामा से कहा "मुझको जो कुछ कहना था तुमसे कह चुका और मुस्तफा याकूब से भी बात पक्की कर आया हूँ, अब बाकी का काम तुम्हारे करने का है।"

यह कह टोनर वहां से चल दिया और बाग के पिछले दर्वाजे के पास पहुँच पेड़ों की आड में छिप कर अपनी शैतानी का नतीजा देखने लगा।

कैरीकरामा और जमशेद लैला के कमरे में घुसे। देखा कि लैला एक हलकी पोशाक पहिरे पलंग पर सो रही है, और सिरहाने तथा पैताने की तरफ इसकी दोनों लौंडियां नींद में गाफिल पड़ी हैं। एक लम्प धीमी रोशनी से जल रहा है।

ये दोनों एक एक रूमाल अपने हाथ मे इसलिये लिये हुए थे कि अगर किसी को जागता पावें तो झपट कर इसके मुंह मे ठूंस दें जिसमें वह चिल्ला न सके, मगर इसकी कोई जरूरत न पड़ी क्योंकि तीनों ही बेखबर सो रही थीं।

कैरीकरामा ने अपने जेब से एक शीशी निकाली और लैला की नाक मे लगाई, इसके बाद एक लौंडी की तरफ वही शीशी सुंघाने का बढ़ा। तब तक जमशेद ने दूसरी लौंडी को भी शीशा सुंघा दी, और तब ये दोनों खड़े हो कर उन तीनों के बेहोश होने की राह देखने लगे। थोड़ी ही देर में चेहरे का गुलाबी रंग उड़ जाने से निश्चय हो गया कि तीनों अच्छी तरह से बेहोश हो गई।

कैरीकरामा ने लैला के कपड़े जो उसने सोती समय उतार कर रख दिये थे एक गठरी में बांधे और लैला को उठा कर कमरे से बाहर हुआ। जमशेद ने वह गठरी उठा ली और निकलती समय उस दर्वाजे को भी उसी तरह दुरुस्त करके बन्द कर दिया।

टोनर दरख्तों की आड़ में छिपा बैठा था। उसको बैठे कुछ ही देर हुई थी कि किसी तरह का खटका मालूम हुआ। वह सांस रोक कर सुनने लगा, पैरों की चाप और पत्तों की खड़खड़ाहट ने बता दिया कि इस बाग में कोई और आया है मगर यह जानते ही टोनर चौंका और सोचने लगा—"इस समय यहां कौन आया! अगर अलादीन है तो जरूर लड़ाई हो जायगी और यदि मंसूर है तो जरूर गुल मचावेगा। सिर्फ यही नहीं, इस समय अगर मैं यहां से भागूं भी तो बेशक पहिचान लिया जाऊंगा। तब क्या करना चाहिये?"

धीरे धीरे वह आदमी इधर ही आ रहा था जिधर टोनर छिपा था। वह धीरे धीरे कुछ बोल भी रहा था जिससे पास आने पर टोनर ने उसकी आवाज ही नहीं पहिचानी बल्कि चान्दनी में उसकी सूरत भी देखी और यह जान टोनर का कलेजा घबड़ा उठा कि वह उसका मालिक मंसूर सौदागर है।

मंसूर धीरे धीरे कह रहा था, "आज क्या है जो मेरा जी घबड़ा रहा है! क्या कोई अनिष्ट आने वाला है? या इन कामों में जिन्हें मैं करना चाहता हूं कुछ विघ्न पड़ेगा। क्या सबब कि मुझे नींद नहीं आ रही है।"

इसी तरह कहता हुआ मंसूर धीरे धीरे रविशों पर टहल रहा था। टोनर घबड़ाता हुआ तरह तरह की बातें सोच रहा था। मगर उसका इतना हौसला नहीं पड़ता था कि एक तिनका भी हिलावे।

यकायक लैला के कमरे की तरफ से आते हुए किसी आदमी की आहट मंसूर को मालूम हुई। उसे ताज्जुब हुआ और वह उसी तरफ

बढा। देखा कि सामने से दो आदमी आ रहे हैं जिनमें से एक कुछ बोझ उठाये हुए है दूसरा खाली पीछे पीछे है। ये दोनों बाग के पिछले दर्वाजे की तरफ झपटे हुए चले जा रहे थे पर इन्हें देख मंसूर एकदम चिल्ला उठा। उसका चिल्लाना ही था कि जमशेद मंसूर की तरफ झपटा और उसे ढकेल जमीन पर गिरा एक हाथ से उसका गला दबाया और दूसरे हाथ से अपने खन्जर की तेज नोक उस बेचारे बूढे सौदागर के कलेजे के पार कर दी।

जिस जगह यह भयानक घटना हुई थी टोनर उस जगह से दूर था इसलिये उसको कुछ ठीक ठीक पता न लगा, मगर मंसूर के मुंह से फिर कोई आवाज न निकली जिससे टोनर को डर पैदा हुआ और वह सोचने लगा कि मालिक किसी मुसीबत मे तो नहीं पड गया है। यद्यपि वह बडा भारी दुष्ट था तो भी उसको अपने मालिक का जिसके यहा वह जन्म से पला था बहुत ध्यान रहता था। वह फौरन वहा पहुँचा जहा मंसूर जमीन पर पडा हुआ था। देखा कि उसका मालिक बेदम पडा है, खून उसके कलेजे से निकल रहा है और जमशेद तथा कैरीकरासा दग भागे बाग के बाहर की तरफ चले जा रहे हैं। कैरीकरासा की कमर में लट कती हुई लैला की पोशाक भी नजर आ रही थी जिससे टोनर ने समझा कि उन लोगों ने अपना काम पूरा कर डाला।

अपने मालिक की लाश देख टोनर को बहुत रन्ज हुआ। वह सौदा गर जिसने अनाथ टोनर पर दया की थी और अपने घर में रख कर उसे लडके की तरह पाला था इस समय बेजान उसके सामने पडा हुआ था। टोनर से रहा न गया। वह मंसूर की लाश के साथ लिपट गया और आखों से आंसू बहाने लगा।

कई मिनट इसी तरह गुजर गये। यकायक टोनर डरा और सोचने लगा कि अगर इस लाश के पास कोई मुझे अकेला देखेगा तो जरूर मुझही को खूनी ठहरावेगा। पाठक मनाफ ही गये होंगे कि टोनर दिन

का कैसा कच्चा था। वह उठ खड़ा हुआ और अपने बचाव की फिक्र करने लगा।

बाग में बिल्कुल सन्नाटा था। टोनर वहां से चल दिया और बीच-वाला दर्वाजा खोल कर जिसकी ताली उसके पास थी अपने सोने के कमरे में पहुंच जमीन पर बैठ रोने लगा। मगर कुछ ही देर बाद यकायक वह चौंका और सोचने लगा, "क्या अब मैं इस भारी दौलत को नहीं पा सकूंगा? नहीं नहीं वह जरूर मुझे मिलेगी, अब मैं इसे किसी तरह हाथसे जाने नहीं दे सकता!"

टोनर ने चारों तरफ कान लगा कर सुना, कहीं से कोई आवाज न आई, मालूम हुआ कि चारो तरफ सन्नाटा है। टोनर कमरे से निकला और फिर मसूर की लाश के पास पहुंच उसकी जेब में हाथ डाल कर कोई चीज टटोलने लगा। आखिर उसे तालियों का एक गुच्छा मिला। जिसे पाते ही टोनर फिर वहां एक पल भी न टिका और भाग कर सीधा मसूर के कमरे में पहुंचा। वहां एक लम्प अभी तक जल रहा था टोनर ने गुच्छे में से एक ताली लगाई और वह बक्स खोला जिसमें वह अपने निज के कागज पत्तर रक्खा करता था।

थोड़ी ही कोशिश के बाद टोनर ने बक्स में से वह कागज निकाल लिया जो घाटी गुलिस्ता के भेद के बारे में मसूर ने लिखा था। वह एक लिफाफे में बन्द था और लिफाफे पर लिखा हुआ था, "यह कागज इन दोनों आदमियों को देना जो एक ही रंग की दो मानिक की अंगूठियां जिन पर मेरा नाम लिखा हुआ हो दिखलावें और जिनमें से एक नौजवान हुई और दूसरी निर्मोहिया की शाहजादी होगी।" टोनर को विश्वास हो गया कि यही वह कागज है जिसमें गुलिस्ता घाटी और उसकी बेहिसाब दौलत का हाल लिखा है। उसने चाहा कि इस लिफाफे को खोल कर सब हाल पढ़े मगर इस समय इतना मौका न था, अतः वह लिफाफा अपने कपड़े में छिपाया, बक्स बन्द किया, और

कुञ्जियों का झब्बा ले वहा से बाहर निकल पुन. ससूर की लाश के पास जा वह गुच्छा जहा का तहा उसके जेब में रख दिया । मगर उसने इतने ही में बसन किया । इसके बाद वह गुदाम में गया और एक कुदाली निकाल एक झाडी में जमीन खोद वह लिफाफा उसमें रख मिट्टी डाल जमीन बराबर कर दी । इसके बाद वह कुदाली फिर गुदाम मे रख आया ।

इन सब कामों से छुट्टी पा कर टोनर सदर दर्वाजे की तरफ जा ही रहा था कि यकायक उसे तीन आदमी दिखाई पडे । टोनर भागने के लिये फिरा मगर उन तीनों ने दौड कर उसे पकड लिया और टोनर को पहिचान कर उनको बहुत ही ताज्जुब हुआ । इनमें से एक तो अलादीन और दो उसके साथी हाफिज और इब्राहीम थे ।

अलादीन ने टोनर से पूछा 'तू इतनी रात को यहा क्या कर रहा था ? हमको देख कर क्यों भागा ? और अभी अभी इस बाग मे कौन चिल्लाया था ?' टोनर ने इसका कुछ जवाब न दिया और डर के मारे घबडा कर चुपचाप अलादीन का मुह देखने लगा ।

इब्राहीम ने जब टोनर को पकडा तो उसके हाथ में टोनर का गीला कपडा लगा । उसने उसे छोड चान्दनी में अपनी उंगलियां देखीं तो मालूम हुआ कि खून लगा है, जिसे देखते ही वह एक दम चिल्ला उठा और बोला, 'हैं यह तो खून है ! इस छोकडे ने जरूर कुछ न कुछ आफत मचाई है !!"

अला० । (चौंक कर) टोनर ! क्या तू जख्मी है या तुझे किसी ने मारा है ?

इब्रा० । यह जख्मी ही होता तो भागता क्यों !

हाफिज० । (चिल्ला कर) अरे ! यह देखो जमीन पर एक लाश पडी हुई है ।

अब इन तीनों ने टोनर को मजबूती से पकड लिया और जब उस

लाश के पास जा कर देखा तो बेचारे मसूर सौदागर को जख्मी और मरा हुआ देख बेचैन हो गये।

अब टोनर हाथ जोड़ और गिड़गिड़ा कर बोला, "किसी के चिल्लाने की आवाज सुन कर मैं दौड़ा हुआ यहां आया तो अपने मालिक को मरा हुआ देख घबड़ा गया। लाश के साथ लिपट कर खूब रोया इसी से मेरे कपड़े में खून लगा हुआ है।"

टोनर ने बहुत कुछ कहा मगर किसी को उसकी बात पर विश्वास न हुआ, क्योंकि उसकी सूरत से मालूम हो रहा था कि वही खूनी है। आखिर अलादीन ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि टोनर को बांध कर रखो और मदद ले कर तहकीकात करो कि क्या मामला है।

कानूनी मदद का नाम सुनते ही टोनर बेहोश हो कर गिर पड़ा। हाफिज और एमालीम उसी तरह उसे उठा कर घर में ले गये और सब नौकर चाकरों को जगा कर हाल कहा।

थोड़ी ही देर में हाहाकार मच गया और सरकारी कर्मचारियों तथा पुलिस इत्यादि ने आ कर तहकीकात शुरू कर दी। मकान में घूम फिर कर देखने से मालूम हुआ कि लैला घर में नहीं है मगर उसकी लौंडिया बेखबर सो रही हैं। अलादीन पर तमाम दुनिया की मुसीबत आ पड़ी। उसका मेहरबान दोस्त मन्सूर सौदागर मारा गया! उसकी प्यारी लैला गायब हो गई! वह कहां गई और उसे कौन उठा ले गया यह कुछ मालूम न हुआ पर अलादीन ने खयाल किया कि चोर बहुत दूर नहीं गया होगा इसलिये उसने बहुत से आदमियों को हुक्म दिया कि घोड़ों पर सवार हो कर चारों ही खोज करें।

टोनर होश में आया और अपने को सरकारी कर्मचारियों के कब्जे में देख कर बहुत तरह से अपनी बेगुनाही साबित करने लगा मगर उसके मुंह से कोई ऐसी बात न निकली जिससे लैला के गायब होने का सबब मालूम होता।

उन्नीसवां बयान

लैला जब होश मे आई तो उसने अपने को एक गाडी मे पाया जो बहुत तेज जा रही थी और जिसकी कपडे की छत्त डंडों पर तनी थी तथा कपडे ही का पर्दा चारो तरफ पडा हुआ था। इस समय लैला के बदन पर वही कपडे थे जो सोती समय उसने पहिरे थे और दिन के पहिनने के उम्दे कपडे उसके बगल मे पडे हुए थे।

अपने को इस हालत मे देख लैला को पहिले तो यही धोखा हुआ कि मै स्वप्न देख रही हूँ मगर चारो तरफ ध्यान देखने से जब यह निश्चय हो गया कि यह स्वप्न नहीं है तो उसने गाडी का पर्दा उठा कर झांका। मालूम हुआ कि सुनसान सडक पर गाडी तेजी के साथ जा रही है और एक आदमी जिसका कद लम्बा और बदसूरत तथा पोशाक भी अच्छी नहीं है, घोडा कुदाता साथ साथ जा रहा है।

लैला ने पर्दा गिरा दिया और सोचने लगी, "मै तो मन्सूर सौदागर के मकान में सोई हुई थी और मेरे सिरहाने और पैताने मेरी दोनों लौंडियां सोई हुई थीं फिर मै यहां क्योंकर पहुँची! मन्सूर ने मुझे धोखा तो नहीं दिया! नहीं नहीं वह ऐसा आदमी नहीं है, शायद गुलिस्ता घाटी में ले जाने के लिए जहां मेरे दादा ने दुनिया छोड कर रहना पसन्द किया था मन्सूर ने यह तर्कीब सोची हो,मगर नहीं, इसका भी विश्वास नहीं होता।" लैला ने फिर पर्दा उठा कर देखा और अबकी उस आदमी ने जो घोडे पर सवार साथ साथ जाता था गाडी के पास आ कर पूछा, "कहिये, किसी चीज की जरूरत है?"

लैला ने इसका कोई जवाब न दिया और घबराहट के मारे चारो तरफ देखने लगी। इतने ही में एक दूसरा सवार गाडी के पास आया। यह बहुत बूढा था और इसकी तुर्की पोशाक भडकदार थी। उसने लैला से पूछा, "आप क्या चाहती हैं?"

लैला० । मैं इस तरह गाडी पर क्यों जा रही हूँ ? मंगा

डूरा० । इसका जवाब तो बहुत सहज है । तुम मेरी उन औरतों मे हो जिनको मैंने दाम दे कर खरीदा है ।

यह सुनते ही लैला घबड़ा उठी । उसने जोर से चिल्लाना चाहा मगर तरह तरह के ख्यालों ने उसका गला दबा लिया ।

डूरा० । आपको खुश होना चाहिये कि मैंने और औरतों की बनिस्बत आपकी कीमत बहुत ज्यादे दी है ।

लैला० । बड़े ताज्जुब की बात है ! मुझे किसने बेचा ? क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूं ?

डूरा० मैं खूब जानता हूं कि तुमसे बढ़ कर खूबसूरत कोई नहीं होगी ।

लैला० । बस जबान सम्हाल कर बोलो, नहीं जानते कि तुम किससे बातें कर रहे हो ? जब मैं अपना रुतबा बयान करूंगी तो तुम डरोगे- और जो कुछ तुमने किया है उसकी माफी मांगोगे । मैं तुम्हें बताती हूं कि मैं मुल्क [illegible] की शाहजादी हूँ ॥

लै० । ओह, वह शैतान टोनर तो नहीं ? जिसकी उम्र अठारह की है ? और जिसकी आंखें चमकदार तथा बाल भूरे भूरे हैं ॥

मु० या० । हां वही है ।

लैला का कलेजा कांप गया और अब उसे मिरहा की वह आखिरी बात याद आई जो कि उसने टोनर के बारे में कही थी । आखिर अपने को सम्हाल वह बोली ।

लैला० । मगर उस छोकड़े को मुझ पर अख्तियार क्या था जो उसने मुझे तुम्हारे हाथ बेचा ?

मु० या० । खाली वह अकेला ही नहीं बल्कि तुम्हारे दोनो भाइयों ने भी तो उसकी मारफत तुम्हारा सौदा पक्का किया था ।

लैला० । (चौंक कर) ऐ ! मेरा भाई कौन ? मेरा तो कोई भाई नहीं है !

मु० या० । खुदा जानता है कि मुझे उस छोकडे ने यही कहा था कि वह तुम्हारे दोनों भाइयों की तरफ से सौदा पक्का कर रहा है और ठीक वक्त पर तुम्हारे दोनों भाई तुमको हमारे यहां पहुँचा जायगे । जब वे दोनों तुम्हें ले कर आये मैंने तुमको दाम दे कर खरीद लिया, मुझ को कानून का कुछ डर नहीं है और फिर दो घन्टे में हमलोग तुर्की अमलदारी में पहुँच जायगे जहां किसी तरह का कोई डर न रहेगा ।

अब बेचारी लैला को मालूम हुआ कि उसके साथ कैसा फरेब किया गया । उसने जल्दी से पूछा ' अच्छा तुम यह बताओ कि मेरे लिए तुम्हें कितना रुपैया देना पडा ? मैं उससे दूना और चौगुना रुपया तुम्हें नजर कर सकती हूँ । अगर मैं एक सतर भी मन्सूर को लिख भेजूं तो जितना रुपया मांगू बात की बात में आ जायगा ।"

मु० या० । हां जिसमें और कुछ नहीं तो थोडी बहुत फौज तो जरूर ही हम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए आ जाय !!

लैला० । (धीमी आवाज में) नहीं नहीं, तुम चीठी खुद पढ़

लेना और तब अपने किसी मोतबिर आदमी को भेज कर रुपया मंगा लेना।

मु० या०। नहीं नहीं, मै ऐसे बखेडों में नहीं पड सकता, इन्हीं कामों में मेरी दाढ़ी सुफेद हुई है और मै किसी के मकर और फरेब में नहीं फसने का।

बदकिस्मत लैला को विश्वास हो गया कि इस पर मेरी बातों का कोई असर न होगा और न यह शैतान मुझे छोडदेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि टोमर ने मेरे साथ पूरी बदमाशी की और यहा तक ढंग रचा कि मुझे पागल बना दिया, अब अगर मै कहूं भी कि मै मिसरेलिया की शाहजादी हूं तो सिवाय हंसी में उडाने के और कोई भी विश्वास नहीं करेगा, फिर भी लैला ने कड़ा जी करके मुस्तफा याकूब से कहा, "तुम जितनी दौलत चाहो मुझसे लेलो मगर मुझे छोड दो।" इसके जवाब में मुस्तफा याकूब ने कहा, "इन बातों की कोई जरूरत नहीं और न मै रुपये के लालच में पडूंगा ही। मगर तुम अफसोस मत करो जब हम लोग सरहद के बाहर जायगे तब तुमको अख्तियार दे देंगे कि तुम औरतों के साथ मिलो और उनसे बोलो जिनको मैने तुमसे पहिले खरीदा है। वे भी हमारे साथ साथ चली आती हैं और तुम देखोगी कि वे सब कैसी खुश हैं तथा ईद के दिन बादशाह की नजर के लिए इन्हें ले जाने का हर एक को कैसी उम्मीद है।"

तरह की मदद मिल सकती थी, अस्तु उसने यहा डेरा डाल दिया और सभो के खाने पीने का बन्दोबस्त किया। लैला को भी खाने को कहा गया। मगर उसने इन्कार किया।

कुछ देर आराम करने बाद फिर सफर की तैयारी हुई। मुस्तफा याकूब ने लैला से पूछा, "आप गाडी पर चलेंगी या घोडे पर सवार हो कर सफर करेंगी ? देखिये ये सब औरतें घोडों पर सवार है और कैसे उमग से सफर कर रही हैं क्योंकि सभो को अपने अपने चुने जाने की उम्मीद और खुशी हद्द से ज्यादे है।"

लैला ने यह सोच कर कि शायद घोडे पर सवार हो कर सफर करने से भागने का कोई मौका मिल जाय, जवाब दिया कि 'मै घोडे ही पर सफर करुगी।'

एक निहायत उम्दा घोडा लैला की सवारी के लिए लाया गया। लैला ने यह खयाल करके सुस्त रहना मुनासिब न समझा कि अपने को खुश न रक्खू गी तो भागने का मौका न मिलेगा। यद्यपि यह बात लैला के लिए बहुत मुश्किल थी मगर लाचार हो कर उसे ऐसा करना ही पडा।

इस गाव से बातूम चालीस कोस के लगभग था जहा से जहाज पर सवार हो कर टर्की जाना पडता था। लैला घोडे पर सवार हुई और अब उसने अपनी आखों से उन सब औरतो को देखा जिन्हें मुस्तफा याकूब ने खरीदा था और जो खुशी खुशी घोडों पर सवार जा रही थीं। हा, इनमें कई औरते ऐसी भी थीं जिनके चेहरे से उदासी और रज मालूम होता था मगर इसी सबब से बनिस्बत और औरतों के उन पर पहरा भी ज्यादे था।

तीन दिन तक बराबर ये लोग चले गये। रास्ते में जगह जगह पर ठहरते और सभों के आराम का इन्तजाम करते जाते थे। सब औरतों के खाने के लिये सभी चीजें अच्छी अच्छी दी जाती थीं, क्योंकि मुस्तफा

याकूब को इन लोगों के खूबसूरत होने और तन्दुरुस्त रहने ही पर हजारों दाम पाने की उम्मीद थी।

तीसरे रोज ये लोग बन्दर बातूम पहुँचे और एक मकान में डेरा किया। यह मकान खास मुस्तफा याकूब का ही था क्योंकि उसको अपने इस नीच काम की बदौलत बराबर इस राह से आना जाना पड़ता था। उसने अपना एक आदमी भी यहां पहिले ही से भेज दिया था कि जहाज का बन्दोबस्त कर रक्खे। दूसरे दिन सबेरे ये लोग जहाज पर सवार हुये, मुस्तफा याकूब के लिये जहाज में पीछे की तरफ दो लम्बे चौड़े कमरों का बन्दोबस्त किया गया था जिसमें इन लोगों के गुजारे लायक पूरी जगह थी।

जहाज पर चढ़ते समय हैला और भी उदास हो गई मगर उसी दम उसकी नजर एक औरत पर जा पड़ी जिसे उसने फौरन पहिचान लिया कि फातमा है। उसी के पास एक और औरत दिखलाई पड़ी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ा हुआ था मगर उसका हाथ कुछ खुला रहने से मालूम हुआ कि वह बहुत काली है।

हैला ने अफसोस भरी निगाह फातमा पर डाली मगर फातमा की जो निगाह हैला पर पड़ी उससे हैला को मालूम हुआ कि वह उसे ढाढ़स दे रही है। तब हैला को कुछ तसल्ली हुई और उसको ज्ञान पड़ा कि वह अकेली नहीं है बल्कि कोई मददगार भी उसका इस जहाज पर है।

एक आदमी शाही महलसरा की तरफ भेजा जो यह जवाब लाया कि आज ही शाम को वह इन औरतों को पेश करे।

बीसवां बयान

मुसल्मानों में एक महीना रमजान का होता है जिसमें वे लोग महीने भर तक रोजा (व्रत) रखते हैं। दिन भर भूखे रहते हैं और पानी तक नहीं पीते। जिस जमाने का हाल हम लिख रहे हैं उसमें खास करके रूम में इसकी ज्यादे धूमधाम रहती थी और ईद के दिन रोजा खतम होने पर बादशाह को नजर में एक कुंआरी औरत चुन कर दी जाती थी। औरतों की पसन्द बादशाह की मा की तरफ से होती थी जिसे वे कई रोज पहिले ही पसन्द कर लेती थीं। इन्हीं दिनों में बर्दफरोश लोग बहुत सी लड़कियां ले ले कर आते और पसन्द की उम्मीद और इनाम पाने की खुशी में आसरा लगाये बैठे रहते थे। इनमें से एक औरत बादशाह को नजर दी जाती थी और बाकी वजीर उमरा लोग दर्जे बदर्जे पसन्द कर लिया करते थे। जो औरत बादशाह के महल में जाती थी वह तब तक बादशाही बेगम या सुल्ताना नहीं कहलाती थी जब तक उसे कोई औलाद न हो ले। हां बादशाही महल में रहने का आनन्द उसे पूरा मिलता था और इसी खुशी की उम्मीद में बहुतसी औरतें फूली रहती थीं। और सौदागरों की तरह मुस्तफा याकूब भी बहुत सी औरतों को ले कर जिनमें लैला भी थी, रोजा खतम होने के चार दिन पहिले ही कुस्तुनतुनिया जा पहुंचा।

शाम के वक्त मुस्तफा याकूब ने सब औरतों को नकाब पहिरा कर गाड़ियों पर सवार करा, बादशाही महल की तरफ रवाने किया और आप भी साथ हो लिया। इस समय लैला का कलेजा इस डर से कांप रहा था कि कहीं वही न चुनी जाय और ज्यों ज्यों गाड़ी महल के पास

पहुँचती जाती थी त्यों त्यों वह घबड़ाती और अपने छूटने के लिये हजारों तर्कीबें सोचती जाती थी।

जब गाड़ियां महल्सरा के सहन में पहुँचीं तो वहां बहुत सी लौंडियों और गुलामों ने इन औरतों को गाड़ी पर से उतारा तथा महल में ले गई जहां मुस्तफा याकूब या और कोई गैर जा नहीं सकता था।

कई सजे हुये कमरों में घूमती हुई सब औरतें वहां पहुँचाई गईं जहां बादशाह (सुल्तान) की मा बैठी हुई थीं। लैला इन सभों के पीछे थी।

सुल्तान (बादशाह) की मा एक पैंतालीस वर्ष की औरत थी जिसके चेहरे पर खूबसूरती और रुआब किसी समय में बहुत चढ़ा बढ़ा होगा और अब भी मौजूद है। वह एक निहायत उम्दा बेशकीमत गद्दी पर बैठी हुई थी और उसके दोनों बगल में दो हबशी गुलाम अदब से सर नीचा किये खड़े थे।

इस कमरे में बिल्कुल सन्नाटा था। एक गुलाम कैसर आगा के कहने से सब औरतों ने अपने अपने चेहरे से नकाब हटा दी और एक एक करके उनकी दिखाई शुरू हुई जिसे सुल्तान की मा देख लेतीं वह दूसरे कमरे में हटा दी जाती। इसी तरह एक एक करके सब औरतें देखी गईं और सबके आखिर में बेचारी आफत की मारी [illegible] लैला पेश की गई जिस को सुल्तान की मा ने बहुत देर तक गौर के साथ देखा और ईद में नजर देने के लिये इसी को पसन्द करके मुबारकबाद देने को उठ खड़ी हुई।

इक्कीसवां बयान

सुल्तान की मा ने गद्दी से उतर कर लैला का हाथ थामा और मुबारक बादी दे कर कहा, "बड़ी खुशी की बात है कि अपने लड़के को नजर देने के लिये मैंने तुम को पसन्द किया।" मगर लैला यह सुनते ही बदहवास हो गई और उसके सिर में चक्कर आ गया। वह जमीन पर घुटने टेक कर बैठ गई और बोली—

लैला०। मेरी बेअदबी को माफ कीजियेगा मगर मैं आपसे इनसाफ चाहती हूँ क्योंकि मुझ पर बहुत जुल्म किया गया है। आपको शायद यह सुन कर ताज्जुब होगा कि मै मिम्रेलिया की शाहजादी लैला हूँ।

सुल्ताना०। (चौंक कर) ऐ! क्या तुम वह मशहूर सितारे मिम्रेलिया लेला हो जिसका मैंने कई दफे जिक सुना है और जिसके हुस्न की तारीफ दूर दूर के मुल्कों में मशहूर है!!

लैला०। (अपने दिल में कुछ खुश हो कर) जी हां, खुदा का शुक्र कि आपने मेरी बात को झूठ न समझा।

सुल्तान०। शुक्रिये की कोई जरूरत नहीं, मुझे विश्वास होता है ~ तुम सच्ची हो। आओ मेरे पास बैठो और बताओ कि तुम मुस्तफा याकूब के हाथ कैसे पड़ी?

लैला०। (सुल्तान की मा के पास मसनद पर बैठ कर) मुझे एक निजी काम के लिये सिर्फ दो आदमियों को साथ लेकर टिफलिस जाना पड़ा। वहां एक नोकर की दगाबाजी से मैं मुस्तफा याकूब के हाथ बेच दी गई जो अपनी लौंडियों के झुण्ड में मिला कर मुझे यहां ले आया है।

सुल्ताना०। (गुस्से से भर कर) कसम खुदा और रसूल की, इसकी पूरी सजा मुस्तफा याकूब को दी जायगी। वह इसी वक्त कैदखाने में भेजा जायगा और कल ही उसके मुकद्दमे की तहकीकात की जायगी!!

कमरे में जो कि उसके लिए मुकर्रर किया गया था जाना ही पडा। दो लौंडियाँ काम करने को उसके लिए मुस्तैद कर दी गईं।

यह कमरा बहुत सजा हुआ था और जरूरत की सब चीजें इसमे मौजूद थीं। हर तरह की किताबें भी पढने के लिए यहा रक्खी हुई थीं। बहुत देर तक लैला बदहवास इसी कमरे मे पडी रही और दोनो लौंडिया एक किनारे की तरफ खडी रहीं, पर आखिर उसने अपने दिल को सम्हाला और उन दोनो लौंडियो को अपने पास बुला कर पूछा, "तीसरे साल यहा तोहफे के लिये कौन औरत पसन्द की गई थी?"

लौंडी०। एक बहुत खुबसूरत गुर्जी औरत जिनका नाम आयशा था चुनी गई थीं। उनको एक लडकी भी हुई है जिसके लिए उनको सुल्ताना का मरतबा दिया गया और अब उनका नाम तरखाना बेगम रक्खा गया है।

लैला०। मैं उनसे मुलाकात किया चाहती हू, क्या वह यहा आ सकती है?

लौंडी०। उनको अख्तियार है महल भर मे जहा चाहें घूमें।

लैला०। उनसे क्योंकर मुलाकात हो सकती है?

लौंडी०। आज तो बहुत रात हो गई पर मैं कल्ह इसका इन्तजाम करूंगी और उनसे आपका सन्देशा कहूँगी। मगर वह उसी वक्त आपसे मुलाकात कर सकती है जब कुछ दिन रहते बादशाह बजडे पर सवार हो कर हवा खाने के लिए बन्दरगाह तक जाते हैं।

लैला०। ठीक है, उसी वक्त सही, मगर तुम उनसे यह भी कह देना कि मैं उनकी मा और बहिनो से मिल कर आई हूँ और उनका हाल चाल कहना चाहती हूँ।

रात भर लैला ने तरद्दुद और सोच बिचार में बिताई और दूसरा दिन किताबों के देखने में काटा। शाम के कुछ पहिले ही दरिया की तरफ वाली खिडकी में खडी खडी लैला ने बादशाह को बजडे पर सवार

बड़े ठाठ से हवा खाने के लिए जाते देखा। उनके पीछे और भी कई किश्तियां थीं जिनमें उनके वजीर और उमरा लोग सवार थे। लैला ने लौंडियों की तरफ देखा। वे समझ गईं कि आयशा से मुलाकात करने का वक्त हो गया और यही लैला चाहती है। अस्तु वे दोनों वहां से चली गईं और थोड़ी ही देर बाद आयशा को लिए हुए लैला के पास आ पहुँचीं।

बाईसवां बयान

तरखाना बेगम (आयशा) को देख कर लैला बहुत खुश हुई। इसकी उमर इक्कीस वर्ष की थी और इसकी खूबसूरती के बारे में इसकी मा ने जो कुछ लैला से कहा था वह लड़कों की मुहब्बत में कुछ बढ़ा चढ़ा कर नहीं कहा था। जो कुछ उसने कहा था लैला ने सब बातें उसमें बढ़ कर उसमें पाईं। वह इस वक्त बड़े दर्जे पर थी और खूबसूरती भी बहुत रखती थी तिस पर भी उसने अपना पुराना मिजाज बिल्कुल नहीं बदला था और न घर वालों की मुहब्बत ही भूली थी। लैला उसकी मा से मिल कर तथा उसकी बहिनों का सन्देसा ले कर आई है यह सुनते ही तरखाना का दिल भर आया और जहां तक जल्द हो सका उससे मिलने को आई।

तरखाना० । (मुहब्बत भरी आवाज से) शुक्र है !!

तरखाना का हाथ थामे हुए लैला बैठने की जगह पर ले गई और बैठा आप उसके पास बैठ गई । दोनों नौजवान लौंडियें हाथ बांध कर कुछ दूर पर खड़ी हो गई । मगर लैला का भाव समझ कर तारखाना ने दोनों लौंडियों को बाहर जाने के लिये कहा और यह भी कह दिया कि जब तक हम न बुलावें तुम यहां मत आना । हुक्म पातेही दोनों लौंडियां दूसरे कमरे में चली गईं ।

तरखाना० । लैला ! यह तो बताओ कि मेरी जुदाई में मेरी मां और बहिनों का क्या हाल है ?

लैला० । तुम्हारी जुदाई का उनके दिल पर बड़ा सदमा है । तुम्हारा ... तुम्हारी मां की जबानी मैंने सुना था । सफर के मौके पर एक दिन मेरा जाना तुम्हारे घर हुआ, तब मैं एक रात तुम्हारे यहां मेहमान रही । उसी समय तुम्हारी मां ने तुम्हारे जबरदस्ती भगा ले जाने का हाल ... मुझसे कहा था । उनको बिल्कुल नहीं मालूम कि तुम पर क्या गुजरती है । अगर उन लोगों को यह मालूम हो जाय कि तुम यहां अच्छी तरह से हो और तुमको किसी बात की तकलीफ या किसी तरह का रंज नहीं है तो भी उनको बहुत कुछ धीरज बंध जाय और वे अपने को किस्मत पर छोड़ दें । तुम्हारी मां बहुत सी बातों का खयाल करके तुम्हारी बहिनों के आगे तुम्हारा नाम भी नहीं लेती है ।

इसी तरह की बहुत सी बातें लैला ने कहीं । तरखाना लैला का सुनती जाती थी और रोती जाती थी, जब लैला चुप हुई थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा ।

तरखाना० । मैं एक आदमी का हाल और भी तुमसे पूछा चाहता हूँ, मगर वह बिल्कुल दोस्ती के तौर पर क्योंकि सिवाय दोस्ती के और किसी तरह की मुहब्बत का खयाल अब मैं उससे नहीं रख सकती और न अपने बादशाह के साथ किसी तरह की बेवफाई ही कर सकती हूँ ।

लैला समझ गई कि तरआना का मतलब उसी गुर्जी जिमीदार से है जो उस पर आशिक था और जिसका हाल उसकी मा की जबानी सुन चुकी थी अस्तु वह बोली—

लैला। हां, मैं समझ गई। जिसके लिए तुम पूछोगी वह भी तुम्हारी जुदाई में बहुत कुछ दुःख भोग रहा है।

तरआना। (ऊंची सांस लेकर) अफसोस! जो लोग मेरी तरफ ध्यान लगाये हुए हैं उनको अगर मेरी खबर मिल जाती कि मैं अच्छी तरह हूं, तो वे इस बात को भी जान जाते कि मैं उन्हें अभी तक नहीं भूली हूं और इस तरह मेरे सिर से एक भारी बोझा उतर जाता। मगर क्या करूं! यहां मैं अपने लिए सैकड़ों लौंडियां बुलवा सकती हूं अपने आराम के लिए जो चाहे मंगवा सकती हूं, सिर से पैर तक अपने को जेवरों से भर सकती हूं, लेकिन अगर मैं यह चाहूं कि अपना एक पुर्जा भी अपने घर भेज सकूं तो कोई भी ऐसा मुझे करने न देगा।

लैला। (अफसोस के साथ) अगर मेरी जान इस आफत से बच गई और इस दुःख से मैं जीती जागती निकल भागी तो जरूर तुम्हारे घर तक जाऊंगी और तुम्हारा सन्देसा पूरा पूरा उन लोगों के पास पहुंचाऊंगा।

आया था मगर एक झूठी और फरेबी खबर से वे फिर बदल गई। असल तो यह है कि सभी ने मुझे पागल समझ लिया है और कहते हैं कि मै सिर्फ शेखी में आकर अपने को सिरेगलिया की शाहजादी लैला बतलाती हूँ वास्तव में नहीं हूँ, मगर मै तुमसे खुदा की कसम खाकर कहती हूँ कि मै वही बदकिस्मत शाहजादी हूँ।

तरखाना०। मुझे विश्वास होता है कि तुम सच्च कहती हो और फिर सिवाय लैला के इतनी खूबसूरती और किसमें हो सकती है! मगर ऐ बदनसीब शाहजादी! तुम पर यह मुसीबत कैसे पडी और मै किस तरह तुम्हारी मदद कर सकती हूँ?

लैला ने अपना किस्सा दोहरा कर कहा और अपने मकर तथा मुस्तफा याकूब की दगाबाजी का हाल पूरा पूरा बयान किया।

तरखाना०। प्यारी शाहजादी! तुमने अपना हाल सच सच कह दिया अब मेरी बारी है और यहा का जो कुछ हाल है वह मैं भी ठीक ठीक कहे देती हूँ। सुल्तान से किसी तरह की उम्मीद करनी फजूल है। इसमें कोई शक नहीं कि वह नेक गरीब परवर और रहमदिल है मगर क्या करें रसम और रेवाज की रस्सी मे वे ऐसे जकडे हैं कि कुछ कर नहीं सकते। उनकी मा ईद में जो तुहफा पसन्द करके उन्हे दें उससे वे इन्कार नहीं कर सकते, न उसको छोड सकते है, न उस पर रहम कर सकते है। इसलिए सुल्तान से इस बारे मे कहना बिलकुल व्यर्थ है। इसके सिवाय रमजान के दिनों में उन्हें महल में आने का हुक्म नहीं और न मै किसी तर्कीब से उन्हें बुलवा कर कुछ कह ही सकती हूँ इस लिये जहा तक मैं समझती हूँ यहा से निकल भागने की उम्मीद करना बिलकुल पागलपन है।

तरखाना की यह बात सुन लैला और भी घबडाई। उसकी आखिरी उम्मीद जो कुछ थी वह भी खतम हो गई और वह सोचने लगी कि जब सुल्तान और तरखाना भी मेरी मदद नहीं कर सकते तो बेचारी फातिमा

मुझे किस तरह छुड़ा सकती है। आखों से आंसू जारी हो गया। और वह जार जार रोने लगी।

तरखाना०। (लैला के हाल पर तरस खा कर) मगर प्यारी लैला! तुम दिलजमई रक्खो। मुझसे जहां तक होगा तुम्हारी मदद करूंगी, चाहे इसके मेरे ऊपर कितनी ही आफत क्यों न आवे!!

यह बातें हो ही रही थीं कि दर्वाजा खुला और एक लौंडी कमरे के अन्दर आई। उसने दोनों को झुक कर सलाम किया और लैला की तरफ देख कर बोली, "पैगम्बर आगा कुछ अर्ज करने को हाजिर हुआ है।" तरखाना ने लैला की तरफ से जवाब दिया, "अच्छा आने दो।" और जब लौंडी बाहर चली गई तरखाना बोली, "देखें यह बड़ा ओहदेदार क्यों आया है! प्यारी लैला! तुम्हारे लिये हर एक काम मुश्किल हुआ जाता है।"

पैगम्बर आगा ने भीतर आने पर तरखाना को देख कर बनिस्बत लैला के ज्यादे शुक्रगार सलाम किया। तरखाना ने कहा, "बोलो क्या है?"

पैगम्बर आगा०। (लैला की तरफ देख कर) एक जवान औरत जो आपके घर में आपकी लौंडी थी यहां आई है और चाहती है कि यहां भी आपकी इसी तरह खिदमत करे। मैंने उसे कह दिया है कि आपकी मर्जी पा कर तब आए, मगर सुल्तान की मां का हुक्म लिये बिना ऐसा नहीं किया जा सकता।

का भी कुछ हाल मालूम हो। शायद इन लोगों ने मेरे छुड़ाने की भी कोई तर्कीब की हो। इन सब बातों को सोच कर लैला कुछ खुश हुई।

तरखाना पांच घण्टे के बाद उस कमरे मे आई जहां लैला बैठी थी और उसके चेहरे ही से लैला समझ गई कि वह जिस काम के लिये गई उसे पूरा कर आई।

तरखाना०। मैंने सहजही में सुलतान की मां को राजी कर लिया, मगर उन्होंने एक शर्त यह लगाई है कि जो लौंडी इस महल में आवेगी वह जन्म भर फिर यहां से बाहर न जा सकेगी क्योंकि यह एक पुराना कायदा है।

लैला०। यह तो बड़ी मुश्किल है और शायद वह लौंडी इस बात को मानने पर राजी न हो!

तरखाना०। जो आपकी मुहब्बत से अपना घर छोड़ यहां तक आई है वह इस शर्त को भी जरूर कबूल करेगी।

यह बातें हो ही रही थीं कि कैसर आगा फिर आया और सलाम करके लैला से बोला, "उस लौंडी ने हमारे यहां की शर्त कबूल कर ली और यहां आ कर दूसरे कमरे में ठहरी है, हुक्म हो तो हाजिर की जाय।"

तरखाना०। लैला! मै इस वक्त जाती हूं क्योंकि इस लौंडी से तुम्हें बहुत कुछ सुनना होगा जो तुम्हारी मुहब्बत में यहां तक आई है मगर कल मै फिर उसी वक्त तुमसे आकर मिलूंगी जिस वक्त आज आई था।

यह कह कर तरखाना लैला से गले गले मिली और वहां से चली गई। कैसर आगा भी उसके पीछे पीछे चला गया। लैला सोचने लगी कि देखें जुबेदा आई है या बसीना, मगर जब उस लौंडी ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा तो लैला ने देखा कि वह उन दोनों मे से कोई भी नहीं है बल्कि कोई तीसरी ही औरत है जिसे वह बिल्कुल नहीं पहिचानती! यह देख पहिले तो लैला बहुत घबड़ाई मगर फिर उसे याद आ गया

कि जहाज पर फात्मा के साथ इसी को मैंने देखा था। उसे तुरत खयाल आया कि शायद फात्मा ने मेरे छुड़ाने के लिये यह फिक्र की हो।

इस औरत के कमरे के अन्दर आते ही दर्वाजा बन्द हो गया और ये दोनों अकेली उसमें रह गईं। लैला ने जहाज पर इसकी सूरत अच्छी तरह नहीं देखी थी और सिर्फ कपडे ही से पहिचाना था कि यह वही औरत है मगर अब इसकी सूरत देख लैला को ताज्जुब हुआ! क्योंकि इस में से किसी तरह का ऐब न था, हर तरह से खूबसूरत थी और पोशाक भी इसकी बेशकीमत थी, मगर रंग इसका बहुत ही काला था।

यह सांवली औरत आहिस्ता आहिस्ता लैला के पास आई और दोनों हाथ बांध सिर नीचे कर खड़ी हो गई।

लैला०। तुम कौन हो?

नौडा०। (बहुत मीठी और धीमी आवाज से) मेरा नाम दलो-रिसा है।

लैला०। तुम यहां क्यों आईं और मेरे लिये इतनी तकलीफ क्यों उठाई? क्या इसमें कोई भेद है?

तेईसवां बयान

क्लौडिसा की बात सुन लैला बहुत खुश हुई और उसको अपने पास मसनद पर बैठाना चाहा मगर क्लौडिसा ने इससे इन्कार किया और कहा, "नहीं, ऐसा करने से लोगों को शक होगा और वह असल काम रुक जायगा जिसके लिये मै आई हूँ ॥"

लैला० । क्लौडिसा ! तुम्हारा खयाल बहुत ठीक है खैर जैसी तुम्हारी मर्जी हो वैसा ही करो !

क्लौडिसा० । फातमा ने आपके छुडाने के लिये एक बहुत अच्छी तर्कीब सोची है अगर आप उसे पसन्द करें !!

लैला० । क्या तुम्हें शक है कि मैं पसन्द न करूंगी ? इस समय मैं जिस अवस्था में हूँ और आगे जो कुछ मेरे साथ होने वाला है उससे तो मर जाना ही मै अच्छा समझती हूँ ।

क्लौडिसा० । (ताज्जुब से लैला की तरफ देख कर) अगर आपका दिल इतना मजबूत है तो जरूर आप अपने को यहां बचा सकेंगी मगर वह तर्कीब क्या है इसके कहने का मौका इस वक्त नहीं है इस वक्त एक बड़े रंज की बात आपको सुनाती हूँ ।

लैला० । वह क्या ! बहुत जल्द कहो !

क्लौडिसा० । अफसोस ! बेचारा मसूर सौदागर इस दुनिया से उठ गया !!

लैला० । (चौंक कर और आंखों मे आंसू भर कर) ऐ ! यह क्या कहती हो ! उसको किसने मारा ?

क्लौडिसा० । यह सब फसाद टोनर का है ।

लैला० । (रो कर) अफसोस ! अगर मै पहिले ही टोनर की बदमाशी खोल देती तो यह दिन क्यों आता !!

क्लौडिसा० इसमें कोई शक नहीं कि टोनर बड़ा बदमाश है !

अलादीन ने उसे मंसूर की लाश के पास गिरफ्तार किया था और सौदा-
गर की मौत के बाद ही तुम्हारे गायब होने का हाल मालूम हुआ। फातमा
को भी यह सब हाल मालूम हुआ और उसने एक चिट्ठी भी इन सब
बातों की अलादीन के पास भेजी मगर उस समय वह घर में न था
तुम्हारी खोज में कहीं गया था, अस्तु वह मुझको साथ ले फौरन तुम्हारे
पीछे रवाना हुई। जब फातमा की चिट्ठी अलादीन को मिली होगी तो
वह जरूर कुस्तुनतुनिया की तरफ रवाने हुआ होगा और जब वह यहां
आवेगा तो बिना तरद्दुद उसकी मुलाकात फातमा से हो जायगी। हां,
अब यह बताओ कि तुम मुस्तफा याकूब के हाथ क्योंकर जा फंसीं ?

लैला०। उसी बदमाश टोंगर की करतूत से मगर कैसे उसने यह
काम किया इसका हाल मुझे कुछ भी नहीं मालूम ! जब मेरी आंख
खुली मैंने अपने को एक गाड़ी में पाया जो बड़ी तेजी से दौड़ी जाती
थी।

लैला ने चाहा कि कलोडिया से पूछे कि तुम लोग किस तर्कीब से
मुझे छुड़ाना चाहती हो मगर उसी वक्त दोनों लौंडियां खाने का सामान
ले कर उस कमरे में आ पहुंचीं जिससे लैला इस बात का जिक्र न कर
सकी।

लैला०। (जोर दे कर) बेशक मैंने ऐसा कहा था और मैं अब तक वैसा ही समझती हूँ।

क्लौडिसा०। तो आपको छूटने के लिये मरना ही पडेगा।

लैला को इस बात से ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगी कि यह क्या कह रही है! मैं मर कर यहा से कैसे बचूंगी! कहीं ऐसा तो नहीं है कि कुछ धोखा हो! क्लोडिसा समझ गई कि मेरी बातो पर लैला को ताज्जुब और शक हो रहा है। उसने अपने जेब से एक पुडिया निकाल कर लैला को दिखलाई और कहा, 'इसमे की बुकनी अगर जरा सी घोल कर किसी को पिला दी जाय तो थोडी ही देर मे उसकी यह हालत हो जायगी कि चालाक से चालाक आदमी भी कह देगा कि मुर्दा है इसके बाद एक दूसरी शीशी निकाल कर उसने कहा, "उसके बाद अगर इसमे एक बूंद भी उसके गले में किसी तरह डाल दी जाय तो वह होश मे आकर फिर ज्यो का त्यो हो जायगा और उसे यह भी न मालूम होगा कि उसे कुछ तकलीफ हुई थी। आप जानती हैं कि फात्मा दवा दारू में कैसी उस्ताद है। और आप यह भी जानती हैं कि फात्मा आपसे किसी तरह दुश्मनी नहीं करेगी। यह दवा उसीने मुझे दी है। फात्मा पर आपको उस वक्त भी शक हुआ था जिस वक्त वह आपको मिरदा की लाश के पास ले गई थी, पर कोई बुराई उसने आपके साथ न की। यहा भी वह आप की मुहब्बत ही के सबब से आपको छुडाने आई है, अगर उसकी नीयत बद होती तो वह यहा क्यों आती? आप यहा बे तरह फंस गई हैं और एक ही दो रोज में आप पर पूरी आफत आने वाली है अर्थात् आप सुल्तान को नजर कर दी जायगी। मेरे इतना कहने पर भी अगर आपको शक न दूर हुआ हो तो लीजिये यह दवा पहिले मैं ही पीती हू। मेरे मुर्दा हो जाने पर आप इस दूसरी शीशी मे की दवा की दो बूंदें मेरे गले में डाल कर मुझे आराम कर दीजियेगा।"

इतना कह कर क्लौडिसा ने उस पुडिया में से थोडी सी दवा

निकाली और एक प्याले में घोलने लगी मगर जैसे ही वह उस दवा को पीना चाहती थी लैला ने उसका हाथ थाम लिया और कहा, "इसके आजमाने की कोई जरूरत नहीं। मुझे तुम दोनों पर बिल्कुल शक नहीं है, जिस तरह मुनासिब समझो मेरी जान बचाओ। (घोली हुई दवा को फेंक कर) बस इस दवा की आजमाईश मेरे ही ऊपर होगी!"

शाम होते होते अपने वादे के मुताबिक तरखाना भी आ पहुँची। लैला ने उसे अपनी समझ क्लौडिसा की तर्कीब का हाल उससे कहा। तरखाना ने सब बातें सुन लैला को मुबारकबाद दी और यह कह कर गले से चिपक गई, "अब तुमसे और मुझसे मुलाकात काहे को होगी, मगर मैं उम्मीद करती हूँ कि यहां से छूट कर अपने वादे के माफिक मेरा हाल मेरे घर तक आप पहुंचा दोगी। मैं भी इस मामले में जहां तक होगा तुम्हारी मदद करूंगी।"

लैला ने तरखाना से वादा किया कि उसकी खबर उसके घर पर जरूर पहुंचा देगी और इसके बाद तरखाना फिर उससे गले गले मिली और लैला से बिदा हुई।

वह रात योंही गुजर गई। दूसरे दिन दोपहर के कुछ पहिले लैला ने उन दोनों लौंडियों को बाहर हटाया और क्लौडिसा से बोली, "लाओ एक जल्द वह दवा मुझे पिलाओ देर मत करो!" क्लौडिसा ने जल्दी से एक प्याले में दवा घोल कर उसके हाथ में दी और लैला ने अपने जी को कड़ा कर बेखौफ वह दवा पी ली।

चौबीसवां बयान

दौड़ी आई तो देखा कि लैला का चेहरा जर्द हो रहा है और वह मुर्दे की तरह मस्नद पर पड़ी हुई है। यह देख दोनों घबड़ा गई। उधर रोते रोते जब कलौडिमा को कुछ होश आई तो वह वहां से उठी और एक गिलास में पानी भर कर लैला के चेहरे पर छींटे मारे। इसके बाद उन छोकड़ियों की तरफ देख कर बोली, "बादशाही हकीमों को जल्द बुलाओ।"

एक छोकड़ी कैसर आगा के पास दौड़ी हुई गई और दूसरी ने यह खबर सुल्तान की मा के पास पहुँचाई। थोड़ी ही देर में महल में हाहाकार मच गया। सुल्तान की मा और तरखाना तथा दो हकीमों को लिये हुए कैसर आगा वगैरह दौड़े हुए उस कमरे में पहुँचे जिसमें लैला बदहवास पड़ी हुई थी और कलौडिमा उसके पास बैठी जार जार रो रही थी।

दोनों हकीम लैला की तरफ झुके और देखने लगे कि नब्ज चलती है या नहीं, मगर नब्ज का कुछ पता न लगा, इसके बाद उन्होंने और भी कई तरह से जांच की जिससे उन्हें निश्चय हो गया कि यह मर गई और इसलिये उन्होंने नाउम्मेदी से अपना सर हिलाया।

यह दोनों हकीम बहुत बूढ़े थे और वास्तव में बहुत आलिम और तजरबेकार भी गिने जाते थे। मगर उनको इसका सबब कुछ मालूम नहीं हो रहा था जिससे एक का मुंह दूसरा देख रहा था और ताज्जुब के साथ सोच रहा था कि लैला के मरने का क्या कारण हो सकता है।

इन दोनों हकीमों में से एक की उम्र बहुत ज्यादे थी। यकायक उसका ध्यान उन शब्दों पर जा पड़ा जिन्हें कह कह कर कलौडिमा रो और चिल्ला रही थी।

हकीम०। ऐ औरत ! खुदा के वास्ते बतला कि तू क्या कह रही है ! मालूम होता है कि लैला के मरने का सबब तू कुछ जानती है।

कलौडिमा०। (घबड़ा कर) मैं क्या कह रही थी ?

हकीम० । अभी अभी तैंने मुस्तफा याकूब का नाम लिया है !!

कलौडिसा० । हां ठीक है, मगर मैंने जो कुछ कहा ठीक कहा है ।

अब सभों का ध्यान कलौडिसा की तरफ चला गया और सब उसकी बात सुनने के लिये उसके पास जमा हो गये ।

हकीम० । हां कहो मुस्तफा याकूब ने क्या किया ?

कलौडिसा० । (सुल्ताना के पैरों पर गिर कर) हुजूर मैं एक अदनी लौंडी हूं, सरकार के सामने बोल नहीं सकती मगर फिर भी यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि यह दिन मुस्तफा याकूब की बदौलत देखना पड़ा । मेरी मालिक लैला को वह दुष्ट बर्देफरोश उसके घर से जबर्दस्ती चुरा लाया था । लाती वक्त उसने उसे ऐसी बेहोशी सुंघाई कि कई पहर के बाद उसे होश आया था, मगर उसका जहरीला असर भीतर बना ही रहा जिसे कोमल कलेजे वाली लैला बर्दाश्त नहीं कर सकी । आखिर उसका यह नतीजा निकला जो आप देख रही हैं । अफसोस ! उस कम्बख्त ने हमारी जड़ बुनियाद खोद डाली ! हुजूर मालिक हैं, उस दुष्ट को इसका बदला जरूर मिलना चाहिये !!"

कलौडिसा ने यह बात इस तरह रो रो कर कही कि सुल्ताना का दिल भर आया और वह कलौडिसा से बोली 'ऐ बांदी ! यह मामला बिना तहकीकात किये दबा न रह जायगा तू घबड़ा नहीं और अपने को काबू में रख ।'"

इस बीच में बैम्बर आगा ने दोनों छोकड़ियों को अलग ले जा कर उनसे भी कलौडिसा के बारे में बहुत कुछ पूछ ताछ की मगर उनकी बातों से भी उसे कोई शक कलौडिसा पर न हो सका बल्कि दोनों लौंडियों ने कलौडिसा की बहुत तारीफ करके कहा कि इसको अपने मालिक से बहुत ही मुहब्बत था और वह भी इसे बहुत मानती थी, बल्कि हम [illegible] पर भी मेहरबानी रखती थी । बैम्बर आगा ने दोनों लौंडियों को [illegible] सुल्ताना की मा से कहा । इसका

इसी समय उस बुड्ढे हकीम ने अपने दूसरे साथी की तरफ देख कर धीरे से कहा, "इस लौंडी की बातचीत से बहुत कुछ भेद खुल गया।"

दूसरा हकीम०। बहुत अच्छा हुआ, नहीं तो हम लोग बड़े तरद्दुद में पडे थे।

सुल्तान की मां०। (दोनों हकीमों की तरफ देख कर) क्या आप लोगों की राय मे यह बेचारी किसी तेज दवा के असर से मरी है?

दोनो हकीमों ने फिर थोडी देर तक लैला की लाश को गौर से जांचा और अपनी अक्लमंदी जताने के लिये आपस मे कुछ इशारा बाजी करते रहे। इसके बाद बुड्ढे हकीम ने सुलतान की मा से कहा "ऐ सुल्ताना! इस बारे मे हम लोगों को कोई शक नहीं रह गया है। इस लौंडी की बात बहुत सच्च मालूम पडती है। बहुत सी दवाएं बेहोश करने वाली ऐसी होती हैं कि अगर बेवकूफ आदमी के हाथ से दी जाय तो जहर कातिल का काम कर जाती हैं और कई ऐसी होती हैं जिसका असर कई दिनों के बाद होता है। इस नाजुक बदन का दिल बहुत कमजोर था, इसीलिये मुस्तफा याकूब की दी हुई बेहोशी की तासीर बर्दाश्त न कर सकी और मर गई।"

हकीम साहब कुछ और भी बातें बताया चाहते थे मगर बीच ही में तरखाना ने सुल्तान की मा की तरफ देख कर कहा "साहली लौंडी क्लोडिया की बात को मैं भी सही समझती हू। मैं लैला से मिली थी, उसने मुस्तफा याकूब की बहुत सी शिकायतें करके मुझसे कहा था कि मालूम होता है मुझे अब बचना नहीं है क्योंकि उसकी दी हुई बेहोशी के जहर का असर मेरे रग रग में घुस गया है।"

सुल्ताना०। इन सब बातों की तरफ खयाल करने से हकीम साहब की बात में कोई शक नहीं रह जाता है, (कैसर आगा की तरफ देख कर) मुस्तफा याकूब को जल्द हाजिर करो।

…आगा मुस्तफा याकूब को लेने चला गया। दोनो हकीम भी

है! कहो।

विदा हुये। तरबाना ने फिर सुल्तान की मा से कहा "बात ही बात में हैला ने मुझसे यह भी कहा था कि मैं ईसाई हूँ अगर मैं मर जाऊं तो मेरे दफन और गाड़ने का इन्तजाम ईसाई तौर पर करा देना। जहां तक मैं समझती हूं इसमें कोई हर्ज नहीं है बल्कि ऐसा करने से नेकनामी ही होगी अतः आपकी मर्जी हो तो मैं उसकी लौंडी कलौडिसा को कह दूं कि अपने मजहब के मुताबिक काम शुरू कर दो।"

सुल्तान की मा ने कुछ गौर के बाद इस बात को कबूल किया और कलौडिसा की तरफ देख कर बोली "इसमें कोई शक नहीं कि तुमको हैला के साथ बहुत ही मुहब्बत थी और हैला भी तुम्हें प्यार करती थी परन्तु अपने जात की रस्म रिवाज के मुताबिक काम करो। मुझे यही अफसोस है कि इतना बड़ा तुहफा मेरे लड़के के हाथ से निकल गया! मगर मैं कहे देती हूं कि मुस्तफा याकूब बिना सजा पाये नहीं बचेगा और तुझको भी तेरी बफादारी का इनाम भी जरूर मिलेगा।" यह कह सुल्ताना दूसरे कमरे में चली गई।

तरबाना ने सुल्तान की मा से यह हुक्म लिया था कि हैला का काम ईसाई तौर पर किया जावे, अस्तु उसने फौरन एक आदमी को ताबूत बनाने वाले के घर भेजा जिसका नाम कलौडिसा ने उसे बतला रक्खा था, और असल तो यह है कि जिसे फातमा ने पहिले ही से रिश्वत दे कर मिला लिया था।

फैसला सुनाने के लिये आ पहुँचे थे। उन्होंने मुस्तफा याकूब का इजहार अच्छी तौर से लिया जिस में मुस्तफा याकूब ने यह बयान किया कि "मेरे हाथ जब लैला बेची गई थी तब मैंने उसे बेहोश पाया था।" मगर इतना सुनने से सुल्तान की मा को यकीन हो गया कि जरूर लैला को बेहोशी की कोई कड़ी दवा दी गई थी।

काजी असगर ने भी फिर और कुछ न पूछा और मुस्तफा याकूब की तरफ देख कर कहा, "तेरी ही बातों से साबित हो जाता है कि लैला कोई जहरीली दवा दे कर बेहोश की गई थी क्या तुझको यह नहीं मालूम कि ऐसा तुहफा महल में लाना मना है जिसको किसी तरह की बीमारी हो, या जिसके बदन में किसी तरह के जहर का असर हो ? बेशक तू इस बात को जानता था और तू ने जान बूझ कर यह बदमाशी की, इसलिये हुक्म दिया जाता है कि तेरी कुल जायदाद जब्त कर ली जाय और तुझे पचास कोड़े लगा कर शहर के बाहर निकाल दिया जाय। आज के बाद अगर तू फिर कभी इस शहर मे दिखलाई दिया तो जरूर फांसी चढ़ा दिया जायगा।"

मुस्तफा याकूब हजार रोया चिल्लाया मगर उसकी एक भी न सुनी गई, उसकी जायदाद जब्त करली गई और महल ही में उसको पचास कोड़े लगवा कर वह शहर के बाहर निकाल दिया गया।

पहर भर दिन बाकी था जब ताबूत बनाने वाले के यहां से ताबूत ले कर चार औरतें महल में हाजिर हुईं, जो आरमेनी ईसाइया थीं नारे मातमी लिबास पहिरे हुए थीं और जिनमें से एक फातमा भी थी। उन्होंने कहा कि हम लोग लैला की लाश नसरानियों की कब्रगाह में ले जाने के लिये आई हैं।

लैला की लाश ताबूत में रक्खी और हिफाजत के साथ फाटक के बाहर लाई गई। वहां एक गाड़ी मौजूद थी उसी गाड़ी में यह ताबूत रक्खा गया और गाड़ी कब्रिस्तान की तरफ रवाना हुई।

मतलब के लायक कब्र पहिले ही से खुदी हुई तैयार थी और पादड़ी के पास भी पहिले ही से आदमी जा चुका था। पादड़ी ने आ कर मामूली रस्म अदा की और लाश कब्र में रख दी गई जिसके बाद सब कोई अपने अपने घर वापस गये।

रात के वक्त जब उस कब्रिस्तान में खूब सन्नाटा हो गया, फात्मा और क्लौडिमा इस कब्रिस्तान में गईं जहां उनको लैला की लाश निकाल कर उस ताबूत बनाने वाले के घर लाने का पूरा मौका मिला जहां पहिले ही से अलादीन भी आकर टिका हुआ था।

पच्चीसवां बयान

लैला जब होश में आई उसने अपने को एक कमरे में कोच के ऊपर लेटी हुई पाया। फात्मा और क्लौडिसा उसके ऊपर झुकी हुई थीं कई घंटे के बाद वह होश में लाई गई थी इसलिये उसके हवास बहुत धीरे धीरे दुरुस्त हुए फिर भी उसे किसी तरह की तकलीफ न थी और उसे ऐसा मालूम हो रहा था कि मानों वह बड़ी गहरी नींद से जाग रही हो थोड़ी देर के बाद उसने पहिचाना कि क्लौडिमा और फात्मा मेरे पास खड़ी हैं। क्लौडिमा के गले में हाथ डाल कर लैला बोली, 'तुम्हारी और फात्मा की बदौलत मेरी जान बच गई!"

थोड़ी ही देर में लैला उठ बैठी और मुहब्बत तथा खुशी भरी हुई बातें फात्मा और क्लौडिमा से करने लगी।

फात्मा० । शाहजादी ! मैं तुम्हें एक खबर सुनाने वाली हूँ जिसको सुन कर तुम बहुत ही खुश होगी।

लैला० । शुक्र है क्योंकि क्लौडिमा ने जो खबर सुनाई थी वह बहुत रंज पहुंचाने वाली थी।

फात्मा० । हां ठीक है आपका मतलब उस नारे मंसूर से होगा!

लैला० । हां वही मंसूर जो तुम्हें उस पहाड़ी में ले गया था।

लैला कुछ और भी कहा चाहती थी मगर यह सोच कर कि घाटी गुलिस्तां का हाल कहीं कलौडिसा को मालूम न हो जाय वह चुप हो रही। वह यह भी सोच रही थी कि मंसूर के मर जाने पर देखा चाहिये अब घाटी गुलिस्तां का हाल और रास्ता मालूम भी होता है या छिपा ही रह जाता है।

फातमा०। अब आपकी तबीयत ठीक हो गई या किसी तरह की तकलीफ बाकी है?

लैला०। अब मैं बहुत अच्छी तरह से हूँ तुम सुनाओ कि वह कौन सी खुशी की बात थी जिसे तुम सुनाने वाली थीं।

फातमा०। वह बात यही है कि अलादीन भी तुम्हारी खोज में यहां आ गए हैं और इसी मकान के दूसरे कमरे में बैठे तुम्हारे मिलने की राह देख रहे हैं।

इस खबर को सुन कर लैला बहुत ही खुश हुई और दौड़ी हुई उस कमरे में गई जिसमें अलादीन था। दोनों खुशी खुशी मिले और रंज अफसोस तथा खुशी भरी हुई बातचीत बहुत देर तक करते रहे। अलादीन ने मंसूर सौदागर के मारे जाने और टोनर के गिरफ्तार होने का हाल कहा और साथ ही उसके यह भी कहा कि जब मैं लौट कर घर पहुंचा तब फातमा की चिट्ठी मुझे मिली जिसमें लिखा हुआ था कि "मुस्तफा याकूब बर्दे फरोश लैला को कुस्तुनतुनिया लिये जाता है मैं छुड़ाने के लिये जाती हूँ। तुम भी जल्द आओ।" यह पढ़ते ही मैं इस तरफ को रवाना हुआ मगर जब मैं बन्दर बातून पहुँचा तब वह जहाज वहां से रवाना हो चुका था जिस पर तुम सवार थीं, इसलिये दूसरे जहाज का बन्दोबस्त कर मुझे यहां आना पड़ा। अफसोस! बेचारे मंसूर को टोनर ने मार डाला, देखा चाहिये उस घाटी गुलिस्तां का हाल कुछ मालूम होता है कि नहीं। मगर मंसूर बहुत ही होशियार और होशियार आदमी था। उसने जरूर इसका कोई बन्दोबस्त किया

लैला कुछ और भी कहा चाहती थी मगर यह सोच कर कि घाटी गुलिस्ता का हाल कहीं क्लौडिमा को मालूम न हो जाय वह चुप हो रही। वह यह भी सोच रही थी कि मसूर के मर जाने पर देखा चाहिये अब घाटी गुलिस्ता का हाल और रास्ता मालूम भी होता है या छिपा ही रह जाता ... न कोई बन्दोबस्त कर दूंगी।

फातमा०। हुजूर मुझे माफ करें, पर मुझे यह मजूर नहीं कि आप मेरा एहसान मानें या मुझे इसका बदला दें। अब मेरी कुछ फिक्र न करें मुझको मेरी मर्जी पर छोड दें क्योंकि इसी गरीबी हालत में रह कर दुनिया में नेकी और नाम पैदा किया चाहती हूँ।

लैला ने बहुत कुछ कहा और समझाया मगर फातमा ने एक न मानी और किसी तरह का इनाम लेने से बिलकुल इन्कार किया बल्कि क्लोडिमा का राह खर्च तक नहीं लिया, हा बहुत जोर देने पर निशानी के लिये एक अंगूठी जो लैला के हाथ में थी ले ली।

लैला०। फातमा! तुम यह बताओ कि तुमको कैसे मालूम हुआ कि मुस्तफा थाकूब मुझे टिफलिस से ले भागा है?

फातमा०। मुझे यह खबर मिल चुकी थी कि वह दुष्ट बर्दफरोश आज कल टिफलिस में है मैं उस सराय को जानती थी जिसमें वह बराबर टिका करता है। जब तुम गायब हुई तो मुझे पहिला शक उसी पर पड़ा। मैं सीधे उस सराय में गई तो पता लगा कि वे लोग कूच कर गये। कुछ रिश्वत चौकीदार को देने से और भी बहुत सा हाल मालूम हुआ। फिर मैंने ज्यादा खोज ढूंढ करनी पसन्द न की और सीधे इस तरफ रवाने हो गई।

कुछ देर तक इधर उधर की बात चीत होती रही, इसके बाद फातमा वहा से उठ कर बाहर चली गई और अलादीन वहा आया। लैला ने यहा से भागने की सब तर्कीब जो फातमा से सुनी थीं अलादीन से कहीं जिन्हें उसने भी बहुत पसन्द किया।

फैली हुई थी। मुस्तफा याकूब ने दूर से एक किश्ती किनारे की तरफ आती देखी, उसने समझा कि शायद मेरा दोस्त कुस्तुनतुनिया से आता हो, मगर पास जाने पर विश्वास हो गया कि नहीं वह अभी नहीं लौटा। तुरन्त ही वह बजड़ा भी वहां पहुंचा जिस पर अलादीन वगैरह थे। मुस्तफा याकूब यह समझ कर कि कोई मेरा दुश्मन इस पर सवार न हो एक चट्टान की आड़ में छिप गया मगर वहीं से किश्ती और बजड़े पर से उतरते हुए मुसाफिरों को देखने लगा। किश्ती पर से लैला तथा क्लौडिया और बजड़े पर से अलादीन तथा उसके साथी उतरे और घाट के ऊपर आये। वहां एक गाड़ी तैयार थी जिस पर लैला और क्लौडिया सवार हुई तथा अलादीन और उसके साथी अपने अपने घोड़ों पर सवार हो गये।

अब लैला को विश्वास हुआ कि उसकी जान बच गई और अब किसी तरह का डर न रहा। उसने गाड़ी का पर्दा उठा कर अलादीन की तरफ देखा, साथ ही मुस्तफा याकूब की नजर जो पास ही छिपा हुआ था उसके चेहरे पर पड़ी जो चांद की तरह पर्दे की आड़ से बाहर निकल आया था।

मुस्तफा याकूब देखते ही घबड़ा गया। उसने चट पहिचान लिया कि यह वही चन्द्रमुखी है जो ईद का तोहफा बन चुकी थी। वह घबड़ा कर सोचने लगा—"है !! वह तो मर गई थी, यहां कैसे आई ! कहीं धोखा तो नहीं हुआ ! नहीं नहीं, मेरी आंखें अभी दुरुस्त हैं, कुछ न कुछ दगाबाजी जरूर हुई है !!"

मुस्तफा याकूब देखता ही रह गया और लैला की गाड़ी तेजी के साथ निकल गई जिसमें दो अनमोल सादनियां जुत रही थीं।

छब्बीसवां बयान

मुस्तफा याकूब के देखते ही देखते लैला निकल गई, उसके सीने पर सांप लोट गया और कुछ बस न चला। पीछा करना चाहे किन्तु बहुत

ही मुश्किल था क्योंकि उसके पास न घोडा था न गाडी और न किराया करने के लिये रुपये ही। वह घबडा कर तरह तरह की बातें विचारने लगा मगर अक्ल ने कुछ गवाही न दी। पहिले उसने इरादा किया कि 'कुस्तुनतुनिया जाकर यह सब हाल कैसर आगा से कहे और उन लोगों को विश्वास दिलावे कि तोहफतुस्सजान मरी नहीं बल्कि सब की आखों में धूल डाल कर निकल गई, मगर ऐसा करने से भी वह डरा और सोचने लगा कि मुझे सब पागल और उल्लू बनावेंगे मेरी बातका कोई विश्वास न करेगा, बल्कि मैं इस जुर्म में गिरफ्तार कर लिया जाऊंगा कि सरकारी हुक्म न मान कर फिर कुस्तुनतुनिया क्यों पहुँचा।

मुस्तफा यावर खडा खडा इन्हीं बातों को सोच रहा था कि एक किश्ती घाट पर पहुँची जिस पर अपने दोस्त को देख वह लपका हुआ किनारे गया और बोला, 'किश्ती रोके रखना।"

उसका दोस्त बोला, "तुम्हारी अर्जी पर किसी ने कुछ खयाल न किया। यह मुकद्दमा सुल्तान की सभा का फैसला किया हुआ है अतः इसके बारे में कोई कुछ कर नहीं सकता। इस पर ज्यादा जोर देना पागलपन होगा।"

यहा कोई खास काम न था पर वह बुद्धिमान थी, दुनिया के ऊंच नीच को बहुत अच्छी तरह समझती थी। यकायक किसी तरह की भूल उससे न होती थी। लैला के बचाने की कारवाई उसने बहुत अक्लमन्दी से की थी तो भी उसको इस बात का शक था कि कहीं ऐसा न हो कि यह मामला खुल जाय और ताबूत बनाने वाले के सिर आफत आवे। जब उसने हमारे साथ नेकी की है तब उसको भी हर आफत से बचाना हमारा धर्म है। इन्हीं सब बातों को सोच कर उसने इरादा कर लिया था कि जब तक लैला के भागने का मामला बिल्कुल ठंडा न हो जाय तब तक कुस्तुनतुनिया से न जाना चाहिये।

तरह तरह की बातें सोच फातमा अपनी मामूली पोशाक पहिन मुंह पर नकाब डाल अपनी दवाओं का सन्दूक ले शहर में घूमने लगी। वह महल के आस ही पास घूम रही थी और बड़ी सावधानी के साथ चारों तरफ देखती हुई यह भी सोचती जाती थी कि कोई बात ऐसी तो नहीं होती जिससे हमारे मामले से सम्बन्ध हो।

मगर कोई बात नई फातमा ने नहीं देखी और महल के कुछ देर चारों तरफ घूम वह लौट कर अपने घर जाने लगी। यकायक उसकी निगाह एक ऐसे आदमी पर जा पड़ी जो बड़ी घबराहट के साथ दौड़ता हुआ महल की तरफ जा रहा था। उसने तुरत पहिचान लिया कि यह मुस्तफा याकूब है। वह सोचने लगी कि इसकी तो जायदाद जब्त करके यह शहर के बाहर निकाल दिया गया था अब यह फिर यहां क्या आया है! जरूर यह फिर इसका आना बेसबब नहीं है। कुछ न कुछ दाल में काला जरूर है। फातमा थक गई और देखने लगी कि यह कहां जाता है। इसी समय एक सिपाही जो फाटक पर टांग फैलाए पड़ा था मुस्तफा याकूब को पहचान कर उठ खड़ा हुआ और बोला 'देखो देखो, यह वही हरामजादा फिर आया जिसके लिये महल से शहर बदर का हुक्म हुआ था।"

दूसरा सिपाही०। लेकिन क्या यह सोचता हैं कि हम लोगों की आखों में धूल डाल कर बच जायगा? पहिली दफे तो सिर्फ बेंत ही खाकर बच गया था मगर अबकी तो इसकी गर्दन पर जल्लाद के हाथ की प्यासी तलवार पड़ कर जरूर इसका खून चाटेगी।

मुस्तफा याकूब इनकी बातें सुन कर बोला, "मैं तुम लोगों की आखों में खाक झोंकने नहीं आया बल्कि यह साबित करने आया हू कि तुम लोगों की आखों में पहिले ही धूल डाली जा चुकी है और हम लोग भख मार चुके हैं। एक अदना आदमी धोखा देकर हम लोगों को उल्लू बना गया। मैं तो बर्बाद हो ही गया और मुझ पर यह झूठा दोष लगाया गया कि लैला सुंघाई हुई बेहोशी की दवा से मर गई। मगर मैं कसम खा कर कह सकता हूं कि वह अभी तक जीती है।

पहिला सिपाही०। (बर्देफरोश को पकड़ कर) अबे झूठे! तू किस मुंह से कहता है कि लैला जीती है? क्या हम लोगों को बेवकूफ बनाना चाहता है?

मुस्तफा०। अजी मैं अपनी आखों से देख आया हूँ कि लैला जीती है, मैं किस तरह मान सकता हूं कि वह मर गई!!

मुस्तफा याकूब अपनी बात कह कह कर चिल्लाने लगा, यहां तक कि इसके चारों तरफ भीड़ लग गई आखिर एक सिपाही बोला, "यह मामला संगीन मालूम होता है इसको कैसर आगा के पास ले चलना चाहिये।"

फातमा ने उसे बहुत कुछ दम दिलासा दिया और समझा कर कहा कि तुम्हारा जो कुछ नुकसान होगा उसे मैं पूरा करे देती हूँ यह कह उसने अपना दवा वाला सन्दूकचा खोला और उसकी पेंदी में से बहुत से हीरे और जवाहिरात निकाल कर उसे दिये इसके बाद उसको भेष बदल कर भाग जाने की ताकीद की। वह भी तुरत अपने लड़कों बालों सहित घर से निकल यूनान की तरफ भाग गया।

अब फातमा ने सोचा कि जिस काम के लिये मै यहां रही थी वह तो पूरा हो गया अब मुझे भी यहां से चल देना चाहिये। उसने अपना भेस बदला, दवा के सन्दूकचे मे जो कुछ जमा पूंजी थी निकाल अपने कमर में रक्खा, और उस सन्दूकचे को वहीं छोड घर से बाहर निकली। मगर अभी चौकठ के बाहर पैर नहीं रक्खा था कि बहुत से बादशाही सिपाहियों ने आकर उसे गिरफ्तार कर लिया। वह लाख चिल्लाती रही कि मै परदेसी हूँ मुझसे क्या कसूर हुआ जो मुझे पकड रहे हो, किसी ने उनकी कुछ न सुनी और बहुत से आदमी ताबूत बनाने वाले के पीछे दौडे गये मगर उसका कहीं पता न लगा। मकान के अन्दर तलाशी लेने से मकान खाली मिला मगर वह दवा का सन्दूकचा जिसे फातमा छोड आई थी जरूर मिला जिसे उन लोगों ने उठा लिया।

फातमा नकाब डाले हुए थी मगर जब गिरफ्तार कर ली गई तब सरकारी आदमियों ने उसके चेहरे से नकाब उतार ली। अब वह साफ पहिचान ली गई कि महल मे लैला का ताबूत उठाने वालों में से एक यह भी थी। सरकारी आदमियों को इस बात की खुशी हुई कि मुजरिमों में से कम से कम एक आदमी का तो उन्होंने गिरफ्तार किया

यह सब कार्रवाई कैसर आगा के हुक्म से की गई थी जिसके पास फरियादी मुस्तफा याकूब को पहरे वालों ने पहुँचा दिया था। मुस्तफा याकूब की बात पर उसे विश्वास हो गया और उसने सुलतान की मां के पास पहुँच कर सब हाल बयान किया। पहिले तो उनको इस पर विश्वास

न हुआ क्योंकि उनके सामने ही लैला की लाश को हकीमों ने बहुत अच्छी तरह देखा भाला था मगर जब उन्हें यह खबर पहुची की ताबूत बनाने वाला भाग गया और उसके मकान से सिर्फ एक मुजरिम गिर-फ्तार हुआ है तब उन्हें ताज्जुब हुआ और फात्मा को अपने सामने हाजिर करने का हुक्म दिया। इतने ही में यह भी खबर पहुँची कि जिस कब्र में लैला गाडी गई थी वह खोदी हुई और खाली देखने में आई। इससे ज्यादे सबूत की जरूरत न पडी और साबित हो गया कि लैला के बारे में पूरा पूरा जाल किया गया।

फात्मा दवा के सन्दूकचे समेत महल के अन्दर पहुँचाई गई। वे दोनों हकीम भी बुलाये गए और वह दवा का सन्दूकचा उनके सामने इसलिये रख दिया गया कि दवाओं को पहिचानें और तासीर बयान करें। दोनों ने दवाओं की बहुत कुछ जाँच की मगर सिवाय इसके और कुछ न कह सके कि इनमें बहुत सी दवा फोडे फुन्सी की और कुछ ताकत की है तथा बहुत काम धातु की और ज्यादातर काष्ट औषधियों से बनी हुई है।

शहर में धूम मच गई कि लैला अभी तक जीती है। हकीमों ने भी इस बात को सुना मगर सिवाय ताज्जुब और अफसोस के और क्या कर सकते थे। हाँ इस बात की शर्म जरूर थी कि उस वक्त लाश को देख कर कुछ पहिचान न सके।

फात्मा० । जब पूरे पूरे सबूत मिल ही चुके है तो फिर मै कह ही क्या सकती हूँ।

सुल्ताना० । तब तू मजूर करती है कि यह तेरा ही किया हुआ है?

फात्मा० । बेशक मै करती हू ! मुझे इससे बिल्कुल इन्कार नहीं ! जब लैला को यहा से छुडाने का मैं बीड़ा ही उठा चुकी थी तब उसका नतीजा भोगने के लिये भी तैयार हूँ और झूठ बोलना नहीं चाहती।

सुल्ताना० । अच्छा तो यह बता कि किस तरह तूने लैला को मुर्दा बना दिया और क्यो उसकी ऐसी हालत हो गई कि अच्छे अच्छे हकीम भी पहिचान न सके?

फात्मा० । अगर हुजूर यह बात सिर्फ ताज्जुब मिटाने के लिये पूछती हैं तो रहने दीजिये, हा अगर यह मजूर हो कि इससे बादशाहत मे इल्म और हुनर की तरक्की की जाय और हकीमों को फायदा पहुँचे तो मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ।

सुल्तान की मा आखिर औरत ही थी, उनको इस बात के सुनने का बहुत ही शौक हुआ मगर फिर भी हाकिमाना तौर से बोलीं, "यह बात मै तुमसे इसलिये पूछती हूँ कि जिसमें इल्म हिक्मत को फायदा पहुँचे।"

फात्मा० । आप कैसे समझती हैं कि इससे इल्म हिक्मत को फायदा पहुँचेगा?

सुल्ताना० । जो दवा ऐसी बेहोशी को आराम कर सकती है वह जरूर बड़ी बड़ी बीमारियों को भी फायदा पहुचा सकती है।

फात्मा० । बेशक ऐसा ही है। हुजूर ने सुना होगा कि तीन वर्ष पहिले कुस्तुनतुनिया में एक वबा फैली थी और उस वक्त एक मशहूर हकीम अहमद असलम ने उसका बहुत अद्भुत इलाज किया था।

सुल्ताना० । हा, मैने उस हकीम का नाम सुना है और यह भी सुना है कि उस वक्त वबा के जोर से ही बहुतों की मुर्दों की सी हालत

हो जाती थी, मगर वह हकीम अपनी दवा की ताकत से सहजही में उन्हें चंगा कर देता था। तो क्या उस दवा से और इस दवा से कुछ सम्बन्ध है?

फात्मा०। जी हां, और मैं उसी हकीम अहमद अर्सला की बेटी हूं।

सुल्ताना०। तो ऐसी दवाओं से तू फायदा क्यों नहीं उठाती और सिर्फ थोड़ी सी लालच के लिये क्यों तूने लैला के साथ ऐसा काम किया?

फात्मा०। यह तो मैं नहीं कह सकती कि लैला के साथ ऐसा काम क्यों किया मगर यह विश्वास जरूर दिला सकती हूँ कि यह काम मैंने लालच से नहीं किया है और न इसके लिये किसी से एक पैसा लिया है। मैं दौलत पैदा करना नहीं चाहती मैं एक गरीब बेवा औरत हूँ, मैं सिर्फ रोटी खाकर अपनी जिन्दगी बिताया चाहती हूँ, दौलत पैदा कर के मैं करूंगी क्या और किसके लिये क्या छोड़ जाऊंगी? अगर कोई मेरा हो भी तो मैं किस उम्मीद पर उसके लिये दौलत छोड़ जाऊंगी तथा मुझे कौन विश्वास दिलावेगा कि तेरी औलाद नालायक नहीं निकलेगी और जान लगाकर इकट्ठी की हुई दौलत बुरे कामों में खर्च करके बुजुर्गों के नाम में धब्बा न लगावेगी। खुदा का शुक्र है कि मेरे आगे कोई भी नहीं है और न मुझे अपना नाम चलाने की फिक्र है कि पीछे जिसे दूसरा मिट्टी में मिलादे।

सुल्ताना० । (कुछ सोच कर) अगर मैं तेरी जान छोड भी दूं तो तुझे जिन्दगी भर आजादी नहीं मिल सकती ।

फातमा० । बिना आजादी के जिन्दगी दो कौडी की है ।

सुल्ताना० । (ताज्जुब से) तू अजीब किस्म की औरत है ! और अगर तेरी बात मान भी ली जाय तो तू इस बात का क्या सबूत देगी कि तू अपनी दवा का भेद सच्चा सच्चा बता रही है ?

फातमा० । सिवाय इसके और मैं क्या कर सकती हूँ कि दूसरे के हाथ से दवा बनवा कर आजमाइश करा दूं । आपके हकीमों के सामने आप ही के बाग में जडी बूटी तोडकर मैं लाऊंगी और आप ही के हकीमों के हाथ से दवा बनवाऊंगी, अगर उसमें फर्क निकले तो बेशक मुझे फांसी दे दी जाय ।

सुल्ताना० । क्या तू इस बात का वादा करती है ? अपनी तरफ से मैं यह कहने को तैयार हूँ कि अगर तेरी दवा ठीक निकली तो बेशक तू आजाद कर दी जायगी ।

फातमा० । तो मैं भी अपने वादे पर मुस्तैद हूँ ।

सुल्तान की मा ने कैफर आगा को इशारा किया और वह फातमा को दूसरे मकान में ले गया । जब वह लौट कर आया तब उसको मार्किन बर्देक्लोश को यह हुक्म पहुँचा दिया गया कि उसका कसूर माफ हुआ तथा उसकी जायदाद वापस कर दी गई ।

तुहफए रमजान के लिये दूसरी औरत पसन्द करके वह रसम पूरी कर दी गई ।

सत्ताईसवां बयान

अब हम उन भागने वालों की तरफ लौटते हैं जिनको हमने सकातरी से रवाना करके छोड दिया था । मुस्तफा याकूब को उन लोगों ने बिल्कुल नहीं देखा और लैला के तो ख्याल में भी यह बात न आई कि उसका

गाड़ी ने झुक कर अलादीन की तरफ देखना इतना बड़ा फसाद गोड़ों करेगा। वह बिल्कुल बेखौफ जा रही थी और जाहिर में कलौडिसा भी खुश मालूम होती थी जिसे लैला ने अब अपने दोस्त के बराबर मान लिया था लौंडी होने का ध्यान भी न लाती थी क्योंकि फात्मा कह चुकी थी कि यह लौंडी नहीं बल्कि मेरी दिली दोस्त है। इसके सिवाय कलौ-डिसा हाव भाव बातचीत आदि से भी किसी शरीफ खानदान की मालूम होती थी मगर यह जरूर था कि बातचीत करते करते कभी कभी कलौडिसा की आवाज लैला के कान में खटक जाती थी और उसके दिल में एक अजीब असर पैदा होता था।

रात साफ थी तारे आस्मान पर छिटके हुए थे जिनकी रोशनी से सड़क साफ दिखलाई देती थी और गाड़ी बड़ी तेजी के साथ जा रही थी। यह सड़क गुर्जिस्तान जाने के लिये सब से सीधी थी जो कुस्तु-न्तुनिया से सात सौ मील के फासले पर था। अलादीन और उसके दोनों साथी भी बहुत खुश खुश जा रहे थे और लैला को बचा के ले जाने की इन्हें बड़ी खुशी थी क्योंकि अलादीन ने मसूर सौदागर से मिलने के बाद अपना बहुत कुछ हाल अपने दोनों साथियों से कह दिया था।

ने कहा, "बहुत दूर पीछे कुछ सवार दिखलाई पडते हैं, मालूम होता है कि वे लोग हमारा पीछा किये चले आते हैं।"

इला०। ठीक है, और देखिये अभी मालूम हुआ जाता है कि कितने हैं। अगर इतने हों कि एक के मुकाबले में दो पडें तो कोई हर्ज नहीं, हम लोग उनकी खूब खातिरदारी भी करेंगे।

हाफिज०। खुदा की कसम जब तक जान में जान है शाहजादी और कलौटिसा की तरफ किसी को निगाह उठा कर भी न देखने देंगे॥

अला०। शाबाश! मगर चुप रहो, शाहजादी और कलौटिसा सुनने न पावें, गाडीवाला भी हम लोगों की तरफ देख रहा है, मालूम होता है उसे भी कुछ शक हो गया है।

अलादीन ने गाडीवान को इशारा किया कि गाडी तेज चलाये जाओ, इसके बाद पीछे फिर कर देखा और बोला 'ओफ ओ! यह तो बहुत से आदमी नजर आते हैं कम से कम बीस होंगे, और ये सिपाहे के सवार मालूम पडते हैं, देखो उनके हथियार धूप में कैसे चमक रहे हैं!!"

हाफिज०। खैर जो भी हो यह कहिये कि अब क्या किया जायगा?

अला०। हमारे घोडे तो बेशक निकल जा सकते हैं मगर गाडी नहीं बच सकती और ये पीछा करने वाले बीस से कम नहीं हैं इसलिये उनका मुकाबला करना भी पागलपन होगा, इससे बेहतर यही होगा कि गाडी छोड दी जाय। मैं शाहजादी को अपने घोडे पर चढा लेता हूं और हाफिज! तुम कलौटिसा को सवार करलो, फिर अपने घोडों की तेजी पर भरोसा करो और अपने को खुदा की मेहरबानी पर छोड दो!

आखिर यही राय ठीक ठहरी और गाडी रोकने के लिये हुक्म दिया गया। इलादीन ने कुछ अशर्फियें गाडीवान को दे कर कहा, "अब तुम्हारी जरूरत नहीं, क्योंकि पीछा करने वाले पास आ पहुंचे मगर तुम को कोई नुकसान न पहुंचेगा क्योंकि तुम्हारा तो पेशा यही है।"

इसके बाद अलादीन ने लैला और कलौटिसा से कहा, 'अब तुम

लोग भी दिलेर बन बैठे और गाड़ी से उतर हम लोगों के साथ घोड़ों पर सवार हो लो, क्योंकि पीछा करने वाले बहुत पास आ गए हैं।"

शाहजादी और कलौंडिसा गाड़ी से उतर पड़ीं। अलादीन ने लैला को अपने घोड़े पर सवार करा लिया तथा हाफिज ने कलौंडिसा को, और तीनों तेजी के साथ वहां से रवाना हुए। गाड़ी वाला हक्का बक्का देखता ही रह गया और ये लोग उसकी आखों से गायब हो गए।

अलादीन का घोड़ा बहुत तेज था इसलिये वह अपने साथियों से आगे निकल गया। मगर अपने साथियों के पीछे रह जाने पर भी अलादीन ने अपने घोड़े की चाल कम न की क्योंकि उसे हर तरह से शाहजादी को बचाना था। यह बात कोई उसकी खुदगर्जी के सबब से न थी, अगर वह अपने घोड़े की चाल कम ही करता तो उसके साथियों को क्या फायदा पहुंचता? नतीजा यह होता कि उनके साथ लैला भी बर्बाद हो जाती जिसके लिये इतनी कोशिश की गई थी।

का मौका कहीं से भी न मिला। इसी समय कोई आवाज अलादीन के कान में पहुँची। पीछे मुड़ कर देखा तो चार तुर्की सवार पीछा किये चले आते हैं बल्कि पास पहुँचा चाहते हैं। अलादीन को अब घोड़ा दौड़ाने की जगह न थी इसलिये लाचार हो गया और समझ लिया कि अब मेरी और लैला की जान जाने में कोई शक नहीं। इतने ही में बन्दूक की आवाज आई और एक गोली सनसनाती हुई अलादीन के पैर के पास से निकल गई। लैला ने समझा कि पीछा करने वाले सिर पर आ पहुँचे उसने पुकार कर कहा "प्यारे अलादीन! अफसोस!! तुम मेरे लिये [illegible] जान दे रहे हो, मुझको छोड़ दो और गोली का निशाना बनने दो जिसमें यह मामला यहां ही तै हो जाय और बखेड़ा निपटे।"

अलादीन ने ढाढ़स देकर कहा, "प्यारी लैला! डरो मत और मुझसे खूब चिमट जाओ, देखो मैं एक आखिरी हौसला और करता हूं। या तो बच ही जायगे या दोनों आदमी लिपटे हुए मौत के मुंह में पड़ेंगे।"

पीछा करने वाले बराबर गोली चला रहे थे मगर बन्दूक का मुंह कुछ नीचा करके, क्योंकि वे चाहते थे कि घोड़े को गोली लगे और वह गिर पड़े फिर अलादीन को गिरफ्तार करना कोई बड़ी बात न रहेगी। अला-दीन भी नाले के किनारे किनारे घोड़े को दौड़ाये जाता था। आखिर एक जगह नाला कुछ कम [illegible] के उसने घोड़े को एक चक्कर दिया और घुमा कर तेजी के साथ एड़ लगा नाले के पार हो गया।

पीछा करने वालों ने भी घोड़े का कुदाना देख लिया और यह उनके लिये अच्छा ही हुआ नहीं तो बेशक ये लोग नाले के अन्दर जा रहते। नाले की गहराई देख वे डर गए और घोड़ा कुदाने का हौसला न किया, मगर नाले के किनारे किनारे यह सोच कर जाने लगे कि कहीं से रास्ता मिले तो पार उतर जावें। बहुत दूर [illegible] नाला दूसरा [illegible] सामने की तरफ दिखाई पड़ा। [illegible] बीच में वह [illegible] निकल गई थी। [illegible]

इसके अन्दर ही अन्दर जाने लगे कि कहीं इस नाले का अन्त हो या रास्ता मिले तो पार उतर कर दूसरी तरफ पहुँच। भागने वालों पर हमला करें मगर इसमें उनका घण्टे भर का वक्त बर्बाद हो गया। तब तक अलादीन बहुत दूर निकल गया और बीस मील जा कर एक कसबे में पहुँचा जहा इब्राहीम और हाफिज भी क्लौडिसा को लिये हुए दूसरी तरफ से पहुँचे थे और जिन्हें देख ये दोनों बहुत ही खुश हुए।

ये लोग उस कसबे में थोडी देर तक अटके रहे। इसी बीच में घोडों ने कुछ आराम कर लिया और यहा लैला और क्लौडिसा के लिये भी दो घोडे खरीदे गये जिन पर वे दोनों बहुत दिलावरी के साथ सवार हो गईं फिर सफर शुरू हुआ और इस दफे बहुत थोडे अर्से में सौ मील तै करके ये लोग गुर्जिस्तान की सरहद पर पहुँच गये, अब इन्हें विश्वास हुआ कि ये लोग बखूबी बच गये।

हमारे मुसाफिरों ने पूरे दो रोज तक एक गांव में आराम किया। लैला को तरखाना का वादा नहीं भूला था और उसकी मां बहिनों को उसका सदेसा पहुँचाना जरूर समझा वह उस गाव से रवाना हो कुछ [illegible] में पहुँची जहा तरखाना की मा रहती थी। उसको तरखाना का सदेसा दिया और जिस तरह वह वहां रहती थी उसका सब हाल कहा। आयशा का हाल पा कर उसकी मा और बहिनें बहुत [illegible] और दिनोंदिन पहिले के उनका गम बहुत कुछ कम हो गया।

अट्ठाइसवां बयान

सब लोग चौंक कर रुक गये और हमारे मुसाफिरों ने देखा कि एक लटकती हुई रस्सी के सहारे एक कैदी जेलखाने से निकल रहा है।

हाफिज०। न मालूम पहरे वाले क्या कर रहे हैं जो इसको निकल भागने का मौका मिल गया!

अला०। देखो वह रस्सी की पूरी लम्बान तक फिसल आया मगर अफसोस रस्सी छोटी है इसलिये उसको जान पर खेलना पड़ेगा। नहीं नहीं, उसने अपना पैर बगल के मकान की छत पर रख दिया और रस्सी छोड़ दी! लो वह कूद पड़ा!

इब्रा०। मगर अभी उसको बहुत काम करना है, अभी वह इस लम्बी चौड़ी खाई के पार हो जाय तब जानें कि उसकी जान बच गई।

अला०। (कुछ गौर करके) ताज्जुब नहीं कि यह टोनर हो, क्योंकि यह लम्बा और दुबला उसी तरह पर है। अहा! यह जरूर टोनर है इसमें कुछ भी शक नहीं।

इब्रा०। अफसोस! मसूर का मारने वाला इन्साफ के पन्जे से छूटा जाता है! ऐसा न होना चाहिये।

अला०। हाफिज! तुम फाटक की तरफ जाओ और गारद वालों को इत्तला दो क्योंकि एक तो भागते कैदी को देख कर उसकी इत्तला न देना यह जुर्म है दूसरे हमारे दोस्त मसूर को मारने वाला इस तरह हमारी आंखों के सामने से निकल जाय, यह भी कब हो सकता है?

हाफिज अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ चला गया और सब लोग उसी जगह खड़े रहे।

ठीक है वह टोनर ही था जो अपने भागने के उद्योग में जान पर खेल रहा था, वह अपने कई दोस्तों के भरोसे पर भाग रहा था जिन्होंने वहां के पहरे वालों को मिला लिया था और उनसे यह बात कह दी थी।

कि जब टोनर मकान से निकल खाई के पार होने लगे तो पानी की खड़बड़ सुन कर गोली चलावें मगर इस तरह पर कि टोनर को लगने न पावे और पहरेवालों पर भी कोई शक न करे।

टोनर जब खाई में कूदा उसी वक्त एक आदमी की गुस्से भरी आवाज उसके कान में पहुँची। यह आदमी गारद के सिपाहियों का अफसर था जो अकस्मात चक्कर देता हुआ वहां आ पहुँचा था। टोनर उसकी आवाज सुन एक दफे तो घबड़ा गया मगर उसने अपना इरादा न तोड़ा और खन्दक के पार चला। वह रूसी अफसर चिल्ला उठा और उसने टोनर की तरफ बन्दूक कर के गोली मारी मगर वह गोली टोनर को न लगी।

बन्दूक की आवाज सुन कर उन दोनों सन्त्रियों ने भी जो टोनर की तरफ मिले हुए थे और उस समय पहरे पर थे गोली चलानी शुरू की मगर टोनर को बचाते हुए। जल्दी जल्दी हाथ पाव मारता हुआ टोनर दूसरे किनारे पर पहुँच गया और धुस के पार हो जाने के लिये दौड़ा मगर अफसोस, उसका पैर एक दरख्त की खुट्टी में ऐसा फंसा कि वह मुँह के बल गिर पड़ा, तब तक वह अफसर भी खाई पार होके उसके पास पहुँचा।

घोड़ों पर सवार खड़े थे। उन में से एक आदमी एक तीसरे [illegible] घोड़े की बाग पकड़े हुए था। ये दोनों कैरीफ़रामा और जमशेद थे। टोनर उचक कर इस घोड़े की पीठ पर सवार हो गया और कैरीफ़रामा तथा जमशेद के साथ भागा।

अलादीन वगैरह दूर से यह सब तमाशा देख रहे थे, जब उन्होंने देखा कि टोनर जान बचा कर निकला चाहता है तब लैला और [illegible] को उसी जगह छोड़ अलादीन और इब्राहीम ने टोनर के पीछे घोड़ा दौड़ाया।

कैरीफ़रामा जमशेद और टोनर भागे जाते थे, अलादीन और इब्राहीम उनके पीछे घोड़ा फेंके जा रहे थे। कैरीफ़रामा ने अभी अलादीन को नहीं देखा था मगर टोनर ने अपने पीछा करने वाले को घूम कर देखा और चिल्ला कर कहा, "अरे यह तो अलादीन है!!"

अलादीन का नाम सुनते ही कैरीफ़रामा खुश हो गया यह ख्याल कर कि अलादीन ही की बदौलत वह इस दुर्दिन को पहुँचा है और अब इससे अपना बदला लेने का अच्छा मौका मिला है वह अलादीन की तरफ़ फिरा।

कैरीफ़रामा ने अपनी राइफ़ल सम्हाली जो उसके कमर से लटक रही थी और अलादीन की तरफ़ निशाना बांधा। मगर अलादीन ने अपने को उस निशाने से बचा लिया और अपनी कमर से पिस्तौल निकाल कर उस पर गोली चलाई जो कैरीफ़रामा के घोड़े को लगी जिससे वह अपने सवार को लिये हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। उधर इब्राहीम ने जमशेद पर पिस्तौल का वार किया मगर निशाना न लगा।

पाठक जानते ही हैं कि टोनर [illegible] था [illegible] भी उसको सिवाय भागने के दूसरी [illegible] न थी और वह अपने [illegible] को फिर छोड़ बराबर घोड़ा फेंके निकला जाता था।

जमशेद अपने मालिक कैरीफ़रामा को मदद देने के लिये [illegible]

रना मगर उसका घोडा उसके अख्तियार से बाहर हो गया था और देखतेही उसी तरफ भागा जिधर टोनर गया था ।

अलादीन या इब्राहीम को क्या मालूम था कि यही कैरीकरामा है, वे तो टोनर की धुन में थे, अस्तु जमीन पर गिरे हुए कैरीकरामा को उसी तरह छोड उन दोनों ने टोनर का पीछा किया ।

यह सब तमाशा लैला और क्लोटिल्डा पहाडी पर खडी देख रही थीं उन्होंने देखा कि तीन आदमी घोडा फेंके चले जाते हैं जिसका पीछा अलादीन और इब्राहीम कर रहे हैं । थोडी ही देर के बाद आपुस में गोली चली और बन्दूक के धूंएं ने सभों को छिपा लिया । जब धूआ साफ हुआ तब चार आदमी घोडा फेंके जाते हुए दिखलाई पडे । इससे मालूम हुआ कि एक आदमी गिर गया, मगर वह आदमी कौन था जो जख्मी हो कर गिरा ? यह जानने के लिये लैला की तबीयत बहुत ही घबराई और क्लोटिल्डा को साथ ले कर उस तरफ चली जहां लडाई हुई थी । वहां पहुंची तो देखा क्या कि एक आदमी अपने घोडे सहित गिरा हुआ है और उसकी दाहिनी रान घोडे के नीचे दबी हुई है । यह नहीं मालूम होता था कि वह बेहोश है या घोडे की तरह बेदम हो गया है । पहिले तो लैला घबडाई, मगर जब सूरत देखी तो निश्चय हुआ कि यह हमारा प्यारा अलादीन नहीं है ।

चान कर उसका नाम लिया तो लैला को विश्वास हो गया कि यह वही डाकू कैरीकरामा है जो इनके साथ कई बार शैतानी कर चुका है।

क्लोडिया थोडी देर तक गौर से उसकी सूरत देखती रही, इसके बाद बोली, "यह अभी जीता है क्योंकि सांस चल रही है।" फिर तमाम बदन पर हाथ फेरा और कहीं खून न देख कर बोली, "मगर यह जख्मी भी तो नहीं है।" उधर बेहोश कैरीकरामा को देख कर लैला भी घबडा गई और उसकी अवस्था उस आदमी की सी हो गई जो मरे हुए सांप के सामने भी यह सोच कर नहीं जाता कि कहीं वह जीता न हो। लैला यही डर रही थी कि कहीं यह जिन्दा न हो और मुझे तकलीफ न पहुँचाये।

क्लो०। मेरी प्यारी शाहजादी! इसकी एक रान घोडे के नीचे दबी हुई है, इसके निकालने में मदद दो। तुम जानती हो कि कोई आदमी चाहे कैसा ही बदकार क्यों न हो मगर हम लोगों को . . .

लैला क्लोडिया का मतलब समझ गई और तुरत बोली, "नहीं नहीं मैं इसकी मदद जरूर करूंगी, मुसीबत में पडे हुए आदमी का न बचाना किसी बडे ही बेदर्द का काम है।"

लैला और क्लोडिया ने जब उस गिरे हुए डाकू की रान को घोडे के नीचे से निकाला तो वह बड़े जोर से कहरा। क्लोडिया ने उस रान पर हाथ फेरा जो घोडे के नीचे दबी हुई थी और इसके बाद जोर से दबा कर देखा कि कोई हड्डी तो नहीं टूट गई है। फिर धीरे से उस टांग को बैठाया जिससे वह कहरा। क्लोडिया को विश्वास हो गया कि इसकी टांग टूटी नहीं है मगर हां, दर्द बहुत है। कैरीकरामा की आंखें बिल्कुल बन्द थीं और वह नहीं जानता था कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा है।

इसी समय एक आते हुए घोडे के टापों की आवाज शाहजादी और

करोलिना के कानों में पहुँची। अन्धेरा छाये चला आता था तौ भी इन दोनों ने दूर ही से पहिचान लिया कि यह हाफिज है।

हाफिज किले के दर्वाजे पर के अफसरों को टोनर के भागने की कैफियत सुनाने गया था। वह उस समय किले के दरवाजे पर पहुँचा ही था जब बन्दूक के पहिले फैर की आवाज हवा में गूंज रही थी। टोनर के भाग जाने की खबर सुना कर लौटा और उस पहाड़ी की तरफ गया तो वहां इन लोगों को न पा कर इधर उधर ढूंढने लगा था। करोलिना उसको आता देखते ही धीमी और विनय मिली हुई आवाज में बोली, 'प्यारी शाहजादी! चुप रहो, और कैरीकरामा का नाम होठों से न निकालो क्योंकि हाफिज इसे नहीं पहिचानता है ... ..

लैला ने जवाब दिया 'नहीं जान बूझ कर मैं इसे कभी दुःख न पहुंचाऊंगी।' क्योंकि लैला अपने उस वादे को नहीं भूली थी जो उसने करोलिना के साथ किया था। हाफिज अपने घोड़े से उतर पड़ा और बोला, "हुजूर! यह क्या है? और करोलिना ने. . .. .."

करो०। (जल्दी से) यहां तुम्हारी जरूरत नहीं है, तुम्हारा मालिक शाहजादा और तुम्हारा दोस्त इब्राहीम टोनर के पीछे गये हैं, टोनर के साथ और लोग भी हैं जो जान पर खेले हुए हैं। कोई लड़ाई भी हुई कि नहीं मालूम नहीं।

तीसवां बयान

कलोडिसा के हाव भाव से मालूम होता था कि वह कैरीकरामा को ... में ले जाने के लिये कोई निराली जगह ढूंढ रही है। जैसे ही लैला ... लेने के लिये गई वैसे ही कलोंडिसा ने खूब जोर करके बेहोश ... करामा को अपने घोड़े पर लादा और उसी पर आप भी सवार हो ... से सिवा दूसरी तरफ चली गई। थोड़ी ही देर बाद वह एक छोटी सी घाटी में पहुंची जहां साफ पानी का एक चश्मा भी बह रहा था। वहां पहुंच कर घोड़े से नीचे उतरी, बेहोश कैरीकरामा को भी उतार कर उसी जगह घास पर लेटा दिया, और अपना रूमाल पानी से तर करके उसका मुंह पोंछने बाद बड़े गौर से देखने लगी कि उसकी क्या हालत है। आकाश में चन्द्रमा और उनके चारो तरफ तारे भी जगमगा रहे थे जिनके सबब अच्छी तरह उजाला हो रहा था, मगर कलोंडिसा कैरीकरामा को लिये हुए जहां बैठी थी वहां एक घने पेड़ की छाया पड रही थी, इसलिये उस को कैरीकरामा की सूरत अच्छी तरह दिखाई नहीं देती थी।

आखिर धीरे धीरे कैरीकरामा होश में आने लगा और रुक रुक कर ... कई शब्द उसके मुंह से निकलने लगे—

कलौडिया ने जो उसके ऊपर झुकी हुई थी धीरे से कहा "नहीं, तुम आजाद हो ।"

कैरीक० । ऐं ! यह कौन बोलता है ? क्या यह मिरहा की आवाज है ?

कलौ० । (और धीमी आवाज से) नहीं, तुम जानते हो कि मिरहा इस दुनिया से चली गई और अब तुम फिर उसे कभी न देखोगे ।

कैरीक० । हां वह चली गई ! मेरी जिन्दगी की खुशी चली गई ! आ ! जिससे मुझको इश्क था उसे मैं अब कभी न देखूंगा !!

इसके बाद कैरीकरामा चुप हो रहा । कलौडिया अपना रूमाल तर करके बराबर उसके सिर पर रखती जाती थी जिससे सिर ठण्डा रहे और दर्द कम हो । आखिर धीरे धीरे कैरीकरामा होश में आया और अपने फैले तथा बिगड़े हुए खयालों को बटोर कर बोला, "अभी किसी ने मिरहा का जिक्र किया था, हाय ! बेचारी मिरहा !!"

कलौ० । अगर मिरहा का ध्यान अभी तक तुम्हारे दिल में बैठा हुआ है तो तुम ऐसी चाल क्यों चलते हो ? अगर मिरहा की रूह को इत्मानन मिले कि वह तुम्हारा हाल देखे तो तुम्हें देख उसको कितना रंज हो ?

कैरीक० । यह कौन है जो मुझसे इस तरह बातें कर रहा है ? क्या यह सब स्वप्न है ।

कलौ० । नहीं यह भ्रम नहीं है, तुम्हारी जान एक ऐसे आदमी ने बचाई है जो मिरहा से मुहब्बत रखती थी । मैं तुम्हारी मिरहा को तब से जानती हूं जब उसका व्याह नहीं हुआ था और कैरीकरामा ! मैं भी उससे मुहब्बत रखती थी और यह भी जानती हूं कि वह तुमसे कितनी मुहब्बत रखती थी ।

कैरीक० । फिर तुम कौन हो ? अपना नाम बताओ ?

कलौ० । मेरा नाम जानने से तुमको कोई फायदा न होगा ।

कैरीक० । ओह ! मैं समझ गया ! तुमको यह डर है कि डाकू कैरी-करामा तुम्हारा नाम किसी दूसरे के सामने ले लेगा ।

फिर थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे । कैरीकरामा इसी बीच में अपने हवास दुरुस्त करता रहा और थोड़ी देर में उठ कर बोला, 'अगर मैं तुम्हारी सूरत न देखूंगा तो कैसे जानूंगा कि किसने मेरे साथ इतना बड़ा एहसान किया और किस तरह समय पर तुम्हारी मदद करके इसका बदला भी चुका सकूंगा ।'

कलौडिसा उठ खड़ी हुई और कैरीकरामा भी उठ खड़ा हुआ यद्यपि उसका पैर लड़खड़ाता था, तो भी उसने अपने को सम्हाला । कलौडिसा ने पहिले की तरह धीमी आवाज में कहा, "देखो मगर तुम मुझे पहिचान नहीं सकते ।' और तब अपनी सांवली सूरत उसके पास कर दी ।

कैरीकरामा ने गौर से कलौडिसा की सूरत देखी मगर पहिचान न सका तब उसका हाथ पकड़ लिया और उजेले में खैंच लाया—अब रोशनी कलौडिसा के चेहरे पर अच्छी तरह पड़ने लगी मगर इसमें उसे देखते ही कैरीकरामा की अजब हालत हो गई और वह एक दम चिल्ला उठा मगर उसी समय कलौडिसा अपना चोगा और रूमाल उसी जगह छोड़ वहां से चल दी । कैरीकरामा जहां का तहां खड़ा रह गया क्योंकि कलौडिसा के पीछे दौड़ने का दम उसमें न था—और वह दरख्तों में घुस फिर कर गायब हो गई ।

शराब की बोतल अलादीन के मुंह से लगा दी। जिसने उसको बहुत फायदा पहुँचाया। कुछ ही देर बाद वह होश में आ गया और लैला की तरफ देख के गले में हाथ डाल दिया।

अलादीन ने धीरे धीरे अपना हाल कहना शुरू किया। उसने और इब्राहीम ने टोनर का पीछा करके उसे गिरफ्तार कर लिया था, जिसमें इन दोनों को कुछ भी तकलीफ न हुई थी क्योंकि टोनर के पास कोई हथियार न था जिससे वह इन दोनों का मुकाबला कर सकता। उसके साथ जो दूसरा आदमी (जमशेद) था वह भाग गया। जब टोनर को गिरफ्तार किये हुए अलादीन लौट रहा था हाफिज भी उसके साथ आ मिला जिसने कहा कि मैं लैला और क्लोडिया को उस आदमी का इलाज करते छोड़ आया हूं जिसके घोड़े को गोली लगी थी और जो जमीन पर बेहोश पड़ा हुआ है। ऐसे समय में लैला को छोड़ कर हाफिज का चला आना अलादीन को अच्छा न मालूम हुआ और टोनर को हाफिज और इब्राहीम के सुपुर्द कर अलादीन शाहजादी और क्लोडिया की तरफ दौड़ा क्योंकि उसके दिल में यह विचार उठा था कि वह बदमाश अगर होश में आ जायगा तो लैला और क्लोडिया को अवश्य दुःख देगा। घोड़े को तेज कर अलादीन तेजी से आ रहा था कि यकायक उसका घोड़ा किसी स्याह चीज को जो जमीन पर पड़ी हुई थी देख कर भड़का। गो अलादीन सवारी के फन में होशियार था मगर इस समय सम्हल न सका और जोर से जमीन पर गिर पड़ा। वह केरीकरामा का मुर्दा घोड़ा था जिसे देख अलादीन का घोड़ा भड़का था।

यह सब हाल सुन अलादीन ने लैला से क्लोडिया के बारे में पूछा, लैला ने सब हाल कहा। उसके गायब होने से अलादीन को ताज्जुब और अफसोस हुआ और जब यह सुना कि वह जर्मनी करीकरामा था तो और भी डर के साथ कहने लगा, 'अफसोस! बिचारी क्लोडिया जरूर उस डाकू के हाथ में फंस गई!!'"

होश आई तो बहुत से टूटे फूटे और उखड़े हुए शब्द उसके मुंह से निकले जिसमे बहुत सी बातें मालूम हुई और यह भी मुझे निश्चय हो गया कि मसूर सौदागर का मारने वाला टोनर नहीं है बल्कि उसे किसी दूसरे आदमी ने मारा है जिसका नाम जनशेद है।

अला०। है! तो क्या टोनर बेगुनाह है?

कलो०। हां वह बेकसूर है। चाहे और तरह पर उससे कोई कसूर हुआ हो मगर सौदागर के खून का धब्बा उस पर नहीं है।

अला०। तब तो वह व्यर्थ ही कैदखाने मे पड़ा है।

कलो०। इनसाफ से तो हमे यही चाहिये कि उसके छुड़ाने का जल्द उद्योग करे।

अला०। जरूर ऐसा होगा। मगर क्या तुमने यह सब बाते कैसी कराना के मुंह से सुनी?

कलो०। जी हां। मालूम होता है कि कैरीकरामा और जमशेद दो आदमी इस घर में घुस कर प्यारी शाहजादी को उठा ले गये (लैला की तरफ देख कर) और अपने को तुम्हारा भाई ठहरा कर कमीनेपन से मुस्तफा याकूब बर्देफरोश के हाथ बेच डाला।

लला०। हाय! तो क्या कैरीकरामा ने मुझ पर यह जुल्म किया! यद्यपि मैंने सच्चे दिल से उसकी मरती हुई स्त्री के साथ एकरार किया था कि

अला०। (रंज से) कैरीकरामा ऐसा नालायक है कि उस पर किसी को रहम नहीं करना चाहिये।

कलो०। हां, तो मेरा किस्सा सुनिये। होश में आने के पहिले कैरीकरामा बेहोशी में बहुत सी बातें बक गया जिससे निश्चय हो गया कि सौदागर के मारे जाने में टोनर बेगुनाह है मगर बर्देफरोश के हाथ बेचे जाने में साझी है और बेशक वह इस समय बगदाद में हाजिर होगा कि देखें कि उसकी नमकहरामी का नतीजा क्या निकलता है।

अला० । मगर फिर पकड़े जाने के समय टोनर ने यह सब बातें क्यों नहीं कहीं ?

कलौ० । शायद वह इसलिये चुप रहा होगा कि अगर वह ऐसा करता तो उसे अपना सच्चा सच्चा हाल भी कहना पड़ता और यह जाहिर हो जाता कि इसी की साजिश ने शाहजादी बर्देफ़रोश के हाथ बेची गई । जारजिया के कानून में इस काम की सजा फांसी है ।

अला० । बेशक ऐसा ही होगा । अच्छा कलौडिया ! अपना हाल कहो, फिर क्या हुआ ?

कलौ० । कैरीकरामा के मुंह से जो जो बातें निकलीं सब मैंने सुन लीं मगर उसके साथियों को यह बात बहुत बुरी मालूम हुई और यह समझ कर कि इनके सर्दार का सब भेद मालूम हो गया उन्होंने मुझे मार डालना चाहा । मगर उसी समय कैरीकरामा पूरी तरह से होश में आ गया और उन्हें मना करके मुझसे पूछने लगा कि मैं वहां किस तरह पहुंची ? मैंने उससे सब हाल सच सच कह दिया । उसने मुझ से कसम लेकर इस शर्त पर मेरी जान छोड़ दी कि मैं यह सब हाल अथवा उसका भेद किसी से नहीं कहूंगा । अपनी जान बचने पर मैं तुरत ही वहां से भागी मगर एक गांव के पास आकर मेरा थका हुआ घोड़ा गिर पड़ा और फिर न उठा । तब मैं उस गांव में गई और वहां एक घोड़ा किराये ले कर यहां तक पहुंची ।

फलो० । हां, अगर लेकिन अदालत में लैला उसका कसूर माफ कर दे तो बेशक थोड़ी ही सजा दे कर वह छोड़ दिया जायगा।

लैला० । यद्यपि उसने मेरे साथ बड़ी भारी बुराई की है जिससे मेरी जिन्दगी ही खराब हो चली थी तो भी मैं यह नहीं चाहती कि मेरे सबब से कोई आदमी फांसी पावे।

धला० । (ताज्जुब से लैला की तरफ देख कर) तुम अजब औरत हो। इतना कसूर करने वाले पर भी तुम रहम करती हो !!

थोड़ी देर तक बातें होती रहीं, इसके बाद तीनों आदमी आराम करने के लिये अपने अपने कमरों में चले गये।

हम इस जगह यह कह देना मुनासिब समझते हैं कि मन्सूर सौदागर की मौत के बाद उसके वारिसों ने नौकरों को तब तक उस मकान में रहने के लिए आज्ञा दे दी थी जब तक कोई उसका खरीदार न मिले क्योंकि वे लोग अपने अपने रोजगार के सबब से दूसरे देशों में रहा करते थे और इस मकान की उन्हें जरूरत न थी। यद्यपि मन्सूर के मरने पर वे लोग यहां जमा हो गये थे पर अलादीन तथा लैला के पहुंचने के ... दिन पहिले ही यहां से जा भी चुके थे।

अलादीन ने आराम करने के पहिले मकान के दारोगा से पूछा कि "इसके या लैला के नाम का कोई वसीयतनामा या कागज मन्सूर सौदागर के हाथ का लिखा इस मकान में पाया गया या नहीं ?" इसके जवाब में दारोगा ने कहा, "मुझे इस बारे में कुछ भी नहीं मालूम, हां आप उस मुख्तार से पता लगा सकते हैं जिसके नाम मन्सूर सौदागर ने कुछ कागज लिख रक्खा था।"

दूसरे दिन सवेरे ही अलादीन उस मुख्तार के पास गया और उससे मुलाकात की। वह मुख्तार बहुत ही ... ... करने पर उसने जवाब दिया कि ... या लैला के नाम का कोई कागज मन्सूर के हाथ का लिखा नहीं पाया गया। ... अलादीन को बड़ी

ानर्ग। कलोडिया उसके पीछे पीछे बहुत ऊंचे तक चढ़ गई। अन्
जेलर ठहरा और एक दूसरा दर्वाजा खोल कर उसको अन्दर जाने के
कहा और यह भी कहा कि मैं यहां खड़ा रहूंगा, जब तक तुम्हारा
चाहे टोनर से बातें करके चली आना। कलौडिया उस कमरे के
घुस गई और दो दर्वाजे लांघने बाद एक गोल कोठडी में पहुँची
जंजीरों से जकड़ा हुआ टोनर एक सड़ी सी गुदड़ी पर बैठा हुआ
और ऊपर के दो मोखों से उस कोठडी मे रोशनी पहुँच रही थी।
का चेहरा जर्द था उनकी सूरत से उदासी और नाउम्मीदी टपक रही
उसने समझा कि यहां आने वाला कैदखाने का पादड़ी होगा मगर
नकाबपोश औरत को देख कर वह चौंक पड़ा।

कलौ०। मैं तुम्हारे लिए खुशखबरी लाई हूं! अगर तुम मेरी
बात मानो तो तुम्हारी जान बच सकती है।

टोनर०। (खुश होकर) क्या मेरी जान बच सकती है! क्या
सच कहती हो? जो तुम कहोगी मैं करने के लिए तैयार हूँ
पहिले यह तो बताओ कि तुम कौन हो?

कलौ०। इसके जानने की कोई जरूरत नहीं, हां जो कुछ
रही हूँ सच कहती हूँ, इसकी सचाई के लिए इतना और भी क
हूँ कि तुम्हारे बहुत से भेद जो अब तक छिपे हुए थे मुझे मा
गये और मैं जान गई कि तुम्हारे हाथ से बदनसीब सौदागर मर
गया बल्कि जमशेद के हाथ से जो कैरीकरामा का साथी था।

टोनर०। हां, यह ठीक है मगर इन बातों को जाहिर करने से
क्या फायदा होगा?

कलौ०। गिरफ्तार होने पर तुमने यह हाल लोगों से
का इसका सबब भी मैं जानती हूँ और वह यह है कि शाहजादी
को जबर्दस्ती से भागने के जुर्म में तुम शरीक थे।

टोनर०। बेशक यह ठीक है।

गई। अच्छा अब सुनो, तुम्हारे बचने के लिये यह तदबीर सोची गई है कि मसूर सौदागर के खून के बारे में तो तुम्हें बेगुनाह साबित किया जाय मगर तुम्हें शाहजादी लैला के भगा ले जाने के जुर्म में शरीक होना कबूल करना पड़ेगा।

टोनर०। मगर इस से मुझे क्या फायदा होगा? मै उसी जुर्म में फांसी पा जाऊंगा।

करो०। इन सब बातो पर अच्छी तरह विचार कर लिया गया है, शाहजादी लैला तुम्हारा कसूर माफ कर देंगी।

टोनर०। (चौंक कर) हैं! शाहजादी लैला!! क्या वह यहां है, कुस्तुनतुनिया नहीं गई!!!

करो०। नहीं, वह वहां से साफ बच कर भाग आईं और यहां मौजूद हैं तथा तुम्हारी सिफारिश कर रही हैं। कानून भी कहता है कि अगर मुद्दई दावे से इन्कार करे तो सजा बहुत कम कर दी जाती है।

टोनर०। (खुश होकर और हथकड़ी से जकड़े हुए अपने दोनों हाथ जोड़ कर) तो बेशक मैं उम्मीद कर सकता हूँ कि तुम्हारी बदौलत मेरी जान बच जायगी, मगर तुम

हुक्म दिया। मुहर्रिर ने सिपाहियों की गारद को बुलाया और वे लोग टोनर को वहां से हटा कर बाहर ले गये। इसके बाद मुहर्रिर उस कमरे में गया जहां अलादीन, उसके दोनों साथी, लैला तथा उसकी दोनों दासियें और क्लौडिया वगैरह बैठी हुई थीं। तब क्लौडिया को अपने साथ इजलास पर ले आया, वहां क्लौडिया ने अपनी इजहार में अपने सफर का वही आखिरी हाल कहा जो कल अलादीन और लैला से कैरी करामा के बारे में कहा था मगर कैरीकरामा का नाम न लेकर मीना का नाम लिया। जज ने उसकी गवाही को पूरा सबूत समझा और मान लिया कि सौदागर का मारने वाला टोनर नहीं बल्कि जमशेद है। इसके बाद जज ने क्लौडिया को बिदा किया और लैला के इजहार की बारी आई।

यह कह कर कि मैं अभी आता हूँ टोनर की तरफ बढ़ा टोनर डेनियल को अपने पास आते देख कर अपनी जगह से उठा और बहुत आजिजी से हाथ जोड़ कर बोला, "आपको और उन लोगों को जिन्होंने ऐसी अवस्था मेरी मदद की है मैं दिल से धन्यवाद देता हूँ।" इसके जवाब में शाहजादा डेनियल ने उसको अपनी चाल चलन सुधारने के लिये बहुत कुछ नसीहत की है और एक थैली अशर्फियों की उसके हाथ में दे कर कहा, 'तुम इस शहर से चले जाओ और इसके अतिरिक्त किसी दूसरे शहर में रोजगार करके अपना दिन बिताओ।" इसके बाद डेनियल तुरत लैला के पास लौट आया।

उस दिन शाम को शाहजादा डेनियल और लैला विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिये ?

डेनि०। मुझे अपने को क्वाइस पहुँचने तक मुल्क सिगोनिया का शाहजादा जाहिर न करना चाहिये मगर वहां पहुँचने पर भी मैं अपने शाहजादा होने का सबूत किसी को क्या दे सकता हूँ ?

लैला०। क्या ससुर ने मेरे सामने इस बात का इकरार नहीं किया और क्या सिगोनिया के लोग मेरे कहने पर विश्वास न करेंगे ?

डेनि०। प्यारी लैला! यह सच है, तो भी उन्हीं हाकिमों के आगे जिनका जोर इस मुल्क में बहुत बढ़ा चढ़ा है और जिनको यह डर लगा रहता है कि शाही खानदान का कोई आदमी पैदा हो जाने से डर होगा, बिना कोई पूरा सबूत दिये काम न चलेगा। इसके सिवाय मैं एक बात और भी सोचता हूँ।

लैला०। वह क्या ?

डेनि०। तुमको मालूम है कि कुर्स के हाकिम और मेरे चचा सम्स दारोगा का कितना बड़ा एहसान मेरे ऊपर है जिन्होंने मेरी परवरिश की है। मुझे उचित नहीं कि बिना उन से कुछ कहे अपने घर और जिन्दगी में जो मुसीबतें गुजरी हैं उन्हें भी बिना उनसे बयान किए तुम्हारे साथ आगे

इसके जवाब में उस काले आदमी ने झुक कर सलाम किया और ड्योढ़ी से निकल कर सड़क का रास्ता लिया। कलोडिया ने बूढ़ी औरत को मामूली सलाम करके पूछा, "क्या तुम यह नया नौकर रखना चाहती हो?"

बुड्ढी०। हां, इसके रखने की कोई जरूरत आ पड़ी है। जब से यह मकान मेरे मालिक के बड़े बेटे के कब्जे में आया है तब से रात के वक्त एक चौकीदार पहरा देने के लिये रखने का हुक्म हुआ है क्योंकि इसमें बहुत सी बेशकीमत चीजें हैं और माली लोग पहरे का काम नहीं दे सकते।

कलो०। बेशक, यह बहुत अच्छी बात है, जरूर एक चौकीदार रखना चाहिये। तो क्या तुमने इसे नौकरी देने का इकरार कर लिया है?

बुड्ढी०। नहीं, मैंने इसे शाम को आने के लिये कहा है क्योंकि यह काम बड़ी खबरदारी का है, मैं इसके बारे में कुछ जांच करना चाहती हूँ अगर मेरी दिलजमई हो गई तो यह आज रात से अपना काम करेगा।

इसके बाद कलोडिया बाग में चली गई और बाकी का तमाम दिन उसने बाग में टहल कर बिताया। शाम होते होते कलोडिया उसी जगह में आई और एक किताब हाथ में लेकर खुली हुई खिड़की में बैठ कर पढ़ने लगी। उसी समय वह काला उम्मीदवार नौकर बुड्ढी औरत के पास आया। बुड्ढी ने कहा, "मैं अपनी दिलजमई कर चुकी हूं और तुम इसी समय से अपने काम पर मुस्तैद किये जाते हो। तुम्हें रात भर बाग में पहरा देना होगा—लो ये दो पिस्तौलें तुम्हें देती हूँ।"

बुड्ढी ने एक आलमारी से दो पिस्तौलें और कुछ बारूद गोली निकाल कर उसे दिया। उसने सलाम करके ले लिया, पिस्तौल और हथियार अपनी जेब में रक्खे और तब बाग में चला गया। बुड्ढी भी दूसरे काम के लिये रवाना हुई।

क्लाडिया चुपके से ड्योढ़ी से निकली और बाग पहुँची। सूर्य अस्त हो रहा था। उस नये नौकर की सुफेद पौशाक बाग के दूसरे सिरे पर दिखाई देती थी जो बूढ़े माली से बातें कर रहा था। जब अन्धेरा हुआ और क्लाडिया ने सुना कि फाटक बन्द करके ताला लगा दिया गया है तो वह एक गुंजान झाड़ी में चली गई और छिप कर बैठ रही।

थोड़ी देर बाद वह नया चौकीदार घूमता हुआ ठीक उसी जगह पहुँचा जहां सफ़दर सौदागर मारा गया था और बड़ी होशियारी से चारों तरफ देखने लगा, जब कहीं किसी को न पाया तो पास के मालखाने में जाकर एक कुदाल उठा लाया और फिर उसी जगह पहुँच कर चारों तरफ देखने लगा। जब किसी को न पाया, आगे बढ़ा, यहां तक कि उस झाड़ी के पास पहुँच गया जिसके अन्दर क्लाडिया छिपी हुई थी। क्लाडिया ने चुपके से कपड़े के अन्दर हाथ डाला और म्यान से खंजर निकाल लिया।

जब चौकीदार ठीक उस झाड़ी के पास पहुँच गया तब रुका और उस कुदाल से वहां की जमीन खोदने लगा। थोड़ी देर तक जमीन खोदने के बाद वह रुक गया और गढ़े के अन्दर किसी चीज को देखकर चकाचौंध हो गया। एक चीख उसके मुँह से निकल पड़ी मगर उस समय क्लाडिया शेरनी की तरह झपट कर उसके पास पहुँची जिसने एक हाथ से उसे पकड़ लिया और दूसरे हाथ से खंजर उसके कलेजे के सामने रख कर कहा—'खबरदार! अगर एक बात भी मुंह से निकालेगा तो मारा जायगा।'

इसके जवाब में उस काले आदमी ने झुक कर सलाम किया और ड्योढ़ी से निकल कर सड़क का रास्ता लिया। कलौडिसा ने बूढ़ी औरत को मामूली सलाम करके पूछा, "क्या तुम यह नया नौकर रक्खा चाहती हो ?"

बुड्ढी०। हां, इसके रखने की कोई जरूरत आ पड़ी है। जब से यह मकान मेरे मालिक के बड़े बेटे के कब्जे में आया है तब से रात के वक्त एक चौकीदार पहरा देने के लिये रखने का हुक्म हुआ है क्योंकि इसमें बहुत सी बेशकीमत चीजें हैं और माली लोग पहरे का काम नहीं दे सकते।

कलौ०। बेशक, यह बहुत अच्छी बात है, जरूर एक चौकीदार रखना चाहिये। तो क्या तुमने इसे नौकरी देने का इकरार कर लिया है ?

बुड्ढी०। नहीं, मैने इसे शाम को आने के लिये कहा है क्योंकि यह काम बड़ी ऐतबारी का है, मै इसके बारे में कुछ जांच करना चाहती हूँ अगर मेरी दिलजमई हो गई तो यह आज रात से अपना काम करेगा।

इसके बाद कलौडिसा बाग में चली गई और बाकी का तमाम दिन उसने बाग में टहल कर बिताया। शाम होते होते कलौडिसा उसी ड्योढ़ी में आई और एक किताब हाथ में लेकर खुली हुई खिड़की के पास बैठ कर पढ़ने लगी। उसी समय वह काला उम्मीदवार नौकर बुड्ढी औरत के पास आया। बुड्ढी ने कहा, "मैं अपनी दिलजमई कर चुकी हूँ और तुम इसी समय से अपने काम पर मुस्तैद किये जाते हो। तुम्हें रात भर बाग में पहरा देना होगा—लो ये दो पिस्तौलें तुम्हें देती हूँ।"

बुड्ढी ने एक आलमारी से दो पिस्तौलें और छर्रा बारूद आदि निकाल कर उसे दिया। उसने सलाम करके ले लिया, पिस्तौल भर कर अपनी जेब में रक्खी और तब बाग में चला गया। बुड्ढी भी दूसरे काम के लिये रवाना हुई।

क्लोडिया चुपके से ड्योढ़ी से निकली और बाग पहुँची। सूर्य्य अस्त हो रहे थे। इस नये नौकर की सुपेदी पोशाक बाग के दूसरे सिरे पर दिखाई देती थी जो बूढ़े माली से बातें कर रहा था। जब अन्धेरा हुआ और क्लोडिया ने सुना कि फाटक बन्द करके ताला लगा दिया गया है तो वह एक गुंजान झाड़ी में चली गई और छिप कर बैठ रही।

थोड़ी देर बाद वह नया चौकीदार घूमता हुआ ठीक उसी जगह पहुँचा जहां मफ़्रूर सौदागर मारा गया था और बड़ी होशियारी से चारो तरफ देखने लगा, जब कहीं किसी को न पाया तो पास के मालखाने में जाकर एक कुदाल उठा लाया और फिर उसी जगह पहुँच कर चारो तरफ देखने लगा। जब किसी को न पाया, आगे बढ़ा, यहां तक कि उस झाड़ी के पास पहुँच गया जिसके अन्दर क्लोडिया छिपी हुई थी। क्लोडिया ने अपने कपड़े के अन्दर हाथ डाला और म्यान से खंजर निकाल लिया।

जब चौकीदार ठीक उस झाड़ी के पास पहुँच गया तब रुका और उस कुदाल से वहां की जमीन खोदने लगा। थोड़ी ही सी जमीन खोदने के बाद वह रुक गया और गड्ढे के अन्दर किसी चीज को देखकर यकायक खुशी की एक चीख उसके मुंह से निकल पड़ी मगर उस समय क्लोडिया शेरनी की तरह झपट कर उसके पास पहुँची जिसने एक हाथ से उसे पकड़ लिया और दूसरे हाथ से खंजर उसके कलेजे के सामने रख कर कहा—'खबरदार! अगर एक बात भी मुंह से निकालेगा तो मारा जायगा।'

चौंतीसवां बयान

टोनर एक दम घबड़ा गया और ऐसा डरा कि उसके मुह से आवाज तक न निकली, उसने कलौंडिसा को पहिचाना और उसके दिल में विश्वास हो गया कि यह वही औरत है जिसने मुझे कैद से छुड़ाया है क्योंकि वह उसकी सावली सूरत एक दफे जज के इजलास पर देख चुका था यही सबब था कि कलौंडिसा का रोब टोनर के ऊपर छा गया और वह कुछ न कर सका तब कलौंडिसा ने हुकूमत के तौर पर दोनो पिस्तौलें उसके जेब से निकाल अपने कब्जे में कर लीं। अब टोनर बिल्कुल ही बेबस हो गया और कलौंडिसा की मेहरबानी पर अपनी जिन्दगी का भरोसा समझने लगा। कलौंडिसा ने झांक कर गड्ढे में देखा तो एक कागज का मुट्ठा नजर पड़ा उसने डपट कर उसे उठाने के लिये कहा। टोनर ने कांपते हुए हाथ से वह कागज का मुट्ठा उठा कर कलौंडिसा के हाथ में दे दिया। कलौंडिसा ने कहा, "उठ और मेरे साथ साथ चल, जो कुछ मैं कहूँ सो कर, नहीं तो याद रख तू फिर अपने को उसी कैदखाने में पावेगा और किसी तरह पर भी अपनी जान न बचा सकेगा।"

टोनर उठा और कलौंडिसा के कहे मुताबिक उस गड्ढे को बन्द कर के साथ चलने को तैयार हुआ। कलौंडिसा ने पहिले उसे बहुत कुछ लानत मलामतें की जिसके जवाब में टोनर सिवाय इसके और कुछ न कह सका कि 'अबकी मुझे माफ करो, मैं कसम खाता हूँ कि हमेशा के लिये टिफलिस से चला जाऊंगा।'

कलौ०। तेरी कसम का कोई एतबार नहीं और न अब मैं तुझे इस लायक ही रक्खूंगी कि तू टिफलिस में रह सके। खैर इस वक्त यह बता कि ये कागज तेरे हाथ क्योंकर लगे? खबरदार झूठ न बोलना।

टोनर ने उस कागज के पाने का सच्चा २ हाल कलौंडिसा से कह

पैंतीसवां बयान

क्लौडिया गुर्जी बेवा के मकान पर शाम होते होते पहुँची। वह जानती थी कि डेनियल कुर्स को जायगा और उसके आने तक लैला वहां रहेगी मगर दरवाजे ही पर हाफिज और इब्राहीम को हुक्का पीते देख इसे ताज्जुब हुआ। वह मकान के अन्दर गई, उसे देखते ही लैला उठी और उसके गले से लिपट गई। अलादीन ने भी उसकी बहुत खातिर की। इसके बाद गुर्जी बेवा और उसकी दोनों लड़कियों से भी वह मिलाई गई जो वहां मौजूद थीं। उन लोगों ने भी क्लौडिया की हद से ज्यादे इज्जत और खातिर की क्योंकि गुर्जी बेवा इस बात को बखूबी जानती थी कि इसी क्लौडिया की बदौलत लैला की जान बची है और इसी की बदौलत उसे उसकी लड़की की खबर मिली थी।

पाठकों को याद होगा कि जब लैला और डेनियल अपने दोस्तों के मकान पर पहुँचे थे तो उसी समय कुर्स का हाकिम मुहम्मदपाशा भी दिखाई दिया था। उसे बहुत दिनों से अलादीन की कुछ खबर नहीं मिली थी और यह सोच कर कि शायद उसके मुँह बोले भतीजे अलादीन पर कोई आफत न आ गई हो उसने टिफलिस का सफर करना मुनासिब समझा था। निदान दो आदमी अपने साथ लेकर वह घर से बाहर निकला और यह इत्तफाक ही की बात थी कि उसने अलादीन को इस प्रकार पा लिया।

डेनियल ने मुहम्मदपाशा से अपना ताज्जुब और हैरत भरा हुआ सब हाल तथा जो कुछ मुसीबत लैला पर गुजरी थी साफ साफ कही। पाशा उसको ताज्जुब और शौक से सुनता रहा। उसने डेनियल को उसकी पैदाइश के भेद खुल जाने पर मुबारक बाद दी और डेनियल के मुसल-मानी मजहब छोडने पर कुछ रंज न किया, क्योंकि उसने सोचा कि अपना असली भेद खुल जाने की हालत में इस नौजवान का अपने बुजुर्गों का मजहब फिर अख्तियार करना उचित ही था मगर उसके दिल में यकायक यह बात जरूर पैदा हुई कि मुझको अब इसे जिसको कि मै अपने लड़के की तरह चाहता हूँ जरूर छोड़ना पडेगा। फिर भी पाशा ने उसकी राय और तदबीर मे कुछ खलल न डाला बल्कि यह कहा कि मैं तुम्हारी बातों को सुन कर बहुत खुश हुआ तथा मैंने इरादा कर लिया है कि तुमको अपना वारिस बनाऊ। चाहे तुमको कितनी ही दौलत मिल जाय या राज्य की भी परवाह न हो।

महम्मद पाशा दो रोज तक उस गुर्जी बेग के मकान में रहा और उसके साथी लोग एक पास के गाव में टिके रहे। रुखसत होने के पहिले महम्मदपाशा ने अलादीन से वादा किया कि मै कुर्स में पहुँच कर वह कुल सामान कागजात और सार्टिफिकेट वगैरह जो तुम्हारी पैदाइश के सबूत में और मुल्क सिगरेलिया के शाहजादा कबूल किये जाने के लिये जरूरी है तुम्हारे पास भेज दूगा। इसके बाद पाशा नौजवान शाहजादे को गले से लगा कर और गुर्जी बेग को अपनी मेहमानी के बदले में मालामाल करके वहा से रवाना हुआ।

अब पाठक समझ हो गये होंगे कि शाहजादा डेनियल महम्मद पाशा के पास से आने वाले सबूतों के इन्तजार में ही अब तक यहा टिका हुआ था। उसे कुर्स जाने की जरूरत न पडी और यही सबब था कि करोडिमा ने डेनियल को वहा पाया, यद्यपि वह समझे हुए था कि डेनियल कुर्स गया होगा और मेरी मुलाकात केवल लैला ही से होगी।

गुर्जी वेवा ने करीने से समझ लिया कि कलौडिसा जरूर किसी काम के लिए आई है और अकेले में लैला से बात किया चाहती है। यह सोच वह अपनी दोनों लड़कियों को ले दूसरे कमरे में चली गई। तब क्लोडिसा ने अपना किस्सा शुरू किया। उसने टोनर के बारे में कुछ भी जिक्र न किया बल्कि कागज मिलने के बारे में एक झूठा किस्सा गढ़ कर सुना दिया और कह दिया कि मन्सूर सौदागर के मकान में से यकायक कुछ कागज मुझे मिल गये हैं जो तुम दोनों के नाम से लिखे गये हैं और और जिनमें गुलिस्ता घाटी का हाल पूरा पूरा दर्ज है। उन्हीं को देने के लिये मुझे तुम्हारे पास आना पड़ा है।

इतना कह क्लोडिसा ने कागज उन दोनों के सामने रख दिया। लैला ने उठ कर बड़ी मुहब्बत से उसे गले लगा लिया और डेनियल ने भी बड़ी खुशी से हाथ मिलाया तथा उसकी बड़ी तारीफ की।

क्लोडिसा का भी मजहब ईसाई ही था और गुलिस्ता घाटी का भेद हमेशा तीन ईसाई मजहब वाले आदमियों को ही जानना चाहिये था अतः अब लैला और डेनियल ने सोचा कि तीसरे आदमी की जगह से क्लोडिसा ही इस भेद में शरीक की जाय तो अच्छा है क्योंकि एक तो ईसाई है दूसरे यह इस भेद को जान भी चुकी है। अस्तु इन्होंने यह तय किया कि जहां तक जल्द हो सके बल्कि अगर मुमकिन हो तो कल ही तीनों आदमियों को यहां से गुलिस्ता घाटी की तरफ रवाना हो जाना चाहिये।

के घोड़े पर सवार हो टिफलिस से रवाना हुआ था। उसकी बड़ी बड़ी उम्मीदें और दौलत पाने की उम्मीद मिट्टी में मिल गई थी, हां अगर कोई खुशी थी तो यही कि यों फंसने पर भी इसकी जान बच गई थी। इसके सिवाय उसके पास शाहजादा डैनियल की दी हुई कुछ दौलत भी मौजूद थी।

टोनर घोड़े पर सवार होकर पहिले अपने मकान पर गया। अपने कमरे में जाकर उसने अपने मुंह तथा बालों का स्याह रंग धो डाला। अपने मामूली कपड़े पहिने और तब फिर उसी घोड़े पर सवार हो एक तरफ को चल निकला।

वह अपनी धुन में ऐसा डूबा हुआ था कि इस बात को बिल्कुल न सोच सका कि कहां जायें और क्या करें यहां तक कि उसे यह भी खबर न थी कि उसका घोड़ा उसे कहां लिए जाता है।

चन्द्रमा बहुत साफ निकला हुआ था। कोहकाफ के पहाड़ बादलों की तरह आस्मान से बातें करते दिखाई दे रहे थे और घोड़ा टोनर को सीधा उसी तरफ लिये जाता था मगर टोनर को अब उधर जाने की इच्छा न थी क्योंकि उस तरफ की कुल उम्मीदें उसकी बर्बाद हो चुकी थीं, इस लिये एक मोड़ पर पहुँच कर जहां से एक पगडंडी दूसरी तरफ को निकल गई थी टोनर ने घोड़ा रोका और एक दूसरी तरफ मोड़ना चाहा। घोड़ा झझका और पुन. उसी रास्ते पर बढ़ा। टोनर ने यह देख उसको एक कोड़ा मारा जिससे घोड़ा थोड़ी देर के लिये ठहर गया मगर फिर भी मोड़ न घूमा।

टोनर घोड़ों के मिजाज को खूब पहिचानता था, उसने समझा कि शायद इस राह में किसी तरह का खौफ है इसलिये घोड़ा उधर नहीं जा रहा है। लाचार उसे उसी राह पर छोड़ दिया जिधर जाता था। कुछ दूर निकल जाने पर फिर टोनर ने घोड़े को मोड़ना चाहा परन्तु यहां भी वही मामला हुआ। अब टोनर के दिल में कई तरह की बातें

पैदा होने लगीं। क्या सबब कि घोड़ा दूसरी तरफ नहीं जाता ! जरू
इसमें कोई भेद है।

यकायक टोनर के दिल में एक बात पैदा हुई जिससे उसका कलेज
धड़कने लगा। वह सोचने लगा कि चौदह वर्ष से यह घोड़ा मन्सू
सौदागर के पास है मगर मन्सूर ने सिवाय उस वक्त के जब उसको छि
पकर सफर करने की जरूरत पड़ती थी किसी दूसरे वक्त कभी इस घो
पर सवारी नहीं की थी। छिप कर सफर करने का हाल टोनर को कु
कुछ मालूम हो चुका था और वह जान चुका था कि मन्सूर सौदागर क
गुप्त सफर गुलिस्ता घाटी की तरफ हुआ करता था यह खयाल आने
साथ ही टोनर का चेहरा खुशी से चमकने लगा क्योंकि उसे विश्वास ह
गया कि यह घोड़ा जरूर मुझे गुलिस्ता घाटी की ही तरफ लिये जा
है जहां जाने की इसे पुरानी आदत पड़ी हुई है।

छत्तीसवां बयान

हुई थी। वहां टोनर उतर पड़ा और घोड़े को प्यार से थपथपाया, घोड़ा भी खुश मालूम होता था। वह नहर से पानी पीकर घास चरने लगा। टोनर ने भी मुंह हाथ धोया और जंगली मेवे जो बहुत से दरख्तों में लगे थे खाये। इसके बाद वह थोड़ी देर तक आराम करने के लिए घास पर लेट रहा, मगर उसे नींद न आई क्योंकि उसके दिल में तरह तरह के खयालात भरे हुए थे। उसे अच्छी तरह विश्वास हो गया कि यह समझदार घोड़ा ठीक उसी राह पर चल रहा है जिस राह पर मन्सूर सौदागर जाया करता था और बेशक यह घाटी गुलिस्ता तक उसे पहुँचा देगा। साथ ही इसके टोनर ने यह भी सोचा कि कौन ठिकाना यह घोड़ा घाटी गुलिस्ता के दर्वाजे ही तक मुझे पहुँचा कर रह जाय और उसके अन्दर जाने के लिये रास्ता ढूंढना पड़े क्योंकि वह राह जरूर छिपाई गई होगी जिसमें आम लोग उसके अन्दर न जाने पावें। जो हो, इस खयाल ने टोनर की हिम्मत कम न की और वह आगे बढ़ने से न रुका। उसने सोच लिया कि जब घोड़ा मुझे उसके दरवाजे तक पहुँचा देगा तो उसके अन्दर आने की भी कोई न कोई सूरत निकल ही आवेगी।

टोनर फिर घोड़े पर सवार हुआ और जिधर वह बढ़ा उसे जाने दिया। घोड़ा पांच मील तक नहर के किनारे किनारे चलता रहा और तब एक ऐसी जगह पहुँचा जहां किसी जमाने में एक पेड़ पर बिजली गिरी थी। उस जगह नहर में पानी कम था, घोड़ा उसके पार हो गया और नहर के दूसरे किनारे पर पहुँच तथा कुछ दूर चल कर एक ऊंचे और चक्करदार रास्ते से होता हुआ एक पहाड़ के दामन में पहुंचा। यहां का रास्ता बहुत ही कठिन था और यह जगह भी बड़ी भयानक जान पड़ती थी।

अब सूर्य निकल आया था। यकायक वह बुद्धिमान घोड़ा मुड़ा और जिस राह पर जा रहा था उसे छोड़ एक तंग रास्ते पर चलने लगा

लगा। तीन चार बोतलें मिलीं जिनमें शराब थी और उसी जगह खाने की कुछ चीजें भी पडी थीं पर इनमें कुछ उल्ली सी लग गई थी जिससे ये बिल्कुल खराब हो गई थीं। टोनर समझ गया कि यह मशूर सौदागर के टिकने की जगह है और जरूर चीजें भी उसी की लाई हुई हैं। टोनर ने थोड़ी सी शराब पी और इसके बाद गार से बाहर निकला मगर उस बची हुई शराब को भी एक बोतल मे करके बाहर लेता आया। चिराग और तेल की कुप्पी भी इसलिये लेता आया कि शायद गुलिस्तावाटी का रास्ता ढूंढने के समय काम आवे।

दो घण्टे आराम करने बाद फिर टोनर घोडे पर सवार हुआ और उसको उसकी मर्जी पर चलने दिया। आज का रास्ता बड़ा ही कठिन और भयानक मिला। उस जगह पर टोनर के रोंगटे खडे हो जाते थे मगर घोड़ा बड़े इतमीनान के साथ चला जाता था। तीसरे पहर वह घोड़ा फिर एक जगह ठहरा जहा पर बहुत सी घास उगी हुई थी और मेवों के दरख्तो के बीच मे एक चश्मा पानी का भी बह रहा था। थोडी २ पर एक पत्थर का ढेर था जो आदमीके हाथ का बनाया मालूम होता। टोनर समझ गया कि जरूर यह रास्ता पहिचानने के लिये निशान न ५ गया है।

टोनर ने यहा भी तीन घन्टे आराम किया और तब फिर आगे बढा। शाम होते होते वह एक छोटी खोह के पास पहुँचा जिसकी बनावट एक कोठडी के तौर पर थी और जहा एक ऋास (सलीब) भी लटक रहा था। दर्वाजे के सामने एक बड़ा पत्थर था जो शायद घुटने टेक कर इबादत करने के लिये हो।

अब घोडे ने हिनहिनाना शुरू किया और खुशी मे आकर कुलेल करने लगा। टोनर ने समझा कि अब सफर खतम हुआ अस्तु वह उतर पडा और पहिले की तरह घोडा फिर इस खोह में भी उतर गया। टोनर भी चिराग बाल कर उसके पीछे पीछे गया। यहा भी एक चश्मा बह

रक्खा था जिसमें घोड़े ने पानी पीया और टोनर ने भी पानी पी कर इधर उधर देखा। यहां भी एक ठिकाने चिराग, तेल, दियासलाई और एक बोतल शराब की रक्खी हुई थी तथा बिना मसाले के थोड़ा सा गोश्त भी पड़ा था जो बिगड़ा न था। टोनर ने उसमें से थोड़ा सा खाया और लेट रहा।

टोनर रात भर सोया रहा। दूसरे दिन तड़के उठ कर वह खोह के बाहर निकला और यह जानना चाहा कि सफर खतम हो गया या अभी और चलना बाकी है, घोड़े पर जीन कसी और सवार हुआ। यहां से घोड़ा पीछे की तरफ मुड़ा। टोनर ने समझा कि शायद किसी दूसरी राह पर जायगा मगर घोड़ा उधर ही जाने लगा जिधर से आया था। टोनर समझ गया कि सफर इसी जगह खतम हुआ। वह फिर लौटा और उस गार के मुहाने पर आ कर उतर पड़ा तथा घोड़े को भी खोल दिया। टोनर चिराग बाल कर उस गार के अन्दर गया और ढूंढने लगा कि यहां कोई रास्ता या दरवाजा है या नहीं, क्योंकि उसे विश्वास हो गया था कि घोड़ा इससे आगे नहीं जा सकेगा और अब इसे गुलिस्ता घाटी का रास्ता खुद ढूंढना चाहिये।

टोनर ने बहुत खोज की, चारो तरफ घूमा, कई दरों में घुसा और लौट आया मगर कुछ फायदा न हुआ और गुलिस्ता घाटी का दरवाजा उसे न मिला। यहां तक कि पूरा दिन गुजर गया पर कुछ काम न चला, मगर उसने भी निश्चय कर लिया कि चाहे महीनों क्या सालों भी बीत जाय तो भी यहां से न टलेगा और जिस तरह भी होगा रास्ते का पता लगावेहीगा।

बहुत थक जाने पर टोनर उस गार में लौट आया और लेट कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये? यकायक उसका ध्यान कहीं [illegible] तरफ चला गया। उसने सोचा कि इलोडिया ने जो कागज टोनर को दिया है उसको पढ़ने से उसे गुलिस्ता घाटी का हाल जरूर

मालूम हो गया होगा और वह यहा जरूर आवेगी। अगर वह अकेली आई तो अपना बदला उससे ले लूंगा लेकिन अगर कुछ आदमियो को अपने साथ लाई तो मुश्किल होगी, वह मुझे यहा देख कर मेरा मतलब समझ जायगी और मुझे किसी तरह जीता न छोडेगी क्योंकि जरूर तब उसे यह विश्वास हो जायगा कि मैंने वह कागज पढ लिया था। और यह भी निश्चय है कि वह अकेली कभी न आवेगी, उसने अलादीन और लैला को वह कागज जरूर दिखलाया होगा और वे लोग जरूर उसके साथ आवेंगे अगर ऐसा हुआ तो किसी तरह मेरी जान न बच सकेगी।

इन सब बातों को सोचता हुआ टोनर घबडा गया और खोह के बाहर निकल कर चारो तरफ देखने लगा। बिना गुलिस्ता घाटी का पता लगाये वह यहा से कहीं न जाना चाहता था मगर कलौडिमा के हाथ से भी अपने को जैसे हो बचाना जरूरी था अस्तु बहुत सी बातो को सोच उसने घोडे पर साज रक्खा और सवार होकर एक तरफ को चला। लगभग तीन मील आगे जाकर उसे एक घना जगल मिला जहा मेवेदार दरख्त बहुत लगे हुए थे। टोनर ने सोचा कि बस इसी जगह छिप कर रहना चाहिये और जब तक गुलिस्ता घाटी का दरवाजा न मिले यहा से टलना न चाहिये।

सैंतीसवां बयान

दूसरे दिन सन्ध्या के समय डेनियल कलौडिमा और लैला तीनों वहा पहुँचे। डेनियल ने घोडे से उतर कर लैला और कलौडिमा को उतारा, इसके बाद एक थैला खोला जो घोडे की काठी के साथ बंधा हुआ था और जिसमें बहुत सी चीजें थीं। उसी में से एक लम्प तेल की बोतल और दियासलाई निकाली तथा लम्प जला कर घोडों को गार के अन्दर ले गया। लैला और कलौडिमा भी पीछे पीछे गई।

डेनि०। (टोनर के छोड़े हुए चिराग को देख कर) ओह! यहां तो चिराग रक्खा हुआ है!!

कलौ०। मगर तेल नहीं है जैसा कि मन्सूर ने अपने कागज में लिखा है।

लैला०। पहिले गार में तो कुछ भी न था।

डेनि०। मन्सूर ने अपने कागज में जो कुछ लिखा है बहुत ठीक लिखा है। देखो रास्ते का हाल कैसे अच्छे ढंग पर उसने लिखा है कि हम लोगों को यहां तक आने में किसी तरह की तकलीफ न हुई।

लैला०। बेशक बहुत ही अच्छे तरीके पर लिखा है।

डेनि०। अब उस ठिकाने तक तो पहुंच गये जहां तक घोड़े आ सकते थे, अब यहां से आधे घण्टे तक पैदल रास्ता चलकर गुलिस्तां घाटी में पहुंचेंगे।

जब घोड़े पानी पी चुके, काठी खोल दी गई और लगाम उतार ली गई। काठी के साथ दाना भी लटका था जो घोड़ों के काम आया। इसके बाद शाहजादे ने एक दूसरा थैला खोला जिसमें खाने पीने की चीजें थीं। खाना खाने के बाद बिछौने की जगह पर थोड़ी सी घास जमा करके बिछाई और उसी पर तीनों आदमी सो रहे। सुबह को उठकर तीनों ने जरूरी कामों से छुट्टी पाई तथा कुछ खाना खा कर मुस्तैद हुए और पच्छिम की तरफ देखने लगे जिधर उन लोगों को जाना था या जिस तरफ गुलिस्तां घाटी उन्हें मिल सकती थी।

लिये खुला छोड़ दिया और तीनों आदमी उत्तर और पश्चिम की तरफ बढे। दस मिनट तक किसी ने कोई बात न की इसके बाद डेनियल ने कहा, "मालूम होता है इस राह से हाल ही में कोई आया है।"

लैला०। कैसे यह मालूम हुआ?

डेनि०। इस उखड़ी हुई घास को देखो जो रास्ते मे पडी हुई है।

ये तीनों फिर चलने लगे, थोड़ी दूर चलकर शाहजादे ने कहा, "ओह! यहा यह पत्थर का ढेर कैसा है! मसूर ने अपने कागज में इस निशान का होना कहीं नहीं लिखा (कोट के जेब से कागज निकाल कर और पढ कर) देखो, इस निशान का कहीं जिक्र नहीं है। यहा सिर्फ यह लिखा है—"गार से निकल कर अपनी आख उत्तर और पश्चिम की तरफ उस पहाड़ पर जमाओ जिसकी चोटी दो टुकडे सी हो गई मालूम होती है और बराबर वर्फ से ढकी रहती है। उस राह पर चलो जो पहाड़ की तरफ सीधी जाती है। इस दर्रे में तुमको कोई निशानी न मिलेगी क्योंकि उसकी कोई जरूरत नहीं है। अन्त में तुम ढालुवीं जगह पर पहुँचोगे, जहा यकायक यह दर्रा खतम हो जाता है।"

यहा तक पढकर डेनियल रुका और बोला, 'देखो यहा पर कोई निशान होना मंसूर ने नहीं लिखा है मगर यहा एक ढेर पत्थरों का मौजूद है जो आदमी के हाथ का बनाया है और वह घास भी जो रास्ते में मिली थी जरूर किसी आदमी की या जानवर की करतूत है।

लैला०। शायद कोई मुसाफिर इधर से आया हो।

क्लौडिसा कुछ न बोली मगर उसकी आखों में टोनर की तसवीर घूम गई। वह सोचने लगी कि शायद टोनर ने मुझे धोखा दिया। कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि गाडने के पहिले उसने उन कागजों को पढ लिया हो। शायद वह ढेर उसी का बनाया हुआ हो और इस वक्त वह गुलिस्ता घाटी में सैर कर रहा हो। अगर ऐसा हुआ और वह गुलिस्ता घाटी में मुझे मिला तो बिना मारे न छोडूँगी।

ये तीनों आगे बढते गये। यह राह एक दर्रे के अन्दर अन्दर पहाड़ों के बीच में हो कर गई थी जहा की जमीन बहुत ऊंची नीची थी तथा जहाँ पर घोड़ा किसी तरह नहीं चल सकता था। आखिरकार किसी तरह वे इस दर्रे के सिर पर जा पहुचे और एक ऊंची ढालुईं जमीन जिस पर जंगली झाड़ियाँ लगी थीं, नजर आई।

एक चट्टान की आढ़ में छिप कर खड़ा टोनर यह सब हाल देख रहा था। उसका दिल धड़क रहा था और वह इस उम्मीद में था कि जरूर इन तीनों की वजह से उसे भी गुलिस्ताँ घाटी की राह का पता लग जायगा जिसे वह इतने दिनों से ढूंढ रहा है।

शाहजादा डेनियल ने पुन जेब से मन्सूर का लिखा कागज निकाला और पढ़ने बाद उन झाड़ियों में घुसना शुरू किया जिसका हाल हम ऊपर लिख आये हैं। ये झाड़ियाँ बहुत ही गुंजान थीं। और यही सबब था कि कुछ ही दूर जाने बाद ये तीनों टोनर की नजर से छिप गये। अब टोनर पत्थर की आड से निकला और वहाँ आया जहाँ से डेनियल और उसके साथी झाड़ियों में घुसे थे। टोनर ने भी झाड़ियों को हटाते हुए भीतर घुसना शुरू किया। उतार चढाव से भरा हुआ एक तिरछा रास्ता उसे दिखाई पड़ा जिसके चारो तरफ की झाड़ियाँ इस कदर गुंजान थी कि वे तीनों आदमी टोनर की नजरों से गायब हो गये थे।

जरिये उस नाले के दूसरी तरफ जाया जा सकता था जिधर जङ्गली झाडियों का गुनजान जङ्गल था।

पुल से पार उतरने बाद जब डेनियल लैला और क्लौडिया उस जङ्गल में पहुँचे तो फिर टोनर की नजर से गायब हो गये मगर टोनर ने भी उनका पीछा न छोडा। वह भी पुल पार उतर कर उस जङ्गल में पहुँचा और उस चक्करदार पगडडी पर चलने लगा जिस पर से ये तीनों गये थे। थोडी ही देर बाद चढाई शुरू हुई और कुछ देर बाद ये तीनों मुसाफिर एक खोह के मुहाने पर पहुँचे। डेनियल लैला और क्लौडिया तीनो उसमे घुसे और टोनर एक ऊची चट्टान के पीछे छिप कर देखने लगा कि अब क्या होता है।

अड़तीसवां बयान

टोनर पत्थर के पीछे छिपा हुआ बहुत देर तक खडा तरह तरह की बातें सोचता रहा। कभी तो वह बेखौफ गार में घुस जाने के लिये तैयार हो जाता और कभी इस खयाल से कि गार में घुसने से कहीं उन तीनों से मुलाकात न हो जाय डर कर रुक जाता, क्योंकि उसे निश्चय हो गया था कि अगर अबकी दफे क्लौडिया उसे देखेगी तो जीता कभी न छोडेगी। मगर जब कुछ देर हो गई और कोई उस गार के बाहर न निकला तो उसने समझा कि जरूर यह गार गुलिस्ता घाटी में पहुँचने का रास्ता है जहा वे तीनों आदमी इस वक्त सैर कर रहे होंगे, आखिर टोनर ने हिम्मत की और चट्टान के पीछे से निकल कर गार के मुहाने पर जा पहुँचा। पहिले उसने कान लगा कर सुना कि किसी के पैर की आहट तो नहीं आती मगर कुछ मालूम न हुई। आखिर गार में घुसा और धीरे धीरे आगे बढने लगा। उसने अपने दोनों हाथ आगे फैला दिये जिसमें कोई अनगढ पत्थर मिल जाने से ठोकर न लगे और बीच बीच में रुक रुक और कान लगा यह भी सोचता जाता था कि अगर

वापस आते हुए डेनियल वगैरह के पैरों की आहट पाऊंगा तो दबक कर दीवार के साथ हो रहूंगा मगर उसने किसी के आने की आहट न पाई और आगे बढ़ता ही गया यहां तक कि उसके फैले हुए दोनों हाथ गार के दोनों तरफ की दीवार में अड़े जिससे मालूम हो गया कि ज्यों ज्यों आगे बढ़ते हैं गार छोटी होती जाती है। यकायक उसका हाथ एक ठंडी और लचलची चीज पर लगा जिससे वह एक दम डर गया और उसे निश्चय हो गया कि यहां कोई बड़ा भारी सांप लपटा हुआ बैठा है। वह घबरा कर पीछे हटा, उसके रोंगटे खड़े हो गये और वह कांपता हुआ गार के बाहर निकल आया। मगर बाहर हो कर वह फिर सोचने लगा कि गार के अन्दर अगर सांप ही था तो फ्लोरिमा, डेनियल और लैला की जान क्योंकर बची और वे सुरक्षित घाटी से कैसे पहुंच गये? क्या यह मुमकिन है कि मसूर ने अपने कायम से बस लिया हो जिसके सबब से वह सांप दबक कर रह गया और कुछ कर न सका?

समा गया था मानो उससे कोई जुर्म कर डाला हो और यह डर हो कि अब बहुत जल्द उस पर इलजाम लगाया जायगा। जब कैरीकरामा जमीन पर बैठ गया और टटोलने की नीयत से टोनर का मुंह देखने लगा तो टोनर को ऐसा मालूम हुआ मानो वह अब कहा ही चाहता है कि 'तुम्हें गुलिस्ता घाटी का भेद मालूम हो गया' मगर केरीकरामा ने जब दूसरी बात छेड़ दी तो उसका जी ठिकाने हुआ और वह शान्ति से बातचीत करने लगा।

कैरीकरामा ने टोनर से पूछा कि जज ने तुम्हें क्योंकर छोड़ दिया और इस बारे में क्या क्या कार्रवाई हुई सो खुलासा कह जाओ। इसके जवाब में टोनर ने अपना ठीक ठीक हाल कह दिया। कैदखाने में क्लोडिमा के पहुँचने और कैरीकरामा से ताल्लुक छोड़ देने तथा उसको किसी तरह का दुःख न पहुँचाने के विषय में कसम खिलाने का हाल सुन कर कैरीकरामा को बहुत ही ताज्जुब हुआ। उसने मालूम करना चाहा कि क्लोडिमा कौन है मगर कुछ पता न लगा क्योंकि टोनर खुद नहीं जानता था कि क्लोडिमा कौन है। आखिर उसने टोनर से कहा, "तुम क्लोडिमा से एकरार कर चुके हो कि मुझसे साथ सरोकार न रक्खोगे तो मैं भी यह नहीं चाहता कि तुम अपनी कसम तोड़ो, लेकिन अगर ऐसा न होता तो मैं तुमसे यह जरूर कहता कि तुम मेरी नौकरी कर लो।"

टोनर०। मालूम होता है कि तुमने अपना गरोह फिर ठीक कर लिया।

कैरी०। यहां से तीन मील की दूरी पर बारह आदमियों का एक गरोह है जो मुझे अपना सर्दार कहते हैं, ये मेरे पुराने साथी हैं जो गाज़ी से मिल गये थे मगर अब उसे झूठा समझ उसका साथ और दिलोजान से मेरी मदद करने को तैयार हैं।

टोनर०। मैं तुम्हें मुबारकबाद देता हूँ मगर लाचार हूँ कि मैं अपनी

ाड़ कर तुम्हारे साथ नहीं रह सकता पर ताज्जुब है कि आप
ाथियों को छोड़ कर केवल एक आदमी के साथ इन जंगलों में
हैं।

री० । तुम जानते हो कि मुझको उस हरामजादे गाजी से अपना
ेना है। उसके साथियों में से थोड़े आदमी तो मेरे पास आ ही
ाकी लोगों के बारे में मालूम हुआ कि एक जगह रूसियों से
ा हो जाने पर वे लोग मारे गये, अब गाजी केवल एक आदमी
कोहकाफ के इन जंगलों में कहीं छिपा रहता है। बनिस्बत
के उसे मेरा डर बहुत है। इस समय मैं उसी की खोज में घूम
मगर तुम बताओ कि अकेले इन पहाड़ों में क्यों घूम रहे हो ?
फ्लिस से निकाले भी गये थे तो किसी और शहर में रह कर
देन बिता सकते थे (ताने से) कहीं तुम गुलिस्ता घाटी की खोज
ही घूम रहे हो॥

ीकरामा की आखिरी बात सुन कर टोनर डर गया और उसके
पसीना आ गया। इसी समय कैरीकरामा कुछ देख कर चौंक
उठ खड़ा हो गया। उसके मुंह से एक चीख निकल पड़ी क्योंकि
रह जंगी आदमियों को देखा जो छिपे हुए इसी तरफ आ रहे
र भी उठ खड़ा हुआ और जमशेद भी गार से निकल आया।
ा और जमशेद ने भी गार के पास से अपने अपने घोड़ों को
दी और दोनों घोड़े इनके पास चले आये। इतने ही में उन आने
र आदमियों में से एक जो भेड़िया था जमशेद की तरफ झपटा
ाद ने अपनी पेटी में से पिस्तौल निकाल कर उस पर फैर
ो लगते ही वह जमीन पर गिर पड़ा और मर गया।

पास आ गये थे और उन्होंने कई गोलियां इन दोनों पर चलाईं मगर कैरीकरामा और टोनर दोनों के घोड़े एक मोटे पेड़ की आड़ में थे इसलिये ये लोग बचे रहे।

कैरीकरामा कूद कर अपने घोड़े पर सवार हो गया और जोर से बोला, "जमशेद! जल्दी करो!" टोनर ने समझा कि कैरीकरामा ने मुझे कहा है। वह घोड़े पर सवार होने ही को था कि जमशेद पहुँचा और टोनर को धक्का देकर अलग कर खुद घोड़े पर सवार हो गया। कैरीकरामा और जमशेद दोनों वहां से हवा हो गये और सवारों ने उनके पीछे गोलियां चलानी शुरू कीं। टोनर उनका मुँह देखता रह गया और इसी बीच में पांच आदमियों ने वहां पहुँच कर उसे गिरफ्तार कर लिया।

चालीसवां बयान

टोनर ने अपने छूटने के लिये बहुत सी बातें बनाईं और कहा कि मैं डाकू का साथी नहीं हूँ मगर उन लोगों ने कुछ न सुना और कहा कि हम तुझे अपने सरदार के पास ले चलते हैं वहां तेरा फैसला होगा। आखिर वे लोग टोनर को गिरफ्तार करके ले चले। उसको घोड़े पर चढ़ने की आज्ञा दे दी गई। घोड़ा कस कर तैयार हुआ और वे लोग उसको अपने बीच में घेर एक तरफ को रवाना हुए। लगभग [illegible] घन्टे चलने बाद वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहां बारह घोड़े कसे कसाये मौजूद थे, वे लोग उन घोड़ों पर सवार हुए और टोनर को बीच में लेकर [illegible] की तरफ चल पड़े। लाचार टोनर तरह तरह की बातें सोचता हुआ [illegible] से रवाना हुआ। कभी गुलिस्तां घाटी के मिलने से बिल्कुल नाउम्मीद हो जाता और कभी उसे आशा होती कि मैं इन लोगों के [illegible] के पास पहुँच कर अवश्य छोड़ दिया जाऊँगा और फिर इस [illegible]

कर गुलिस्ता घाटी में जाने का बन्दोबस्त करूंगा। इसी उम्मीद पर टोनर रास्ते की तरफ भी खूब ध्यान लगाता रहा जिसमें लौटती समय भूल न जाय।

शाम होते होते ये लोग एक नहर के किनारे पहुँचे। उन लोगों ने घोड़ों से उतर कर कुछ खाना खाया जो इनके साथ मौजूद था तथा टोनर को भी कुछ खाने को दिया। इस काम से छुट्टी पाकर सब घोड़ों पर सवार हो पुनः रवाना हुए और रात भर बराबर चले गये। सुबह को फिर एक नहर के किनारे पहुँचे और घोड़ों से उतर हाथ मुह धो कुछ भोजन करने बाद फिर घोड़ों पर सवार हो चल पड़े। शाम को तीन बजे वे लोग एक ऐसे मैदान में पहुँचे जो बहुत लम्बा चौड़ा था और जिसके चारो तरफ पहाड़ और एक तरफ पहाड़ी की चोटी पर मजबूत छोटा सा किला भी था। जैसे ही वे लोग उस मैदान में पहुँचे कई सवार किले से निकल कर मैदान की तरफ आते दिखाई पड़े जिनमें से एक सबसे आगे आगे था। उसकी बेशकीमत पोशाक ने टोनर को विश्वास दिला दिया कि यही इन लोगों का सर्दार है और यह किला जरूर कोई कैद-खाना है जिसमें मैं कैद किया जाऊंगा। यह सोचते ही टोनर कांप गया और यह विचार करके कि देखें यह सर्दार मेरे लिये क्या हुक्म देता है उसका कलेजा धड़कने लगा।

और कहा, "आगे बढ और अपना हाल हमारे बादशाह सुल्तान इस-माइल से जो तेरे सामने खडे है बयान कर।"

अब टोनर को मालूम हुआ कि यह कोहकाफ के मुल्कों का बादशाह सुल्तान इसमाइल है जिसकी जवांमर्दी की तारीफ दूर दूर तक मशहूर है।

सुल्तान इसमाइल ने सर्दार की तरफ देख कर पूछा, "क्यों हमीद! यह जवान कौन है जिसे तुम मेरे पास लाये हो ? क्या यह नौकरी चाहता है ?"

इसके जवाब में हमीद ने कहा, "जी नहीं, यह एक डाकू है जिसे हम लोगों ने गिरफ्तार किया है।"

सुल्तान इसमाइल ने ताज्जुब के साथ कहा, "क्या यह नौजवान डाकू है! अच्छा हमीद! तुम खुलासा हाल कह जाओ कि इसे क्योंकर और कहां गिरफ्तार किया ?"

हमीद ने यों कहना शुरू किया.—

"हुक्म के मुताबिक हम लोग रूसी फौज का पता लगाने के लिये उस तरफ गये जिधर उस के आने की खबर हुजूर ने सुनी थी। कई दिनों तक परेशान रहे और हर तरह से पता लगाया मगर रूसी फौज के बारे में कुछ भी मालूम न हुआ। निश्चय हो गया कि वह खबर झूठी थी जो आप के कानों तक पहुँचाई गई। हम लौटने वाले थे कि एक आदमी से मुलाकात हुई जो बहुत ही उदास सुस्त और भूखा मालूम होता था मगर उसकी सुर्ख आंखें कहे देती थीं कि यह किसी से बदला लेने की धुन में है जिसने इसे सताया है। हम लोगों ने उसे खाने का दिया और बातचीत में उसकी जबानी मालूम हुआ कि इस तरफ रूसी फौज के आने की खबर बिल्कुल झूठ है हां यहां एक गरोह डाकुओं का जरूर है जिसकी सर्दारी मशहूर कैंसीकरामा करता है।"

इतना सुनने ही सुल्तान इसमाइल चौंका और बोला, 'क्या वही

ाकरामा जिसकी गिरफ्तारी पर इनाम का इश्तिहार हमारे और रूसियों
ो की तरफ से दिया गया है ?"

हमीद० । जी हां, वही कैरीकरामा । और उस आदमी ने यह भी
ा कि वह कैरीकरामा का पता बता कर उसे गिरफ्तार करा देगा जो
ी जंगल में थोड़ी दूर पर है ।

टोनर० । (दिल में) बेशक यह गाजी की शैतानी है उसी ने कैरी-
ामा का पता दिया होगा ।

सुल्तान० । अच्छा अच्छा, फिर क्या हुआ ?

हमीद० । उसने पता तो बताया मगर खुद हम लोगों के साथ चलने पर
जी न हुआ जिससे हम समझ गये कि यह जरूर उससे डरता है और
मकिन है कि खुद उसके साथियों में से रहा है मगर अब बागी हो गया है ।

सुल्तान० । तब क्या हुआ ?

हमीद० । उसने एक और आदमी को जो वहीं छिपा हुआ था हमारे
ाथ कर दिया बल्कि खुद भी थोड़ी दूर तक साथ चला मगर मौका
मिलने पर भाग गया । हम लोग वहां पहुंचे जहां कैरीकरामा था मगर
अफसोस, वह गिरफ्तार न हो सका और बहुत सी गोलियां चलाने पर
ी निकल गया ।

सुल्तान० । अफसोस ! अगर वह हाथ लगता तो आज इसी किले
ी चोटी पर फांसी दे दिया जाता ।

हमीद० । मगर यह एक उसका साथी गिरफ्तार हुआ है ।

इसी समय टोनर ने उज्र किया और हर तरह से कहा कि मैं कैरी-
करामा का साथी नहीं हूं, मगर कुछ सुना न गया । अन्त में सुल्तान ने
हमीद की तरफ देख कर कहा, "हमीद ! इसे ले जाओ और किले की
उस कोठरी में कैद करो जिसमें फ्रांसीसी जासूस टारवट कैद है । है तो
यह इस लायक कि फांसी दिया जाय मगर इसकी जवानी पर रहम
खा कर इसे जन्म भर कैद में रखने का हुक्म दिया जाता है ।

यह कह सुल्तान एक तरफ को चला गया और दोही घंटे बाद टोनर ने अपने को किले में कैद पाया।

इकतालीसवां बयान

जिस मकान में टोनर कैद किया गया उसी में डारवल नामी एक फ्रान्सीसी जासूस भी पांच वर्ष से कैद था, जिससे वहां पहुँचते ही टोनर की मुलाकात हुई। उसकी बातचीत से टोनर को मालूम हो गया कि अब वह किसी तरह यहां से नहीं छूट सकता और न भाग ही सकता है क्योंकि इस किले की दीवार बहुत ही मजबूत और मोटी है, सुल्तान हुसमाइल खुद यहां नहीं रहता, यह उसकी मेगजीन है, और थोडी बहुत फौज भी रहती है। बूढ़े डारवल की जबानी टोनर को यह भी मालूम हुआ कि यहां कैदियों को एक चटाई और एक कम्मल और जाडे में आग तापने के लिये लकडी के अतिरिक्त खाना भरपूर मिलता है तथा चिराग जलाने लिये तेल रोज मिलता है।

यह कैदखाना बहुत खुलासा एक बुर्ज के नीचे था। इसमें रहने वाले कैदी सीढ़ियों की राह बुर्ज पर चढ जा सकते थे जहां टहलने के लिये जगह और ताजी हवा मिल सकती थी मगर यहां का कैदी किसी तरह भाग नहीं सकता था। डारवल और टोनर में बहुत देर तक बातचीत होती रही। शाम होते होते कैदखाने का दर्वाजा खुला और एक आदमी नये कैदी के लिये कम्मल और चटाई तथा दोनों कैदियों का खाना लेकर आया।

टोनर को डारवल के साथ कैदखाने में रहते कई महीने गुजर गये। इसी बीच में टोनर ने अपना हाल डारवल से कहा मगर इस बात का जिक्र न किया कि वह गुलिस्ता घाटी की दौलत पाने के फेर में पड़ा हुआ है। डारवल ने भी अपना हाल कहा जिसमें उसने बयान किया कि मैं फ्रान्स का रहने वाला हूँ, ऐयाशी में जब अपनी निज की दौलत गों

चुका तो इल्म सीखने का शौक़ चढ़ा और कई तरह का इल्म सीखने बाद जंगल पहाड़ियों में घूमने और जगह जगह की तस्वीरें उतारने लगा। यकायक मैं इस किले के मैदान में भी आ पहुँचा और इस किले की तस्वीर उतारी। यहा वालों ने मेरी बड़ी खातिर की। जब मैं यहां से रवाना हुआ तो इत्तफाक से बहुत से रूसी सिपाही मुझे मिले, बात-चीत होने पर जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं तस्वीर खींचने वाला हूँ तब उन्होंने मेरी बड़ी खातिर की, अपने साथ खाना खिलाने बाद एक एक करके कुछ तस्वीरें देखने लगे जो बहुत दिनों में मैंने खींची थीं। जब इस किले की तस्वीर पर उनकी निगाह पड़ी वे बहुत ही खुश हुए और मुझसे आज्ञा लेकर उस तस्वीर की नकल करने लगे, उसी समय सुल्तान इस्लाइल के बहुत से सवार आ पहुंचे और रूसियों पर टूट पड़े, कितने रूसी मारे गये और बहुत से भाग गये। मैं दूर जा खड़ा हुआ था सो पकड़ा गया। जब यहा लाया गया और यहा के लोगों ने मुझे पहिचान कर सुल्तान से कहा कि थोड़े ही दिन हुए यहा आकर यह इस किले की तस्वीर उतार ले गया है तो मेरी तलाशी ली गई। बहुत सी तस्वीरों में इस किले की तस्वीर निकली और वह नक्शा भी निकला जो रूसी सिपाही मेरा तस्वीर से नकल कर रहा था। बस साबित हो गया कि मैं जासूस हूं और रूसियों के लिए यहा का नक्शा उतारने आया था और इसी जुर्म में मैं कैद कर लिया गया मगर वास्तव में ये सब बातें इत्तफाक से ही हुई।

पारनल बड़ा ही बुद्धिमान आदमी था। उसकी हिम्मत भरी बात-चीत से टोमर को विश्वास हो गया कि यह जरूर कोई न कोई ऐसी तदबीर करेगा जिससे हम लोग इस कैद से छूट जावेंगे अस्तु वह उसी समय से पारनल के हुक्म में रहने लगा। पारनल को जो शराब मिलती थी उसे वह बचा रखता था बल्कि टोमर को भी उसने शराब पीने की मनाही कर दी थी और उसके हिस्से की भी शराब बचा रखता था।

एक दिन टोनर के बहुत जिद्द करने पर डारवल ने कहा, "मैं एक गुब्बारा बना रहा हूं, तैयार होने पर इसी के जरिये से उड़ कर यहां से निकल जाऊंगा और तुमको भी अपने साथ लेता जाऊंगा।

टोनर०। गुब्बारा बनाने का सामान तुम्हें इस कैदखाने में क्यों कर मिला?

डारवल०। तुम देख चुके हो कि इस ऊपर के बुर्ज में एक ऊंचे खाम्भ पर रेशम का फरहरा (ध्वजा) है जो उस समय तक बराबर लगा रहता है जब सुल्तान यहां रहता है।

टोनर०। हां देख चुका हूँ, मुझे कैद करने बाद जब सुल्तान यहां से रवाना हुआ तो वह ध्वजा उतार ली गई।

डारवल०। दो बरस हुए कि एक दिन आंधी में वह फरहरा जिसमें मेरे काम लायक कपड़ा था मैंने चुरा लिया और छिपा रक्खा। लोगों ने समझा कि आंधी में उड़ गया और उसके बदले में दूसरी ध्वजा चढ़ाई गई। उसी कपड़े का मैंने गुब्बारा तैयार किया है।

टोनर०। इसे तुमने रक्खा कहां है? कहीं दिखाई तो पड़ता नहीं।

डारवल०। यह पत्थर का चबूतरा जिस पर मैं सोता हूँ नीचे से पोला है। पहिले पोला न था, मगर मैंने धीरे धीरे पोला किया है और उसकी मट्टी जब जब आंधी चलती रही बुर्ज पर चढ़ के उड़ा देता रहा, जिसमें किसी को कुछ शक न हो। उठो अपना सामान तुम्हें दिखाता हूँ।

यह कह डारवल टोनर को चबूतरे के पास ले गया और उसके नीचे से लकड़ी का एक पीपा निकाल कर बोला, "देखो यह पीपा मुझे बैठने के लिये कुर्सी की जगह पर मिला था मगर शराब रखने के लिये मैंने इसे छिपा रक्खा और कह दिया कि ज्यादे जाड़ा मालूम होने पर जला दिया। अपने और तुम्हारे हिस्से की शराब जो मैं बचाता रहा हूँ वह सब इसी में रक्खी है।" इतना कह डारवल ने वह रेशमी कपड़े का गुब्बारा जो अभी पूरी तौर पर तैयार नहीं हुआ था निकाला।

डारवल० । दारोगा से यह कह कर मैंने सूई लेली थी कि मेरे कपड़े फटे हैं सीऊंगा । उसी सूई से यह गुब्बारा तैयार किया है, मेरे पास नक्शा खैंचने का जो कुछ सामान था सब छीन लिया गया था, इत्तफाक से दो चार रबड के टुकडे और एक पेन्सिल मेरे जेब में रह गई थी। उन्हीं रबड के टुकड़ों को अलसी के तेल में जो चिराग बालने के लिये मिलता है पका कर और उसमें शराब मिला कर वारनिस तैयार की। वही रोगन इस कपडे पर चढाया गया है। अब न यह पानी से भींग सकता है और न इसमें भरा हुआ भाफ या धूआ बाहर निकल सकता है।

टोनर० । (खुश होकर) तुम्हारी चालाकी और इतने दिन की मेहनत का बेशक अच्छा नतीजा निकलेगा।

डारवल० । (एक लकडी की चौकी निकाल कर) ऊपर झंडे में ध्वजा चढाने की जो रस्सी लपटी रहती थी उसी से यह ढांचा जलाने वाली लकडियों को बाध के तैयार किया है। इसे गुब्बारे में बाध कर हम तुम दोनों इसमें बैठेंगे और बचाई हुई शराब आग पर जोश देकर उसी की भाप इसमें भर कर यहा से उड जायेंगे।

इसके बाद डारवल ने सब सामान जहा का तहां रख चबूतरे पर बिछौना बिछा दिया और टोनर उसकी चालाकी की तारीफ करता हुआ बोला, "चलो बुर्ज के ऊपर चल कर हवा खायें और कुछ बातचीत करें।"

बयालीसवां बयान

टोनर ने अपने दिल में खयाल किया कि डारवल बडा ही बुद्धिमान आदमी है, अस्तु गुलिस्ताघाटी का हाल इससे कहने में कोई हर्ज नहीं है, यह कोई तदबीर ऐसी जरूर निकालेगा कि जिसमें इस खोह में दर्वाजे पर बैठे हुए चार से बच कर अन्दर जा पहुंचें, इसमें तो कोई शक नहीं कि यह गुलिस्ताघाटी के भेद को जान जायगा, मगर कोई हर्ज नहीं, वहां

की बेशुमार दौलत किसी तरह कम न होगी। सिवाय इसके यह बहुत बूढ़ा भी हो चुका है कब तक जीता रहेगा और कितना खर्च करेगा, आखिर डेनियल कलोडिमा और लैला को वहां का भेद मालूम हो ही चुका है, मुझे उन लोगों के लिये भी कोई बन्दोबस्त करना ही पड़ेगा, सो उसी में इसे भी समझ लिया जायगा, इत्यादि बहुत सी बातों को सोच विचार कर और अपना फायदा समझ कर गुलिस्तांघाटी का हाल बूढ़े डारवल से कह देना टोनर ने मुनासिब समझा और आखिर ऐसा ही किया। मीठी मीठी बात चीत और डारवल की तारीफ करते हुए टोनर ने गुलिस्तांघाटी का हाल भी बूढ़े से कह दिया मगर डेनियल लैला और कलोडिमा का कुछ जिक्र न किया। बूढ़ा डारवल वहां का हाल सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला :—

'बेशक वहां पहुँच कर हम लोग बड़ी खुशी से जिन्दगी बितावेंगे। मैं बहुत दिनों से किस्से कहानियों के तौर पर सुनता चला आता हूं कि पृथ्वी पर कोई ऐसी जगह है जो स्वर्ग की बराबरी करती है और जहां की बेशुमार दौलत का किसी तरह अन्दाजा नहीं हो सकता मगर टोनर तुम बड़े ही खुशनसीब हो कि उसके दर्वाजे तक हो आये हो।"

टोनर०। अगर वह सांप न होता तो मैं इस समय वहां की दौलत का मजा लेता होता!!

डारवल०। ओह, वह सांप कोई चीज नहीं है असल में वह जो कुछ है मैं समझ गया। उसके लिये कुछ सोचने या विचारने की जरूरत नहीं है।

थोड़ी देर तक बातचीत करने बाद दोनों नीचे उतर आये और अपनी अपनी जगह पर सो रहे।

टोनर को डारवल के साथ इस तहखाने में रहते और कई महीने बीत गये, इस बीच में अकसर रात को उठ कर ये दोनों गुब्बारा बनाने का काम करते और जब वह गुब्बारा हर तरह से तैयार हो गया तो इस

बात की राह देखने लगे कि जाड़े की लम्बी रातें आवें तो हम लोग इस गुब्बारे का फायदा उठायें अर्थात् यहां से उड़ें और गुलिस्तां घाटी में पहुंच कर आनन्द करें।

आखिर जाड़े का मौसिम आ गया और कृष्णपक्ष की एक रात को मौका पाकर दोनों कैदियों ने गुब्बारे पर उड़ने की तैयारी की। धीरे धीरे वे दोनों सब सामान उठा कर बुर्ज के ऊपर ले गये और एक सीढ़ी के नीचे ही रोशनी करने का बन्दोबस्त किया जिसमें क़िले के नीचे पहरा देने वालों को बुर्ज के ऊपर की चमक मालूम न हो। झण्डे में की रस्सियां गुब्बारे के काम में खर्च की गईं।

गुब्बारे के एक सिरे की रस्सी झन्डे के नीचे वाले मजबूत हिस्से में बांध दी गई जिसमें धूंआ भरने पर गुब्बारा ऊपर की तरफ उठने के लिये जोर न करे, इसके बाद मशाल जो पहिले ही से तैयार थी शराब में तर करके बाली और गुब्बारे में गैस भरने लगे। धीरे धीरे गुब्बारा ऊंचा होने लगा जब अच्छी तरह गैस भर गई तब लंगर ठीक रखने के लिये दो तीन टोंके पत्थर के जिसमें ईंट और चूना मिला हुआ था और जो टारवल ने अपने सोने वाले चबूतरे से तोड़े थे उस पर लादे और इसके बाद ये दोनों बैठने वाले खटोले पर सवार हो गये जो जलाने के लिये टारटी का बनाया था। वह रस्सी काट दी गई जो झण्डे के साथ बंधी हुई थी और गुब्बारा एक दम ऊपर को उठा, उत्तरा हवा उसे अपने रुख पर ले चली जिसे इन लोगों ने गुलिस्तां घाटी में पहुंचने के लिये अपने मतलब का समझा था और सच तो यों है कि इसी हवा के लिये टारवल कई दिनों तक रुका रहा था।

तेंतालीसवां बयान

गुब्बारे का लंगर ठीक रखने के लिये जो टोंके लादे गये थे वह बहुत बड़े न थे तो भी गुब्बारा ऊंचा होने पर जब इन लोगों ने उसे

नीचे फेंका तो बुर्ज के ऊपर और नीचे के महल में बड़े जोर की आवाज हुई। इस आवाज ने चारो तरफ खलबली मचा दी। बहुत से सिपाही दौड़े और मशाल बाल कर चारो तरफ देखने लगे। जब कुछ पता न लगा तब अफसर ने हुक्म दिया कि जिस मकान में कैदी हैं उसमें जाओ और बुर्ज के ऊपर चढ़ कर देखो। आखिर सिपाहियों ने कैदखाने का दरवाजा खोला, अन्दर दोनों कैदियों में से किसी को न पा कर बहुत घबड़ाये और बुर्ज पर चढ़ कर ढूंढने लगे। सिवाय खाली पीपे के वहां और कुछ न पाया और छड़े में जो बहुत रस्सी लपटी रहती थी उसे भी न देख सभों की जान सूख गई। पहिले तो समझे कि उसी रस्सी के सहारे कैदी नीचे उतर कर भाग गये मगर फिर सोचा कि अगर रस्सी के सहारे वे लोग उतर जाते तो रस्सी गायब न होती बल्कि उसका दूसरा सिरा इस बुर्ज में किसी जगह बंधा रहता। जरूर वहां से किसी दूसरी तरह से भागे हैं।

कैदियों के भाग जाने पर वहां के सिपाहियों में बेचैनी फैल गई और यह समझ कर कि इस गफलत के सबब सुल्तान इसमाईल बुरी तरह पेश आवेंगे, अफसर ने दूर दूर तक ढूंढने के लिये बहुत से सिपाही रवाना किये।

हवा बहुत तेज थी इसलिये गुब्बारा तेजी के साथ उड़ा जाता था। कभी कभी जब हवा के झोंके से गुब्बारा डगमगाता तो मारे डर के टोनर की जान निकल जाती और यकायक खौफ में आ कर वह गुब्बारे की रस्सियों से इस तरह चपक जाता जैसे मालूम होता था कि अभी जान निकली जाती है मगर खौफ के मारे वह डाक्टर से कुछ कह भी न सकता था।

गुब्बारा तेजी के साथ बहुत दूर निकल गया यहां तक कि आसमान पर सुबह की सुफेदी फैल गई, हवा अच्छी मालूम होने लगी। गुब्बारा हिलता डगमगाता बादलों के बीच में चला जाता था। अब जरा तेज

हुई और गुब्बारा ज्यादे डगमगाने लगा। बूढ़े डारवल ने भी रस्सी मजबूती से पकड़ ली और खुश हो कर चारो तरफ देखने लगा। धीरे धीरे सूर्य निकल आया और इसी के साथ साथ गुब्बारे की ताकत भी कम होने लगी जिससे वह धीरे धीरे नीचे को उतरने लगा। इस समय गुब्बारा इन पहाड़ों की तरफ जा रहा था जिधर गुलिस्ता घाटी थी। यकायक खुशी के मारे टोनर के मुंह से निकल पड़ा, "वाह वाह! ताज्जुब नहीं कि हमारा गुब्बारा गुलिस्ता घाटी के पास ही उतरे।"

डारवल०। टोनर! तुम अपने नीचे की इन पहाड़ियों पर गौर करते जाओ! मुझे खूब याद है कि तुमने कहा था कि सब से ऊंची एक पहाड़ी है जो बीच से फटी हुई है और वहीं से गुलिस्ता घाटी का रास्ता है।

टोनर०। हां हां, मैं उसे देखते ही पहिचान लूंगा।

डारवल०। कहीं ऐसा न हो कि हम उससे आगे निकल आये हों क्योंकि रात को हवा बहुत तेज थी और गुब्बारा बड़ी तेजी के साथ निकलता चला आया है मगर नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। अब गुब्बारे की ताकत कम हो जाती है और हम धीरे धीरे नीचे उतर रहे हैं।

यकायक टोनर चौंक उठा और हाथ का इशारा करके बोला, "देखो देखो वही वह फटी हुई चोटी है जिसके पास गुलिस्ता घाटी है।"

डारवल कुछ देर तक गौर से उस तरफ देखता रहा और तब बोला, "हां मुझको भी वह फटी हुई चोटी दिखाई दी, मगर मैं जहां तक समझता हूं गुब्बारे में वहां तक पहुंचने की ताकत अब नहीं रही फिर भी हम लोग उस पहाड़ी के पास ही कहीं उतरेंगे।

वह गुब्बारा बहुत धीरे धीरे जमीन की तरफ झुकता हुआ जा रहा था। डारवल रस्सी में दबे हुए एक लोहे के खूंटे को सम्हालने लगा कि जरूरत हो तो उसे काम में लाया जाय।

टोनर०। क्या यह नहीं हो सकता था कि हम गुलिस्ता घाटी के ...र उतर ०

नीचे फेंका तो बुर्ज के ऊपर और नीचे के सहन में बड़े जोर की आवाज हुई। उस आवाज ने चारो तरफ खलबली मचा दी। बहुत से सिपाही दौड़े और मशाल बाल कर चारो तरफ देखने लगे। जब कुछ पता न लगा तब अफसर ने हुक्म दिया कि जिस मकान मे कैदी हैं उसमें जाओ और बुर्ज के ऊपर चढ़ कर देखो। आखिर सिपाहियो ने कैदखाने का दर्वाजा खोला, अन्दर दोनों कैदियों में से किसी को न पा कर बहुत घबड़ाये और बुर्ज पर चढ कर ढूंढने लगे। सिवाय खाली पीपे के वहा और कुछ न पाया और झंडे में जो बहुत रस्सी लपटी रहती थी उसे भी न देख सभों की जान सूख गई। पहिले तो समझे कि उसी रस्सी के सहारे कैदी नीचे उतर कर भाग गये मगर फिर सोचा कि अगर रस्सी के सहारे वे लोग उतर जाते तो रस्सी गायब न होती बल्कि उसका दूसरा सिरा इस बुर्ज में किसी जगह बंधा रहता। अस्तु जरूर वे किसी दूसरी तरह से भागे हैं।

कैदियों के भाग जाने पर वहां के सिपाहियों में बेचैनी फैल गई और यह समझ कर कि इस गफलत के सबब सुल्तान इस्माईल बुरी तरह पेश आवेंगे, अफसर ने दूर दूर तक ढूंढने के लिये बहुत से सिपाही रवाना किये।

हवा बहुत तेज थी इसलिये गुब्बारा तेजी के साथ उडा जाता था। कभी कभी जब हवा के झोंके से गुब्बारा डगमगाता तो मारे डर के टोनर की जान निकल जाती और यकायक खौफ में आ कर वह गुब्बारे की रस्सियों से इस तरह चपक जाता जैसे मालूम होता था कि उसकी जान निकली जाती है मगर खौफ के मारे वह डारचल से कुछ कुछ भी न सकता था।

गुब्बारा तेजी के साथ बहुत दूर निकल गया यहा तक कि आस्मान पर सुबह की सुफेदी फैल गई, हवा अच्छी मालूम होने लगी। गुब्बारा हिलता डगमगाता बादलों के बीच में चला जाता था। अब हवा तेज

हुई और गुब्बारा ज्यादे डगमगाने लगा। बूढ़े डारवल ने भी रस्सी मजबूती से पकड़ ली और खुश हो कर चारो तरफ देखने लगा। धीरे धीरे सूर्य निकल आया और इसी के साथ साथ गुब्बारे की ताकत भी कम होने लगी जिससे वह धीरे धीरे नीचे को उतरने लगा। इस समय गुब्बारा उन पहाड़ों की तरफ जा रहा था जिधर गुलिस्ता घाटी थी। यकायक खुशी के मारे टोनर के मुंह से निकल पड़ा, "वाह वाह! ताज्जुब नहीं कि हमारा गुब्बारा गुलिस्ता घाटी के पास ही उतरे।"

डारवल०। टोनर! तुम अपने नीचे की इन पहाड़ियों पर गौर करते जाओ! मुझे खूब याद है कि तुमने कहा था कि सब से ऊंची एक पहाड़ी है जो बीच से फटी हुई है और वहीं से गुलिस्ता घाटी का रास्ता है।

टोनर०। हां हां, मैं उसे देखते ही पहिचान लूंगा।

डारवल०। कहीं ऐसा न हो कि हम उससे आगे निकल आये हों क्योंकि रात को हवा बहुत तेज थी और गुब्बारा बड़ी तेजी के साथ निकलता चला आया है मगर नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। अब गुब्बारे की ताकत कम हो जाती है और हम धीरे धीरे नीचे उतर रहे हैं।

यकायक टोनर चौंक उठा और हाथ का इशारा करके बोला, "देखो देखो वही वह फटी हुई चोटी है जिसके पास गुलिस्ता घाटी है।"

डारवल कुछ देर तक गौर से उस तरफ देखता रहा और तब बोला, "हां मुझको भी वह फटी हुई चोटी दिखाई दी, मगर मैं जहां तक समझता हूं गुब्बारे में वहां तक पहुंचने की ताकत अब नहीं रही फिर भी हम लोग उस पहाड़ी के पास ही कहीं उतरेंगे।

अब गुब्बारा बहुत धीरे धीरे जमीन की तरफ झुकता हुआ जा रहा था। डारवल रस्सी में बंधे हुए एक लोहे के अंकुड़े को सम्हालने लगा कि जरूरत हो उसे काम में लाया जाय।

टोनर०। क्या यह नहीं हो सकता था कि हम गुलिस्ता घाटी के अन्दर उतरें?

बूढ़े डारवल ने फिर से उस फटी हुई चोटी की तरफ देखा और गुब्बारे के उतार का अन्दाजा कर के सिर हिला कर कहा, "नहीं, वहा तक नहीं जा सकते बल्कि मुझे तो यह डर है कि कहीं ऐसा न हो कि किसी पहाड की जड या ऐसी गार में हम उतरें जहाँ से उतरना और चढ़ना दोनों मुश्किल हो और जहां भूखे तडप तडप कर जान देनी पड़े।"

टोनर०। (उदास हो कर) तब तो हम बडी मुसीबत में पडे गे।

इस समय वह गुब्बारा जमीन से लगभग चौथाई मील के ऊंचा था और उसके ठीक नीचे एक बडा नाला बह रहा था जो आगे बढ़ कर चट्टानों के अन्दर गायब हो जाता था। सिवाय इसके जिस तरफ निगाह जाती वर्फ ही वर्फ दिखाई देती थी। पहाडियों और पेडो पर चमकती हुई सूर्य की किरणों के पडने के अजब बहार दिखाई देती थी। पास ही में एक मैदान भी दिखाई दे रहा था जो एक दम चौरस था और यहीं डारवल ने उतरने का इरादा किया।

गुब्बारा कुछ और नीचे उतर आया यहा तक कि सिर्फ पन्द्रह बीस हाथ जमीन से ऊंचे रह गया। डारवल ने रस्सी से बंधा हुआ अकुड़ा लटकाया जिसने एक झाडी में अड कर झटके के साथ गुब्बारे को रोक लिया। रस्सा खैंच कर डारवल ने गुब्बारे को नीचा किया और दोनों उस पर से कूद पडे। इस समय दोनो की खुशी का कुछ ठिकाना न रहा, दोनों ने आपुस मे एक दूसरे के गले मिल कर मुबारकबादी दी। दोनों को खूब भूख लगी हुई थी मगर इस जंगल में कोई चीज ऐसी न मिली जिससे वे पेट भरते। सर्दी भी बहुत ज्यादे पड़ रही थी।

टोनर०। अगर हम उस पहाडी के अन्दर पहुँच जायें तो गर्म मौसिम के स्वादिष्ट फल हमको बहुत मिल सकते हैं।

डारवल०। तुम्हारे खयाल में गुलिस्ताँ घाटी की उस राह में हम इस समय कितनी दूर होगे ?

टोनर० । (गौर करके और चारो तरफ देख के) हम लोग उस जगह से जहां मुझे सुल्तान इसमाईल के सिपाहियों ने गिरफ्तार किया था, लगभग डेढ मील की दूरी पर होंगे, चलो हम लोग उसी जगह पर चलें, जहा से वह नाला पार हो कर गुलिस्ता घाटी में जाने का रास्ता मिलता है। उसे हम लोग बहुत जल्द पावेंगे।

डारवल० । अच्छी बात है। चलो, वहा पहुँच कर फिर हम लोग अपनी तदबीर से उन कठिनाइयों को दूर कर लेंगे जो गुलिस्ता घाटी के अन्दर जाने की बाधक हैं और उस अजदहे के बारे में भी कुछ तरकीब निकाल लेंगे।

टोनर वहाँ से आगे बढा डारवल उसके पीछे पीछे चलने लगा। पौन घन्टे में टोनर उस जगह पहुंचा जहा सुल्तान इसमाइल के सवारों ने उसे गिरफ्तार किया था। उस जगह की छटा उसे याद आई मगर वह साफ चश्मा जिसमें से उसने पहिले पानी पीया था अब बढ कर एक नदी बन गया था और वे पेड़ जिसमें के कई महीने पहिले उसने फल तोड कर खाये थे अब मुर्झा गये थे क्योंकि प्रकृति ने इस समय कठिन जाड़े की पोशाक पहिन ली थी। टोनर को उस छोटे गार का ध्यान आया जहां वह ठहरा करता था। उसे चिराग तेल दियासलाई की भी सुध आई। उसने सोचा कि अगर वे चीजें अब तक वहां हों और मिल जावें तो उन्हें ले और अन्धेरे गार में जो गुलिस्ताघाटी का रास्ता है वहां ही काम देंगी।

कुछ देर सुस्ताने बाद वहां से रवाना हुए। यद्यपि उस स्थान की सूरत बहुत बदल गई थी और मौसिम बहार की तरक्की को कठिन जाड़े ने मटियामेट कर दिया था तो भी टोनर को रास्ता पाने में कुछ कठिनाई न हुई। पहाड़ की चोटी हुई कर उसे रास्ता बता रही थी, मगर जब वह चला जा रहा था तो उसके मन में बहुत सी बातें सोचने का ... रही थी और वह सोच रहा था कि अगर वह दुष्ट डैनियल इस समय

-गुलिस्ता घाटी में हुआ तो क्या होगा? और कदाचित कलौडिसा भी वहा हुई तो वे लोग जरूर ही हमारा मुकाबला करेंगे। इसमें कोई शक नहीं कि शाहजादे के पास हथियार होंगे, डारवल और मैं किसी तरह पर उनका मुकाबला न कर सकूंगा, तथा मेरी पिछली बातों पर ध्यान दे कर कलौडिसा भी जरूर मुझे सजा देने के लिए तैयार हो जायगी। मगर फिर यह भी तो हो सकता है कि कलौडिसा और डेनियल यहां आ कर और बहुत कुछ माल खजाना ले कर चले गये हो और फिर उन लोगों को यहा आने की जरूरत न पडी हो। खैर कम से कम नाले तक तो चल कर देखना ही चाहिये अगर वे लोग वहा होंगे तो उनके घोड़े भी जरूर वहीं कहीं दिखाई पड़ेंगे।

टोनर ने डारवल के सामने डेनियल और कलौडिसा का नाम न लिया क्योंकि उन लोगों का नाम लेने से उसे और भी बहुत सी बातें कहनी पडतीं जिससे उसकी कलई खुल जाती जो वह किसी तरह नहीं चाहता था। आखिर दोनों गार के मुहाने पर पहुँच गये। यहाँ टोनर ने किसी आदमी के आने का निशान न पाया और न कुछ खाने की चीज या शराब की बोतल ही वहा दिखाई पड़ी।

टोनर ने अपनी दिलजमई करके फिर चलाना शुरू किया और डारवल भी उसके पीछे पीछे जाने लगा।

टोनर०। अब हम उस ढालुएं रास्ते से उतर और घनी झाडियों में जिन्होंने रास्ते को छिपा रक्खा है चल कर बहुत जल्द ठिकाने पर पहुँचा चाहते हैं मगर यह तो बताओ कि उस खूंखार अजदहे से जो नाले के उस तरफ वाले गार में है कैसे मुकाबला करेंगे?

डारवल०। मैंने उस अजदहे के बारे मे कई दफे विचार किया मगर अभी तक अपने दिल का हाल तुमसे कहा नहीं। क्या तुम यह समझते हो कि जब तुम गार में घुसे थे तो उस अजदहे पर किसी मन्त्र का असर था?

टोनर०। फिर तुम क्या समझते हो?

टारवल०। अगर यह मान भी लिया जाय कि उस समय जब तुम गार में गये थे तो वहां कोई साप था तो यह कि क्या जरूरी है कि वह अभी तक वहां बैठा ही हो क्योंकि ऐसे जन्तु कभी एक जगह पर बैठे नहीं रहते दूसरे अगर वह गार में हो भी तो आज कल की सर्दी ने उसे अधमुआ कर दिया होगा, मगर असल में तो मैं यह समझता हूँ कि वह जरूर कोई मूरत होगी। टोनर! तुम खूब समझ रक्खो कि इन मुल्कों में साप एक डरावनी चीज समझी जाती है और इसलिये अक्सर लोग इसकी मूरत या तस्वीर ऐसी जगहों पर रक्खा करते हैं जहां किसी गैर का जाना उन्हें मंजूर न हो और मुझे यकीन है कि जरूर ऐसी ही कोई मूरत गुलिस्ता घाटी के दर्वाजे पर रक्खी गई होगी।

टोनर ने डारवल की बात बड़े गौर से सुनी और जी में सोचा कि जो कुछ यह बुद्धिमान बूढ़ा कहता है बहुत ठीक है। वह जरूर पीतल या किसी धातु की मूरत ही होगी जिस पर गार के अन्दर की नमी के कारण हिर्दालिग्राइट आ गई होगी और जिससे कि मुझे जीते साप का शक हुआ था।

टोनर०। बेशक मैं तुम्हारी अक्लमन्दी का कायल हूँ, तुमने जो कहा सो ठीक है और अब मुझे किसी तरह का डर नहीं है, तौ भी यह मुनासिब है कि हम लोग मजबूत डण्डिया या और कोई हथियार अपने बचाव के लिये साथ लेते चलें।

अन्त में राय पक्की हो गई और दोनों आदमी वहां से आगे बढ़े।

चौवालीसवां बयान

टोनर झाड़ियों के अन्दर घुस निकला, पीछे पीछे डारवल भी चला जाता था। इस समय वह रास्ता वैसा डरावना न था जितना टोनर ने पहिले देखा था, क्योंकि धूप ने बहुत सी ऊंची नीची जगहों को ढांक

रक्खा था। दोनों मुसाफिरो के हाथ में लकडी के डंडे थे जिनसे वे जमीन साफ करते चले जाते थे।

उतार के नीचे पहुँच कर डारवल और टोनर ने अपने को नाले में पाया। टोनर ने देखा कि बनिस्बत पहिले के इस समय इस नाले में पानी बहुत है जो जरूर बर्फ की वजह से होगा क्योंकि पहाडो पर की बर्फ गल गल कर इस नाले के पानी में मिल कर बहती थी। मगर दो तीन बड़े बड़े पेड़ों को जो जड़ से उखड कर नाले के एक तरफ पडे थे देखने से यह भी मालूम होता था कि यहां हाल ही में कोई तूफान भी आ चुका है।

टोनर और डारवल पुल के पार हुए और पेड़ों के बीच में से हो कर उस चक्करदार रास्ते पर धीरे धीरे जाने लगे। बूढा डारवल खौफ की निगाह से अपने चारो तरफ की छटा देखता जाता था। गुलिस्तावाटी एक कुदरती किले की तरह पर थी जिसके चारो तरफ पहाडों की दीवार थी और जिसे आगे से नाले ने खंदक की तौर पर घेर रक्खा था।

अब ये दोनों मुसाफिर ढालुएं रास्ते पर चढ थोडी ही देर में उस अंधेरे गार के मुहाने पर जा पहुँचे। यहां पर टोनर अटका क्योंकि उसको फिर वह अजदहा याद आया मगर डारवल ने उसका मतलब समझ कर कहा, "टोनर! डरो मत, कम से कम मुझ बूढे की हिम्मत देख कर तुम्हारा भी हौसला बढना चाहिये।"

टोनर०। नहीं नहीं, मै निडर हूँ, तुम चलो।

गार के मुहाने पर पहुँच कर टोनर ने दियासलाई जलाई और चिराग बाल कर गार के अन्दर एक तेज नजर डाली परन्तु उसकी नजर गार के अन्त तक न पहुँची, हा उसने देखा कि गार की छत और दीवार खुरखुरी है और थोड़ी दूर तक उसके अन्दर एक अजब तरह की जगली लता लिपटी हुई है।

डारवल०। (चिराग लेने के लिये हाथ बढ़ा कर) पहिले मुझे

जाने दो ! अगर वास्तव में यहा कोई साप होगा तो पहिले मुझी को काटेगा। मै बूढा हू, मेरी जान जाने का इतना अफसोस नहीं मगर तुम अभी नौजवान हो।

टोनर अपनी खुदगंजी और आदत के अनुसार डारवल को चिराग देने ही वाला था मगर शर्म ने उसका हाथ रोक लिया और वह बड़ी ढिठाई से बोला "नहीं नहीं मेरे प्यारे दोस्त ! ऐसा न होगा, अगर कोई नुस्सान पहुँचने वाला है तो उसे पहिले मैं ही उठाऊंगा !!"

टोनर गार के अन्दर घुसा, डारवल भी पीछे पीछे रवाना हुआ। दो सौ गज जाने के बाद गार धीरे धीरे तंग होने लगा। आगे रास्ता साफ दिखाई देने के लिये टोनर ने चिराग ऊंचा किया। अब डारवल इसलिये टोनर के साथ साथ जाने लगा कि अगर आगे किसी तरह का खतरा हो तो टोनर की मदद करे मगर अब तक कोई खौफ की बात न दिखाई दी थी। टोनर ज्यों ज्यों आगे जाता था, साप के डर से उसके रोंगटे खड़े होते जाते थे और उसे यह मालूम होता था कि साप के सरसराहट की आवाज अब कान में आना ही चाहती है।

अब गार का आखीर आ पहुंचा और सामने की तरफ काले रंग की कोई बड़ी चीज दिखाई देने लगी। पास पहुंचने पर मालूम हुआ कि यह एक आदमी की बड़ी सी मूरत थी। यद्यपि गार तंग होता जाता था तथापि उसकी चौड़ाई इस जगह भी लगभग दस फीट से कम न होगी।

टोनर० (धीरे से घबराहट के साथ) क्या तुम्हें कुछ दिखाई नहीं देता?

वास्तव में दोनों मूरतें पत्थर ही की थीं। औरत की मूरत एक बड़ी चौकी पर बठाई हुई थी जिसकी ऊंचाई पाच फुट के लगभग होगी और साप की तस्वीर इस तरह बनाई गई थी कि उसका सिर और गर्दन तो उठी हुई थी मगर बाकी बदन चौकी पर पेच खाये हुए और दुम जमीन की तरफ लटकी हुई थी। इन सब पर मोटी सब्ज काई जमी हुई थी जिसके छूने से लिबलिबापन मालूम होता था।

संगतराशी के इस उम्दे नमूने को बडी बुद्धिमानी की निगाह से डारवल देख रहा था, मगर टोनर इस खयाल से उस मूरत के पीछे चला गया कि शायद गुलिस्ताघाटी का दर्वाजा दिखाई पडे। टोनर ने सब तरफ अच्छी तौर से देखा परन्तु दरवाजे का कोई निशान दिखाई न पडा, तब टोनर ने अपना डंडा उठा कर इधर उधर पटका कि शायद कहीं पोली जमीन की आवाज मालूम हो मगर डंडे की आवाज हर जगह भारी मालूम हुई। टोनर दर्वाजे की खोज में परेशान हो रहा था पर बूढा डारवल बड़े गौर से उस मूरत की तरफ ही देख रहा था। आखिर लाचार हो कर टोनर बूढे के पास आया और बोला, "बेफायदे खडे रहने से क्या मिलेगा? मेरी मदद करो और दर्वाजे का पता लगाओ।"

डारवल०। मैं जो इस मूरत को गौर से देख रहा हूँ यह बे सबब नहीं है, मैं खूब समझ रहा हूँ कि इस गुलिस्ताघाटी का दर्वाजा बहुत अच्छी रीति से छिपाया गया होगा अस्तु मै ऐसे बेहूदे खयाल में नहीं पड़ता कि इधर उधर दीवारों और जमीनों में दर्वाजा ढूंढता फिरूं।

टोनर०। तब तुम्हारा विचार क्या इस मूरत की तरफ है?

डारवल०। हा हा इस मूरत की तरफ, तुम खूब याद रक्खो कि गुलिस्ताघाटी का दर्वाजा इसी मूरत में कहीं है।

टोनर ने यह सुनते ही उस चौकी के ऊपर जिस पर वह मूरत बैठाई गई थी चिराग रख दिया और उसके चारो तरफ कोई छिपा हुआ खटका या दर्वाजे का निशान ढूंढने लगा मगर इसी समय यकायक वह चौंक

पड़ा। उस चौकी के आगे का हिस्सा दरवाजे की तरह खुल गया और उसके अन्दर एक सावली औरत दिखाई पडी।

औरत०। (रोशनी में दो आदमियों को देख और घबड़ा कर) ओह! यहा तो अजनबी लोग खडे हैं! अरे! क्या तू टोनर है!!

बात की बात में एक खजर कलोडिसा के हाथ में चमका। उसने फुर्ती से वह खजर टोनर के कलेजे में भोंकना चाहा मगर बड़ी सावधानी से टोनर ने उसकी कलाई पकड़ ली और फिर खंजर छीन कर इसके पहिले कि बूढ़ा डारवल उसको मना कर सके कलोडिसा के पेट मे भोंक दिया। कलोडिसा एक चीख मार कर जमीन पर गिर पडी और टोनर खुशी खुशी उन सीढियों के नीचे उतरने लगा जो चौकी वाले दर्वाजे के खुलने से दिखाई पडने लगी थीं मगर उसके भीतर जाते ही वह दर्वाजा धीमी आवाज से खुद बखुद बन्द हो गया।

इस दर्दनाक मामले को देख कर डारवल डरता हुआ कलोडिसा को उठाने के लिये लपका। उसने वह खजर निकाल लिया जो टोनर उसकी बाईं छाती के नीचे भोंक कर छोड गया था। खञ्जर निकलते ही खून का फौआरा जारी हुआ। डारवल ने कलोडिसा का कपडा फाड के उस जख्म पर दाब दिया मगर घबडाता हुआ ही ताज्जुब से चीख भी उठा क्योंकि चिराग की रोशनी से उसने देखा कि कलोडिसा का सिर्फ चेहरा ही सावला था बाकी का सब बदन एक दम गोरा!!

पैंतालीसवां बयान

थे तथापि अभी तक इन्होंने सुल्तान की तरफ से लडाई का इश्तिहार नहीं किया था। लडाई की गरज डैनूब नदी के किनारे किनारे यूरप भर में गूंज रही थी। रूस ने डैनूब के सूबों पर हमला कर दिया था और बलगेरिया में अपनी फौज उतारने की फिक्र में था। कुस्तुनतुनिया फतह कर लेना शायद उसने सहज समझा था मगर ईश्वर की इच्छा थी कि यह घमण्डी सल्तनत जो रूम को धमका रही थी खुद रूम ही के हाथ से नीचा देखे, जो तुर्क कमजोर समझे जाते थे देवों की तरह लड कर दुश्मनों को भगा दें, और मुसलमानी झंडे पर एक बहादुर सर्दार का नाम चमकता हुआ दिखाई दे। यह शख्श उमर पाशा * था जिसने अपनी बहादुरी का नमूना दिखला कर दिलावरों की फिहरिस्त में अपना नाम लिखवा लिया था।

यह जमाना जिसका हाल हम लिख रहे हैं सुल्तान अबदुल मजीद के लिये बहुत परेशानी का था जो यद्यपि अभी नौजवान था (उसकी अवस्था केवल तीस वर्ष की थी) तौ भी वह काम में मुस्तैद हो कर राज्य के काम में अच्छी तरह ध्यान देने लगा था। वह बराबर वजीरों से राय लेता और दीवान आम और खास में इजलास करके उन बादशाहों के दूतों की खातिरदारी करता जो रूस से दोस्ती रखते थे। पर इस मेहनत और फिक्र ने उसके कमजोर बदन पर अपना असर डाल दिया और उसी सन् के आखिर में वह बहुत बीमार हो गया यहां तक कि लोग सोचने लगे कि शायद इस बीमारी से उसे फुरसत न मिलेगी। उसकी मा जो अपने बेटे से बहुत मुहब्बत रखती थी नाउम्मीदी की हालत में घबड़ा गई। दोनों हकीम (जिनका जिक्र लैला की बेहोशी के बयान में आ चुका है) बहुत दिल लगा कर सुल्तान का इलाज कर रहे थे मगर कुछ फायदा न हो रहा था।

---

* बहादुर उमर पाशा का हाल जानना चाहते हों तो रेनाल्ड साहब लिखित और लहरी बुक डिपो द्वारा प्रकाशित "रणवीर" नामक उपन्यास पढ़िये।

आखिर सुल्तान की मा ने हुक्म दिया कि और बादशाहों के दूत जो यहा आये हुए हैं उनके साथ जो डाक्टर हैं वे सुल्तान को देखें। हुक्म के मुताबिक ऐसा ही किया गया मगर सभी डाक्टरों ने एक तरह पर नाउम्मीदी से जवाब दे दिया और कह दिया कि अगर कोई मसीहा हो तो शायद इस बीमारी को छुडा सके।

सुल्तान की मा इस खबर को सुन कर बहुत दुःखी हुई, उसने सोच लिया कि अब केवल ईश्वर ही का भरोसा रह गया और दवा इलाज की उम्मीद जाती रही। एक दिन सुबह के वक्त इसी फिक्र में उदास अपने कमरे से लौंडियों को बिदा कर अकेली बैठी गर्म गर्म आसू बहा रही थी कि सामने का दर्वाजा खुला और गुर्जी बेवा की लडकी और लैला का मददगार वही तरखाना आती हुई दिखाई पडी।

तरखाना०। ऐसे समय में मैं बिना आज्ञा चली आई हू माफ दीजियेगा। मैंने सुना कि आप अकेली बैठी हैं और डाक्टरों ने जो कुछ राय दी उसकी भी मुझे खबर लगी है, इसी लिये मैं भी गम करने और आसू बहाने में आपका साथ देने के लिये यहा आई हूँ।

सुल्ताना ने इसका कुछ जवाब देना चाहा मगर गम के मारे उसका गला भर आया और कोई आवाज निकल न सकी, केवल सिर हिला कर रह गई।

तरखाना०। कहिये डाक्टरों ने कुछ उम्मीद दिलाई है?

सुल्ताना०। (दबे शब्दों में) हमारे हकीम तो मानो बिलकुल बे हाथ पैर के हो गये हैं और डाक्टरों के किये भी कुछ नहीं हो सकता! मालूम होता है मेरे लडके को आदमी के हाथों से मदद पहुँच ही नहीं सकता।

में तुमको हर तरह बोलने का अख्तियार है, अच्छा कहो क्या कहती हो ?

तरखाना० । इस मकान में एक औरत है जिसको कैद करने का हुक्म आप ही ने दिया था । शायद आप उसे भूल गई हैं मगर असल में वह दवा इलाज के मामले में बडी होशियार है ।

सुलताना० । (बात काट कर) क्या तुम्हारा मतलब फातमा से है ?

तरखाना० । जी हां, आपने वादा किया था कि फातमा को न भूलूंगी मगर आप उसे भूल गईं ।

सुल्ताना० । नहीं, मैं उसे बिल्कुल नहीं भूली । हकीमों ने मुझे विश्वास दिला दिया कि वह बडी मक्कार औरत है, और उसको अल्ला का शुक्र करना चाहिये कि एक भारी कसूर करने पर भी मैंने उसकी जान छोड दी !

तरखाना० । तो भी यह तो आपको याद ही होगा कि उसने अपनी होशियारी से रमजान के तोहफे को जिन्दे से मुर्दे की हालत में कर दिया और फिर जिला भी दिया ।

सुल्ताना० । बेशक यह सच है और मुझे अच्छी तरह याद है कि उस वक्त इस बात का भेद मालूम करने और उन दवाओं को जिससे उसने लेला को जिला दिया था जानने की मुझे बड़ी ही ख्वाहिश पैदा हुई थी ।

तरखाना० । क्या फातमा ने आपसे नहीं कहा कि वह अहमद असेला नामी एक मशहूर हकीम की बेटी है ?

सुल्ताना० । बेशक मुझे यह सब बातें भूल गई थीं क्योंकि मेरे हकीमों ने उसकी तरफ से मेरी राय खराब कर दी थी मगर इतना मुझे याद है कि तुमने तीन चार दफे उसकी सिफारिश की थी ।

तरखाना० । उस समय मैंने जिद न की क्योंकि मैं जानती थी कि

आप इन बातों को पसन्द न करेंगी मगर अब मैं जरूर कहूँगी कि इस समय उसको भी एक मौका देना चाहिये।

सुल्ताना० । इस समय तो तुमने मेरे दिल में कुछ उम्मीद पैदा कर दी। क्या मैं फात्मा को बुलाऊं और उससे पूछूं कि मेरे बेटे की बीमारी के लिये वह कुछ कर सकती है या नहीं?

तरखाना० । हां जरूर! और यही कहने के लिये मैं आई हूँ!

सुल्ताना० । अच्छा मैं उसे बुलवाती हूँ।

सुल्ताना का इरादा सुन कर तरखाना इतनी खुश हुई कि मुश्किल से अपनी खुशी को छिपा सकी। फात्मा को महल में कैद देख वह बहुत दुःखी थी। उसने कई दफे चाहा कि सिफारिश करके उसे छुड़ा दे मगर यह सोच कर बहुत जिद न की थी कि कहीं कोई यह न समझ बैठे कि हैरा के भगा देने में इसका भी हाथ था।

कैसर आगा बुलाया गया और सुल्ताना ने फात्मा को हाजिर करने का हुक्म दिया। वह सलाम करके चला गया और बहुत जल्द फात्मा को लेकर हाजिर हुआ। कैद रहने के सबब इस समय फात्मा का चेहरा जर्द हो रहा था। तरखाना ने उस पर मुहब्बत की निगाह डाली मगर ऐसे छिपे ढंग से कि कैसर आगा और सुल्ताना को कुछ मालूम न हुआ।

सुल्ताना० । (शान और रुआब से फात्मा की तरफ देख कर) ऐ औरत! शायद तू समझती होगी कि मैंने तुझ पर जुल्म किया!

फात्मा० । अगर हुजूर को यह मंजूर है कि मैं अपनी शिकायत का सबब बयान करूं तो मैं यह कहने पर मजबूर हूँ कि छ महिने हुए हुजूर ने जो कौलकरार मेरे साथ किया था उसे तोड़ दिया।

फात्मा की बात सुन कर रंज और गुस्से की कुछ सुर्खी सुल्तान की मा के चेहरे पर दिखाई दी, मगर उसने अपने गुस्से को रोक कर कहा, "वह कौलकरार क्या था?"

फात्मा० । हुजूर ने मेरी इजाजत से उस दवा के नुस्खे को सुनना

चाहा था जो मौत की सी बेहोशी को दूर कर देता है और उस दवा के आजमाने का वादा करके यह भी कहा था कि अगर यह दवा झूठी निकली तो तू दरिया में डूबा दी जायगी और सच्ची निकली तो आजाद करके मालामाल कर दी जायगी।

सुलतानी०। शाहजादियों के रुतबे के यह खिलाफ है कि वे ऐसे लोगों से जो उनके तलवे की धूल की भी बराबर नहीं कर सकतीं माफी मागें, लेकिन फातमा! अगर मैंने तुम्हारे साथ अच्छा वर्ताव नहीं किया है तो इसका सबब यही है कि लोगों ने तुम्हारी तरफ से मुझे बहका दिया था, बस इससे ज्यादा और मै कुछ नहीं कह सकती मगर सुनो, क्या अब भी तुम अपने उस एकरार पर कायम हो?

फातमा०। बेशक मैं कायम हूँ मगर हुजूर पहिले मुझे यह बता दें कि मेरी तरफ से किसने हुजूर का दिल फेर दिया था और मेरी अनूठी दवा का असर देख कर भी मुझे क्यों मक्कारा ठहराया गया?

थोडी देर तक सुलतान की मा चुप रही मगर फिर उसने सोचा कि फातमा की बात का सच्चा जवाब देने मे कोई हर्ज नहीं है, क्योंकि इस समय फातमा को राजी करना ही उसे मंजूर था। आखिर सुलताना ने कहा, "हमारे दोनों हकीमों ने बहुत सी बातें तुम्हारे खिलाफ कहीं थीं और उनकी राय को मैंने इसलिये वाजिब समझा कि उन्होंने तुम्हारी दवाओं की अच्छी तरह जाच की थी।"

फातमा०। स्वय बहुत सी बातों से नावाकिफ होते हुए भी उन्होंने मुझे झूठा ठहराया! तब ऐसी हालत में मै अपनी दवाओं की जाच ही क्या करा सकती हूँ!!

सुलताना०। तुम किस तरह की जाच कराया चाहती हो?

फातमा ने कुछ देर तक गौर से सुलतान की मा की तरफ देखा और तब कहा, "सुलतान की अवस्था दिन दिन खराब होती जाती है मगर मैं उन्हें आराम कर सकती हूँ!!"

सुल्ताना० । (उम्मीद की खुशी में अपने बड़े रुतबे को भूल कर) क्या तुम इसका बीड़ा उठा सकती हो और इसे आराम कर सकती हो ?

फात्मा० (गम्भीर भाव से) जरूर मैं ऐसा कर सकती हू !

सुल्ताना० । ओफ ! मैं तुम्हें दुःख नहीं दिया चाहती और न मेरा ऐसा दिल है लेकिन फातमा ! तुम इसे अच्छी तरह समझ रक्खो कि यह एक बादशाह की जान है जिस पर तुम अपनी दवा का इम्तिहान किया चाहती हो !!

फात्मा० । इसे मैं खूब जानती और समझती हूं ! शायद हुजूर को अब तक मुझ पर शक हो और शायद हुजूर ऐसा समझती हों कि गुप्त रीति से मैं आपकी दुश्मन हूँ और किसी की भेजी हुई यहां आई हूं, या शायद हुजूर यही समझती हों कि मैं चंगा करने के बहाने आपके लड़के को मार डालूंगी, मगर वास्तव में मैं आपको अपनी नेकनीयती पर पूरा भरोसा करा दूंगी।

सुल्ताना० । मैं यह नहीं कहती कि तुम पर मुझे शक है तौ भी मैं तुम्हारे कौल का कोई सबूत चाहती हू। क्या तुम किसी तरह का सबूत दे सकती हो कि तुम्हारी दवाओं में ऐसी ताक़त है ?

फात्मा० । मेरी दवाओं का बक्स मंगवाइये और अपने दोनों हकीमों को भी तलब कीजिये।

सुल्तान की मां ने ऐसा करने के लिये तुरत हुक्म दिया। थोड़ी ही देर में वह बुड्ढा हकीम हाजिर हुआ जिसने फात्मा को वहां बैठा देख अचम्भा [illegible] लिया मगर तुरत ही अपने को सम्हाला और सुल्तान की मां तथा सुल्ताना को अदब से सलाम करके कहा, "इस समय बादशाह [illegible] लग गई है। मैं दूसरे हकीम को उनके पास छोड़ आया हूं इसलिये वह हाजिर न हो सके।"

सुल्ताना० (फात्मा की तरफ देख के) क्या तुम चाहती हो कि [illegible] हाजिर हों ?

फात्मा० । जी नहीं, एक ही का रहना बहुत है ।

इसी समय कैमर आगा वह दवा का बक्स लेकर हाजिर हुआ जिसे देखते ही फात्मा के चेहरे पर खुशी की निशानी पाई गई मानों उसने अपनी कोई ऐसी चीज पा ली हो जिसे वह बहुत चाहती थी ।

छियालीसवां बयान

फात्मा ने पहिले अपने बक्स को इसलिये अच्छी तरह देखा कि कहीं उसकी कोई चीज निकाल तो नहीं ली गई मगर जब अपनी सब चीजें उसमें मौजूद पाईं तब खुश होकर कार्रवाई करने लगी ।

पहिले उसने अपने बक्स में से एक छोटा सा चीनी का प्याला निकाला जिस पर फूलों की बेलें बडी खूबसूरती से बनी हुई थीं । उसने उस प्याले को एक ऊंचे मेज पर रक्खा जिसमें सब कोई अच्छी तरह देख सकें ।

फात्मा ने सुल्तान की मां की तरफ देख कर कहा, 'हुजूर इस प्याले को खूब गौर से देखें और इन फूलों के रंगों पर भी ध्यान दें । देखिये यह नीला रंग कैसा गहरा है, यह सुर्ख रंग कैसा चमकदार है, और यह जर्द कैसा सुनहरा है । हुजूर यह भी गौर करें कि यह प्याला इतना साफ है कि आरपार दिखाई देता है और यह फूल पत्तियां बाहर की तरफ से भी मालूम पडती हैं ।

सुल्ताना उस प्याले को गौर से देख रही थी और यह भी सोचती जाती थी कि इससे तथा दवा के इम्तिहान से क्या निस्बत है । कुछ देर बाद उसने कहा, "हां मैं देख रही हूँ । यह एक मामूली छोटा सा प्याला है ।"

फात्मा० । (हकीम की तरफ देख कर) आप भी इन चटकीले रंगों को देखते हैं ?

हकीम० । हां ये जरूर खूबसूरत हैं ।

फात्मा० । (हकीम की तरफ इशारा करके) अब आप मेहरबानी करके इस बक्स को देखिये और इसमें से कोई जहर हलाहल जो आपको मिल सके निकालिये । (सुलताना की तरफ देख कर) हुजूर इस नाम से न चौंके क्योंकि यह हकीम आपको समझावेंगे कि बहुत सी दवायें ऐसी होती हैं कि यदि थोडी सी खिलाई जायें तो फायदा करती हैं और यदि ज्यादे खिलाई जाय तो जहर का काम करती हैं ।

सुलताना० । हां मैंने ऐसा सुना है ।

इस बीच में हकीम ने उस बक्स में से ढूंढ कर एक शीशी निकाली जिसमें सुफेद रंग की कोई बुकनी थी और फात्मा की तरफ देख कर कहा, "लो जो कुछ तुम्हें बनाना है इसमे बनाओ ।"

फात्मा ने वह शीशी लेली और उसमें से थोडी सी बुकनी निकाल कर उस प्याले में डाला इसके बाद एक बिल्लौरी सुराही में से जो मेज पर रक्खी हुई था थोडा सा पानी उस प्याले में डाला और तब अपने बक्स में से शीशे की एक सलाई निकाल कर उससे हिला कर दवा को खूब मिलाने बाद सुलताना की तरफ देख कर कहा, "यह जहर हलाहल है जैसा कि हकीम साहब ने कहा है, अब आप इस प्याले के रंगों को देखें ।

सुल्ताना ताज्जुब से चीख उठीं। हकीम भी हैरान था कि इसमे क्या मतलब है। कैसर आगा तो मुंह खोले हक्का बक्का टकटकी बाधे देखता रह गया।

अब फातमा ने उस प्याले को उठा लिया और उसका पानी एक दूसरे चीनी के प्याले में उलट तथा प्याले को फिर उसी जगह रख कर कहा, "अब फिर आप लोग इस पर गौर करें और उल्टा तमाशा देखें।"

सब कोई फिर गौर से उस प्याले की तरफ देखने लगे। धीरे धीरे प्याले में रंग आने लगा, यहा तक कि थोडी ही देर में सुर्ख सब्ज और जर्द सब रंग ज्यो के त्यों हो गये और प्याला भी साफ हो कर आरपार दिखाई देने लगा।

फातमा ने फिर हकीम से कोई दूसरा जहर सन्दूक में से निकाल कर देने को कहा और यह भी कहा कि अबकी बहुत ही कमजोर जहर निकाल कर दीजिये। हकीम साहब ने ऐसा ही किया। यह दूसरा जहर भी उस प्याले में रक्खा गया। इस दफे भी उन फूल पत्तियों के रग उड गये मगर बनिस्बत पहले के कुछ देर में।

सुल्ताना०। बेशक यह बडे ताज्जुब की बात है!!

तारखाना०। ये तजरुबे जितना ताज्जुब बढाने वाले हैं उतने ही फायदेमन्द भी है!

कैसरआगा०। हुजूर! यह फातमा बडी ही बुद्धिमान है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह बहुत कुछ जानती है!

हकीम०। ऐसे प्यालों का हाल मैंने किस्सों में पढा था मगर देखने में नहीं आया था। मालूम होता है कि इस प्याले को बनाते वक्त किसी प्रकार का नमक इसमें मिलाया गया है जिससे खास खास जहरों का असर इस पर होता है।

फातमा०। जिस किस्म के जहर से आप चाहें इस प्याले को आजमा लें नतीजा यही होगा।

हकीम० । तुम्हारे सन्दूक में कुचला वगैरह नहीं है और बहुत से ऐसे जहर भी काम में लाये जाते हैं जिनके असर को तुम शायद न जानती हो ।

फात्मा० । क्या आपके पास ऐसा कोई जहर है ?

हकीम० । हां ।

फात्मा० । तो आप उस जहर को इस प्याले में आजमा देखिये ।

हकीम साहब सुल्ताना से आज्ञा ले कर चले गये और थोड़ी ही देर में कई तरह के जहर लेकर लौट आये । हर तरह के जहर से उस प्याले का इम्तिहान लिया गया वही नतीजा और निकला जैसा कि ऊपर लिख आए हैं । आखिर यह निश्चय हो गया कि इस तरह के जहर की जांच के लिये यह प्याला बहुत ठीक है और इसके जरिये जांच करने में किसी तरह का शक नहीं हो सकता ।

इसके बाद फात्मा ने उस प्याले में ऐसी दवाएं भी रक्खीं जो जहर न थीं । उन दवाओं का असर इस प्याले पर कुछ भी न हुआ और उन फूल पत्तियों के रंग में कुछ भी फर्क न पड़ा ।

फात्मा० । अब हुजूर इस प्याले को अपने पास रक्खें जिसमें हुजूर को इस बात का शक न रहे कि मैंने और कोई रद्दोबदल नहीं किया है । मैं जो दवा बनाऊं इसके जरिये जांच करने से मालूम हो जायगा कि इसमें कोई जहर तो नहीं है । अब अगर हुक्म हो तो मैं वह दवा तैयार करूं जिससे बादशाह आराम होवेंगे ।

हकीम० । क्या यह औरत दीवानी है जो समझती है कि इसके ऐसे करतबों से बादशाह की अनमोल जान के सम्बन्ध में कोई काम हमसे नहीं किया जायगा ?

आपने देखा या सुना है उसके विषय में एक हर्फ भी किसी के सामने न कहियेगा, देखिये इस हुक्म का पूरा पूरा बर्ताव हो !!

हकीम साहब बहुत शर्मिन्दा हुए और फिर कुछ न बोल सुल्ताना को अदब से सलाम कर चले गये।

सुल्ताना०। फात्मा! उस दवा को तैयार करने के लिये तुम्हें किस चीज की जरूरत है?

फात्मा०। मैं हुजूर से यह हुक्म चाहती हूँ कि नीचे नजरबाग में जाकर जिन बूटियों और जड़ियों की मुझे जरूरत है उन्हें ले आऊं और कई खास फूलों को खोज में जिनकी मुझे जरूरत है बाग में घूमूं।

सुल्ताना०। इस अकसीर दवा के तैयार करने में तुम्हें कितनी देर लगेगी?

फात्मा०। कल दोपहर से पहिले मैं किसी तरह नहीं तैयार कर सकती।

सुल्ताना०। हैं! कल दोपहर तक!! खैर जब इससे जल्दी हो ही नहीं सकता तो क्या किया जाय!!

फात्मा०। हजूर भला मै जान बूझ कर कभी देर कर सकती हूँ!!

अज्ञानुसार फात्मा अपनी दवाओं का बक्स लेकर कैमर आगा के साथ चली गई और सुलताना ने वह छोटा सा खूबसूरत चीनी का प्याला अपने पास रख लिया। कैमर आगा फात्मा को नजरबाग में ले गया जहां उसने जड़ी बूटी फूल इत्यादि जिन जिन चीजों की जरूरत थी खोज लीं और उन्हें पाने के बाद महल में लौट अपने कमरे में जा दर्वाजा बन्द करके बैठ रही। कैमर आगा को कह दिया कि कल्ह दोपहर तक मुझे कोई टोकटाक न करे और न कोई यहां आवे। आखिर ऐसा ही किया गया।

सुल्ताना की मा बड़े सोच विचार में पड़ी हुई थी। वह सोच रही थी कि फात्मा की दवा का हाल अपने लड़के से कहूँ या न कहूँ।

आखिर उसने यही निश्चय किया कि यह हाल सुल्तान से कह देना ही ठीक होगा क्योंकि सुल्ताना यह भी सोचती थी कि फातमा की दवा ने फायदा न किया और बादशाह मर गया तो यह इलजाम उसी पर लगेगा और यह उसे मंजूर न था। फिर भी उस दिन सुल्ताना ने अपने बेटे से यह हाल न कहा। इधर वह हकीम भी बड़े पशोपेश में पड़ा हुआ था। यद्यपि सुल्ताना के डर से उसने यह हाल किसी से न कहा मगर वह यह जरूर सोचता था कि अगर फातमा की दवा असर कर गई तो हम दोनों हकीमों की इज्जत बर्बाद हो जायगी। आखिर उसने अपने कमरे में बैठ कर इस बारे में खूब सोच विचार किया और बहुत सी किताबों की छान बीन कर बादशाह के पीने के लिये एक दवा तैयार की जिसमें से आधी सवेरे और आधी शाम को बादशाह को पिलाई गई।

उस दिन नौ बजे सवेरे बादशाह ने अपने बिछौने पर से उठ कर कहा कि पहिले से इस समय तबीयत बहुत अच्छी है। यह सुन कर दोनों हकीम बहुत ही खुश हुए। बादशाह ने अपनी तबीयत का हाल अपनी माँ को कहला भेजा और यह भी कहलाया कि थोड़ी देर में सलाम करने के लिये खुद माँ के पास हाजिर होगा। सुल्ताना इन खुशखबरी के सुनने से बहुत प्रसन्न हुई मगर चूँकि वह समझती थी कि बादशाह की तबीयत थोड़ी ही देर के लिये ठहरी है जैसा कि कई दफे पहिले भी हो चुका है, इसी लिये उसने फातमा को दवा बनाने से नहीं रोका।

सैंतालीसवां बयान

खटखटाने पर वे अन्दर बुला लिये गये। उन्होंने जाते ही पूछा, "दवा तैयार है या नहीं ?" फात्मा ने जवाब दिया—'तैयार है।" और यह कहकर एक छोटी शीशी निकाल कर उनके हाथ मे दे दी। वे दोनों फात्मा को साथ ले सुल्तान के कमरे की तरफ चले जहा सुल्तान की मा उसके इन्तजार में वैठी थी, मगर रास्ते के बीच ही में जब वह बरामदे में पहुँची तो एक गुलाम ने अपने कपड़ों के नीचे से कमान निकाली जिसके नाम से इस महल की चारदीवारी के अन्दर रहने वाले कांपा करते थे। फात्मा ने उसे देखा और उसका मतलब समझ गई। इस धमकी से उसके चेहरे पर कुछ उदासी भी आ गई मगर उसने अपने को सम्हाल कर दुरुस्त रक्खा और चुप रही।

अब उसने अपने को एक सजे हुए कमरे में पाया जहा सुल्तान एक कोच पर सो रहा था और उसकी उदास और फिक्रमन्द मा झुकी हुई उसकी तरफ देख रही थी। बादशाह बिल्कुल बेहोश था और उसके चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई थी।

जब फात्मा उस कमरे में पहुँचाई गई तो हब्शी गुलाम ने वह शीशी सुल्तान के हाथ में दे दी और सुलताना ने फात्मा से पूछा, "क्या यही वह दवा है ?"

फात्मा०। जी हां, मैंने वादे के मुताबिक ठीक समय पर दवा तैयार कर दी।

सुल्ताना०। शायद तुम समझती होगी कि इस महल मे तुम्हारे साथ कड़ाई का बर्ताव किया गया है और इस समय जो कुछ बर्ताव तुम्हारे साथ किया जायगा वह पहिले से भी कठिन मालूम होगा, मगर तुम्हें याद रखना चाहिये कि मेरे ऊपर अब बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। देखो यह मेरा बेटा तुर्कों का बादशाह, रिआया की उम्मीदों का सहारा, और उनको पालने वाला पड़ा है। इसको मैं तुम्हारी दवा देने वाली हूँ और यह काम बादशाही हकीमों की सलाह किये बिना ही कर रही हूँ। अगर

इस दवा से मेरा बेटा चंगा हो गया तो मेरा तुम पर भरोसा करना सुफल होगा और फिर हर तरह से अच्छा ही अच्छा है लेकिन यदि इसमें किसी तरह का फरेब पाया गया और मेरे लड़के की जान पर आ बनी तो बिलकुल इलजाम मुझी पर आवेगा। शहर भर मुझसे रञ्ज हो जायगा और मेरा जीना मुश्किल हो जायगा। ऐसी अवस्था में तुम खुद समझ सकती हो कि तुम्हारे साथ जो बर्ताव किया जाता है वह बेजा नहीं है। यदि बादशाह आराम हो जायगा तो कोई ऐसा इनाम नहीं है जो तुम मांगो और न मिले, पर इसके बरखिलाफ होने में तुम्हारे लिये किसी तरह अच्छा नहीं है।

यह कह कर सुल्ताना ने उस कमान की तरफ इशारा किया जो हबशी गुलाम के हाथ में लटक रही थी।

फातमा०। बहुत अच्छा, मुझे मन्जूर है, वह प्याला तो आपके पास मौजूद ही है यह दवा उसमें रखने से आपको तुरत मालूम हो जायगा कि इसमें कोई जहर तो नहीं पड़ा है।

सुल्ताना०। अगर इसका नतीजा अच्छा हुआ तो मैं तुमसे इस तरह मिलूंगी जैसे कोई बहिन अपनी बहिन से मिलती है और मेरी खुशी की कोई हद न रहेगी।

फातमा० (बादशाह के चेहरे की तरफ गौर से देख कर) मगर इस दवा पिलाने में हुजूर देर न करें।

कि वह मरा ही चाहता है। उसका मुंह खुला हुआ था और नीचे का जबड़ा लटकता जाता था। सुल्ताना ने दवा उसके मुंह में डाल दी।

सुल्ताना थोड़ी देर तक कोच के पास खड़ी रह कर लड़के का मुंह देखती रही। बादशाह धीरे धीरे सांस ले रहा था। सुल्ताना ने देखा कि बादशाह के चेहरे पर कुछ कुछ हलका सा सुर्ख रंग आ गया है। वह दिल ही दिल में दुआ मांगने लगी और उसे कुछ भरोसा हुआ।

दोनों हबशी गुलामों ने फात्मा को कमरे के एक कोने में ले जा कर खड़ा किया और दोनों उसके दहिने बाएं खड़े हो गये। इशारे ही इशारे में फात्मा को समझा दिया गया कि अगर बादशाह का कुछ भी बिगड़ा तो कमान का रेशमी डोरा तुरत उसके गले में डाल दिया जायगा जिससे उसी दम दम घुट कर उसकी जान निकल जायगी।

सुल्ताना०। (फात्मा के पास जा कर) तुम्हारी दवा का असर कितनी देर में मालूम होगा?

फात्मा०। मैं समझती हूं कि बादशाह के चेहरे पर हलका सुर्ख रंग जो आराम होने की पहिली निशानी है आ चुका होगा?

सुल्ताना०। (धीरे से) हां हां, बादशाह के चेहरे पर बेशक हलका सुर्ख रंग आ गया है।

फात्मा०। आध घन्टे में आप देखेंगी कि नीला घेरा जो आंखों के पास है जाता रहेगा और होंठों में मामूली सुर्खी जो तन्दुरस्ती के वक्त थी आ जायगी।

चुपचाप बैठे बैठे आधा घन्टा बीत गया। फात्मा उसी तरह दोनों हबशियों के पहरे में खड़ी रही। सुल्ताना की निगाह बराबर बादशाह के चेहरे पर था और वह देखती जाती थी कि जो कुछ फात्मा ने कहा है वह होता है या नहीं। आखिर सुल्ताना के चेहरे पर खुशी की निशानी देख गई और वह हंसती हुई फात्मा के पास जा कर बोली—

सुल्ताना० । (खुशी की आवाज में) नीला घेरा जो आँखों के पास था जाता रहा, गालों पर सुर्खी आ गई, और होंठ भी मामूली तौर पर लाल हो गये हैं ।

फात्मा० । बहुत अच्छा, अब सुनिये, आध घण्टे में बादशाह के चेहरे पर मुर्दनी छा जायगी और उनकी देह बेजान की तरह घन्टे भर तक पड़ी रहेगी मगर साँस चलती रहेगी ।

यह सुन कर सुल्ताना चौंक पड़ी, उसका चेहरा जर्द हो गया और उसने शक की निगाह फात्मा पर डाली ।

फात्मा० । यह दवा पहिले बदन के चमड़े पर असर करती है और फिर धीरे धीरे अन्दर फायदा पहुँचाती है ।

सुल्ताना की निगाह से फात्मा बिल्कुल न घबड़ाई और इस ढंग से बातें की कि सुल्ताना की दिलजमई हो गई और वह बादशाह के पास जा कर उसी तरह उसकी सूरत देखने लगी । आखिर जो कुछ फात्मा ने कहा था वही हुआ । बादशाह के चेहरे पर इस तरह की मुर्दनी छा गई कि सुल्ताना उसके बारे में पहिले से आगाह होने पर भी घबड़ा गई । घड़ी घड़ी फात्मा के पास जाती और लौटती थी मगर बादशाह की साँस चल रही थी इसलिये वह नतीजे पर भरोसा किये रही । आखिर पूरा घण्टा बीत जाने पर वह फात्मा के पास गई ।

फात्मा० । अब बहुत जल्द आप देखेंगी कि बादशाह के चेहरे पर फिर वैसी ही सुर्खी आ जायगी और वे वैसे ही हो जायेंगे जैसे तन्दुरुस्ती के समय आप इन्हें देखती थीं, वे अपनी आँखें खोल देंगे, मगर आपको चाहिये कि इन्हें फिर सुला दें ।

दौड़ी हुई फात्मा के पास गई और उसका हाथ पकड़ कर बोली, "बेशक तुमने मेरे बेटे को बचा लिया !"

फात्मा० । बादशाह को शाम तक सोने दीजिये उम्मीद है कि वह आप ही उठेंगे अगर न उठेंगे तो उठा दीजियेगा । खाना मांगें तो खाने को दीजियेगा और अगर शराब मांगें तो वह भी दीजियेगा । अब वह चंगे हो गये और मुझे उम्मीद है कि इस कमान और रेशम के धागे की अब कोई जरूरत न पड़ेगी !

यह पहिला मौका था कि फात्मा ने सुल्तान को ताना मारा ।

सुल्ताना० । (प्याला मेज पर रख कर) लो यह तुम्हारा प्याला है मगर मैं इसे बेशकीमत जवाहिरात से भर दूं तब तुम इसे उठाओ ।

फात्मा० । माफ कीजिये, मैं आपसे कुछ न लूंगी, मुझसे बढ़ कर कोई आदमी किसी की मेहरबानी को नहीं समझ सकता मगर मुझे असली और सच्ची मेहरबानी चाहिये, ऐसा नहीं जिसके साथ मौत की धमकी और कमान से गला घोंट देने का डर मिला हुआ हो ।

फात्मा के इस ताने से सुल्ताना को गुस्सा चढ़ आया मगर शर्म ने उसे ऐसा दबाया कि वह कुछ कह न सकी । आखिर उसने फात्मा से कहा, "फात्मा ! मालूम होता है कि तुम दिल में रंज रखती हो ! मगर मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं कि इस अहसान के बदले जो कुछ मैं दिया चाहती हूँ उसे कबूल करो !"

फात्मा० । (लापर्वाही की नजर से) अगर आप धन दौलत के बारे में कह रही हैं तो इसकी मुझे कोई जरूरत नहीं है । जब मैं यहां से जाऊंगी तो फिर इसी तरह मुल्क मुल्क घूमने और सैर करने में दिन बिताऊंगी और इसी जरिये से रंज और फिक्र को अपने पास नहीं आने दूंगी क्योंकि बीती हुई बातों को याद मुझे हरदम बनी रहती है और मैं यह भी कह सकती हूँ कि किसी बात के मैं ऐसी आफत में नहीं हूँ जैसी कि आप मेरी देख रही हैं ।

सुल्ताना०। (तर्स की निगाह से) तो मालूम होता है कि तुम बहुत मुसीबतें झेल चुकी हो!

फातमा एक मिनट तक कुछ सोचती रही। मालूम होता था कि वह इस बात को सोच रही है कि अपना हाल कहे या न कहे, आखिर वह बोली, 'अच्छा सुल्ताना! मैं आपसे एक किस्सा कहना चाहती हूँ। क्या आप सुनेंगी?'

सुल्ताना किस्सा सुनने के लिये निश्चिन्त हो कर बैठ गई और फातमा कुछ सोच विचार कर यों कहने लगी —

'यह तो आपको मालूम ही हो चुका है कि मैं नामी हकीम अहमद असद की बेटी हूँ। बासफरस के किनारे मेरे बाप का एक गाँव था जहाँ मैं बहुत से गुलामों के साथ रहा करती थी। मेरी माँ मेरे बचपन ही में मर चुकी थी। इस समय मेरी अवस्था पैंतालीस वर्ष की है मगर जिस समय का हाल मैं कहती हूँ उस समय मेरी उम्र सत्रह या अट्ठारह वर्ष की होगी।

'इससे कोई मतलब नहीं कि जिस आदमी का हाल मैं आगे कहूँगी उससे क्योंकर मेरी जान पहिचान हुई। वह उम्र में मुझसे कई वर्ष बड़ा और बहुत ही खूबसूरत तथा नौजवान आदमी था। मुझे विश्वास था कि वह एक शाही दर्बार में किसी ओहदे पर नौकर है मगर कोई भारी मर्तबा नहीं रखता है।

था, कम होने लगी। उसने आना जाना बहुत कम कर दिया बल्कि धीरे धीरे बिल्कुल ही सम्बन्ध छोड़ दिया। अब मैं बहुत घबड़ाई और उससे मिलने की उम्मीद में इसी कुस्तुनतुनिया में आ कर शाही महल्सरा के चारो तरफ छिप छिप कर घूमने लगी। आखिर बहुत इन्तजार के बाद एक दिन फौजी बाजा बजा और किसी तरफ फौज जाने लगी। 'हटो बचो' के ढग से मालूम हुआ कि बादशाही सवारी निकल रही है। यह सवारी मसजिद सुलेमानिया की तरफ जाने लगी। मैंने सोचा कि मेरा आशिक इस जलूस के साथ जरूर दिखाई देगा और आखिर ऐसा ही हुआ। ऐ सुलताना! मैंने उसे देखा और पहिचाना! मेरा बेवफा आशिक, मेरी खुशी को बर्बाद करने वाला, मेरी इज्जत को मिट्टी में मिलाने वाला, खुद बादशाह अर्थात सुलतान महमूद था!!"

सुल्ताना०। (चीख कर) ऐं!! क्या ऐसा हो सकता है?

फात्मा०। हां हुजूर, वह खुद बादशाह था और वही बादशाह जिसके लड़के की जान आज दिन मैंने बचाई।

सुल्ताना०। (कुछ रुक कर) हां तो फिर क्या हुआ? सुल्तान ने तुमको देखा और पहिचाना?

फात्मा०। सुल्ताना ने मुझे देखा और पहिचाना! उसने अपने एक अहलकार की मार्फत मुझे कहला भेजा कि कल मैं अकेला तुमसे उसी जगह मिलूंगा जहां मिला करता था आखिर बादशाह ने अपना वादा पूरा किया और मुझसे मिल कर कहा कि महल में चली चलो और मेरी प्यारी लौंडी हो कर रहो। मगर मुझे लौंडी बनने की बेइज्जती मंजूर न थी, जिसका नतीजा यह हुआ कि आखिर मेरा उसका सम्बन्ध टूट गया। मेरी बेइज्जती की खबर सुन मेरा बाप रंज से मरता मरता बचा मगर उन्हीं दिनों एक मुर्दे को चीरते वक्त उसे नश्तर लग गया और उस जहर के असर से वह मर गया। मुझे लड़का पैदा हुआ मगर पैदा होते ही वह भी मर गया। इस तरह पर मेरी खुशियों का खात्मा

छुट गया और मैंने एक जगह पर अपना रहना उचित न जान कर दूर दूर जंगल मैदान पहाड़ और शहरों में घूमना पसन्द किया। बाप की जो कुछ दौलत मुझे मिली थी थोड़ी सी खर्च के लिये रख कर सब गरीबों और कंगालों को बट दी और सिर्फ एक किताब जिसमें मेरे बाप के हाथ के कई नुस्खे लिखे हुए थे अपने पास रख कर दूर दूर के मुल्कों में घूमने लगी।

अब आपको मेरा हाल मालूम हो गया। आप खुद सोच सकती हैं कि मेरे दिल पर क्या गुजरती होगी और पिछली बातें मुझे किस तरह याद पड़ती होंगी।

सुलताना०। (तर्स खा कर) हाय बदनसीब फातमा! और आज तुमने उसी के लड़के की जान बचाई जिसने तुम्हारी खुशियों का सत्यानाश किया!!

सुलताना ने फातमा के साथ बहुत मेहरबानी दिखाई और उसको बहुत कुछ देना चाहा बल्कि इसके लिये जिद् भी की मगर फातमा ने कुछ न लिया। केवल अपने उस प्याले को लेकर रख लिया और सुलताना से आज्ञा ले महल के बाहर हो कर फिर आजादी के मैदान की हवा खाने लगी।

अड़तालीसवां बयान

ऊपर लिखी बातों के तीन सप्ताह के बाद रियासत मिगरेलिया की राजधानी बटाइम में फातमा पहुँची। दर्याफ्त करने पर उसे मालूम हुआ कि लैला कई महीनों से अपने घर पर अर्थात् इसी शहर में है अस्तु वह लैला से मिलने की उम्मीद में उसके महल की तरफ रवाना हुई।

यह महल बहुत ही आलीशान और खूबसूरत था। फाटक पर पहुँचते ही फातमा ने अपना नाम बताया और शाहजादी लैला से मिलने की इत्तला करा दी। इसके नाम में मानों जादू का असर था क्योंकि बात कहते ही नौकर चाकर सब अदब से इसके सामने खड़े हो गये।

फात्मा समझ गई कि शाहजादी लैला ने मेरे नाम से इन लोगों को होशियार कर दिया है और यह लोग बहुत दिनों से मेरे आने की राह देख रहे हैं।

फात्मा महल में पहुँचाई गई और वहा जुबेदा और अमीना से मुलाकात हुई। वे दोनों फात्मा को देखते ही बेअखतियार दौड़ीं और इसके गले से लिपट गईं।

जुबेदा०। ओहो! शाहजादी लैला तुमको देख कर कैसी खुश होंगी! उन्हें इस बात का तज्जुब था कि तुम वादे के मुताबिक उनसे मिलने को न आई और न इतने दिनों तक कोई चिट्ठी ही भेजी!

अमीना०। कोई दिन ऐसा न जाता होगा कि तुम्हारा जिक्र न आता हो, उन्होंने बहुत दिनों से तुम्हारे आने के बारे में लोगों को हुक्म दे रक्खा है।

फात्मा०। यह बात मैं यहा के बर्ताव से पहिले ही समझ चुकी थी।

जुबेदा और अमीना के साथ फात्मा शाहजादी लैला के पास गई जो इस समय एक सजे हुए कमरे में अकेली बैठी कुछ सोच रही थी। फात्मा ने देखा कि उसके सामने वही खूबसूरत लैला बैठी है जिससे उसको मुहब्बत हो गई थी और जिसकी मदद करने जा कर उसने तरह तरह की तकलीफें उठाई और अपनी जान जोखम में डाली थी।

इस समय फात्मा ने लैला के चेहरे पर कुछ कुछ जर्दी देखी और इसका सबब भी वह समझ गई क्योंकि इस शहर में पहुँचने के साथ ही शाहजादा डेनियल के विषय में बहुत सी बातें वह सुन चुकी थी।

जुबेदा ने चाहा कि लैला के पास जा कर फात्मा के आने की खबर करे मगर लैला ने खुद ही आंख उठाई और अपने सामने फात्मा को खड़े देखते ही कुर्सी से उतर कर उससे लिपट गई। फात्मा अदब के खयाल से घुटने टेका चाहती थी मगर लैला ने उसको ऐसा करने न

दिया, क्योंकि वह फातमा को अपना सच्चा दोस्त समझती थी। जुबैदा और अमीना वहां से चली गईं। अब केवल फातमा के पास लैला उस कमरे में रह गई जिसके पूछने पर फातमा ने अपनी मुसीबत जो कुस्तुन-तुनिया में उस पर बीती थी पूरी पूरी कह सुनाई।

लैला०। मुझको इस बात का बड़ा रंज है कि मेरी बदौलत तुमने इतना दुख भोगा!!

फातमा०। यहां से तुमको छुट्टी मिली इसी खुशी में मुझको यह दुख कुछ भी न गलाया हां अब आप अपने चचेरे भाई शाहजादा डेनि-यल का हाल कहिये। यहां पहुंचने पर मैंने दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि शाहजादा डेनियल जबर्दस्ती सेन्टपिटर्सबर्ग भेज दिया गया। क्या यह बात सही है?

लैला०। (ठण्ढी सांस लेकर) फातमा! मैं सब हाल तुमसे कहती हूं मगर तुम अपनी दोस्त कलाडिरा का हाल पूछना तो भूल ही गईं!!

उन्हीं रूसी हाकिमों से राय लेनी पडी जो जाहिर में तो मेरी मदद के लिये यहा रहा करते हैं मगर भीतर ही भीतर गुप्त नीति का बर्ताव कर के मुझ पर दबाव डाले बैठे हैं। आखिर वही हुआ जो सोचा जा रहा था। रूसी हाकिमों ने उसे शाहजादा मानने में टालमटोल करना शुरू किया। फात्मा ! मैं तुमसे क्या छिपाऊ, शाहजादा डेनियल पर मैं आशिक हू और उसके साथ शादी करने का वादा कर चुकी हूँ। जब मैंने देखा कि रूसी हाकिम नहीं चाहता कि शाहजादा डेनियल यहा का मालिक हो तो मैंने स्वयं यहा की गद्दी लेने से इनकार किया जिसमें मेरे शाहजादा डेनियल के साथ शादी करने में कोई बाधा न डाल सके, मगर अफसोस ! रूसियों ने यह भी मंजूर न किया क्योंकि वे यही चाहते थे कि इस गद्दी पर एक कमजोर औरत बैठी रहे। आखिर बहुत सी बातचीत के बाद रूसी हाकिमों ने कहा कि शाहजादा डेनियल को खुद सेन्टपिटर्सबर्ग में जाकर रूस के जार से अपना हाल कहना चाहिये। असल मतलब तो उनका यह था कि शाहजादा यहा रहने न पावे और न यहा की रिआया शाहजादे की तरफदारी कर सके। अन्त में हर तरह से मजबूर होकर अपने दोनों साथी हाफिज और इब्राहीम के साथ शाहजादे को सेन्टपिटर्सबर्ग जाना ही पडा।

फात्मा०। तो फिर, वहा जाने बाद क्या हुआ ?

लैला०। शाहजादे ने वहा पहुच कर जार निकोलस से मुलाकात की और उन्होंने अपने वजीर को हुक्म दिया कि उसके बारे में तहकीकात की जाय मगर वजीर इस काम में सुस्ती कर रहा है। दूसरी मुलाकात में जार ने शाहजादे से कहा कि तुम हमारे यहा नौकरी कर लो तुमको भारी ओहदा दिया जायगा, परन्तु शाहजादे ने इस बात से इनकार किया। अब मैंने सुना है कि शाहजादे ने वहा के कई रूसी अमलों को अपना तरफदार बना लिया है और उन लोगों ने शाहजादे के काम में कोशिश करने का वादा भी किया है।

फात्मा० । फिक्र न करो, यद्यपि रूम का जार बड़ा जालिम आदमी है मगर तुम लोगों का दावा ऐसा सच्चा है कि वह किसी तरह इनकार नहीं कर सकता । हां फैसला करने में टालबटाल जरूर करेगा जिसमें तंग होकर शाहजादा उसकी बात मान ले । खैर, ईश्वर न्याय करने वाला है, वह तुम दोनों को कभी तकलीफ में न डालेगा और न जुदाई का रंज ही भोगने देगा ।

फात्मा देर तक इसी तरह की बातें कर के शाहजादी को धीरज देती रही । लैला ने उसे जिन्दगी भर अपने साथ रहने के लिये कहा परन्तु फात्मा ने इनकार कर के कहा कि यद्यपि तुम्हारे साथ मुझे बहुत मुहब्बत हो गई है परन्तु मेरी किस्मत में एक जगह रहना लिखा नहीं है, मैं देशदेशान्तर घूमने ही में राजी हूँ, हां कुछ दिनों तक मैं तुम्हारे साथ जरूर रहूँगी ।

फात्मा दो महीने तक लैला के पास रही और इस बीच में उसने वह दवा बनानी भी लैला को बता दी जिसने रूम के सुल्तान को आराम किया था । दो महीने बाद फात्मा लैला से बिदा हो टिफलिस की तरफ रवाना हुई ।

उनचासवां बयान

के बाहर निकल आया। बाहर की खुली हवा लगने से कलौडिसा हाथ पैर हिलाने लगी। डारवल खुश हुआ और उसे कलौडिसा के जीने की उम्मीद हुई मगर गार के मुहाने पर सर्दी बहुत थी इस लिये वह कलौडिसा को फिर गार के अन्दर ले गया और अपने ओढने का कपडा उसे ओढा कर खुद पीछे लौट उस मूरत के पास गया और गुलिस्ता घाटी के दर्वाजे का पता लगाने लगा मगर कुछ मालूम न हुआ आखिर यह देखने के लिये लौट आया कि कलौडिसा जीती है या नहीं। इसी तरह वह कई दफे मूरत के पास गया और लौटा पर अन्त में उसे निश्चय हो गया कि गुलिस्ता घाटी के दर्वाजे का पता उसे न लगेगा।

अब डारवल को यह फिक्र हुई कि कलौडिसा को कुछ खिलाना चाहिये। डारवल स्वयं भूखा था मगर खाने का सामान जुटाने के लिये उसे कोई तर्वीब न सूझती थी। वह ऐसी गुलिस्ता घाटी के दर्वाजे पर था जहा तरह तरह के मेवे लगे हुए थे मगर लाचार कि किसी तरह उसके अन्दर न जा सकता था कभी कभी उसे इस बात का भी ध्यान आता कि टोनर उसे लेने के लिये आवेगा मगर उसे इस बात का निश्चय न था, क्योंकि पिछले कई घण्टों में टोनर की तरफ से उसका दिल फिर गया था और वह जान गया था कि टोनर बडाही मक्कार खुदगर्ज और हरामजादा है। गुलिस्ता घाटी का दर्वाजा खुलते ही अन्दर जा कर टोनर ने दर्वाजा बन्द कर लिया और उससे यह भी न पूछा कि तू आवेगा या नहीं! इस लिये डारवल उसकी बेईमानी अच्छी तरह समझ गया था और उसे यह भरोसा न रह गया था कि अपने साथ गुलिस्ता घाटी के अन्दर ले जाने के लिये टोनर उसके पास आवेगा। डारवल बहुत नेक और रहमदिल आदमी था। उसने दिल में निश्चय कर लिया था कि जहा तक होगा कलौडिसा की खिदमत करके उसे आराम करेगा। कलौडिसा के लिये भोजन और गर्म कपड़े की बहुत जरूरत थी जिसकी फिक्र में डारवल पडा हुआ था और सोचता था कि वे सब चीजें कहा से लाऊं

जायें। यकायक डारवल को अपना गुब्बारा याद आया जो थोड़ी ही दूर पर था, उसने सोचा कि अगर वह गुब्बारा मिल जाय तो क्लौडिसा के बिछावन और ओढ़ने का काम चल जायगा, मगर वह क्लौडिसा को यहां छोड़ कर गुब्बारा लेने के लिये कैसे जाता? क्योंकि उसे इस बात का शक था कि कहीं ऐसा न हो कि मैं क्लौडिसा को यहां छोड़ कर गुब्बारा लेने के लिये जाऊं और टोनर बाहर निकले और इस जख्मी औरत को जीती देख कर मार डाले।

पाठक समझ ही गये होंगे कि डारवल बड़ा ही बुद्धिमान आदमी था और वह हर एक बात को अच्छी तरह सोच समझ कर तब कोई काम करता था। उसने क्लौडिसा को यहां रखना मुनासिब न समझा अस्तु बेहोश क्लौडिसा को उठाया और बड़ी मुशकिल से लकड़ी वाले पुल के पार होकर एक टीले पर ले गया जहां उसे छोटी सी एक गुफा मिली जिसके मुंह पर झाड़ झंखाड़ लगा हुआ था। डारवल ने क्लौडिसा को उसी गुफा में लेटा दिया और आप गुब्बारा लेने के लिये चला गया। बुद्धिमान डारवल ने रास्ते को अच्छी तरह पहिचान लिया था, वह किसी तरह भूलने वाला न था।

हुआ जिधर गुब्बारा था। थोडी ही दूर आगे बढ़ा था कि दूर से कई मुसाफिर घोड़ों पर सवार धीरे धीरे जाते हुए दिखाई दिये। उन्हें देख डारवल उसी तरफ लपका और बहुत जल्द उन लोगों के पास पहुँच कर देखा कि एक मर्द और दो औरतें हैं। तीनों बड़े घोड़ों पर सवार हैं और एक चौथे घोडे पर कुछ असबाब भी लदा हुआ है जिसकी बागडोर मर्द के हाथ में है। डारवल को अपनी तरफ आते देख वे मुसाफिर ठहर गये जो पहाडी जमींदार मालूम पड़ते थे। मर्द अधेड़ उम्र का था और साथ में एक उसकी औरत तथा दूसरी उसकी लड़की थी। उनका मकान पहाड में था और वे लोग किसी से मिलने के लिये टिफलिस गये थे, अब मकान को लौटे जाते थे। कोतल के घोडे पर खाने पीने का असबाब लदा हुआ था। यह सब हाल डारवल को उन्हीं की जबानी मालूम हुआ। पहिले तो उनको डारवल की सूरत देख कर ताज्जुब हुआ मगर डारवल ने उन लोगों से कोई झूठा किस्सा गढ़ कर अपना हाल कहा जिसमें यह बयान किया कि रूसी सिपाहियों ने उसे लूट लिया और अब बिना कुछ खाये पीए उसकी जान निकली जा रही है। मुसाफिरों को डारवल की हालत पर तर्स आया और उन लोगों ने बूढे को साथ चलने को कहा मगर डारवल ने अपने को दूसरी ही तरफ जाने वाला बतलाया। आखिर मर्द घोडे पर से उतर पड़ा और डारवल से बोला कि हमारे साथ खाने की हर एक चीज मौजूद है जितना तुमसे उठ सके ले जाओ। डारवल ने वैसाही किया, मतलब सब चीजें ले कर रुख्सत हुआ और वे लोग भी वहां से चले गये।

अब डारवल गुब्बारा लेने के लिये रवाना हुआ और उसकी मुराद पूरी हुई। हवा से उड कर गुब्बारा एक पेड़ से अटक गया था और उस की रस्सियां डालियों में उलझ गई थीं। डारवल के पास एक चाकू था जिससे उसने डोरियां काट दीं, गुब्बारा तह कर के उठा लिया और वहां आया जहां कलाडिमा को छोड़ गया था।

शाम का वक्त हो गया था। उसने थोडी सूखी लकड़िया बटोर कर आग सुलगाई तथा एक हांडी में जो उन्हीं मुसाफिरों से माग लाया था खाना पका कर उसे क्लौडिसा के मुंह में डाला। उस समय क्लौडिसा को कुछ कुछ होश आ चली थी मगर उसमें बात करने की ताक़त बिल्कुल न थी। गुब्बारे के टुकडे फाड फाड कर डारवल ने उसके बिछावन और ओढने का सामान कर दिया।

क्लौडिसा को बचाने के लिए डारवल ने बड़ी मेहनत की। आठवें दिन उसे बात करने की ताकत हुई। उसने अपने मेहरबान और जान बचाने वाले की तरफ देखा और हाल पूछा। डारवल ने अपना और टोनर का हाल तथा जो कुछ उस पर बीती थी सब ठीक ठीक कह सुनाया।

क्लौडिसा०। तुमको मेरे रूप बदलने का हाल मालूम हो गया जिसका स्याह दाग अभी तक कुछ कुछ मेरे चेहरे पर मौजूद है, मगर मेहरबानी करके यह हाल किसी से न कहना क्योंकि मैंने किसी बुरी नीयत से अपना भेष नहीं बदला था।

डारवल०। तुम निश्चिन्त रहो, मैं किसी तरह तुम्हारा भेद खोलना नहीं चाहता।

बचा सकती हो, मगर चोर दर्वाजे का हाल मुझे बता दो तो मैं वहां जाकर उसे देखूं।

कलौ०। मैं वहां का भेद किसी तरह नहीं बता सकती क्योंकि इसके लिए कसम खा चुकी हूँ, मगर इस मेहरबानी के बदले में मैं अपने साथ तुम्हें उस गुलिस्तां घाटी में ऐसे ढंग से ले जा सकती हूँ कि जिससे मेरी बात में भी फर्क न पड़े और तुम भी वहां की सैर कर लो, मगर इसमें कुछ देर लगेगी, जरा मुझमें चलने की ताकत आ लेने दो।

वास्तव में कलौडिसा ने कोई कसम न खाई थी और न डेनियल और लैला से ऐसा कुछ वादा ही किया था, मगर उसकी इच्छा यही थी कि टोनर भूखा प्यासा मर जाय और इसी लिये उसने यह बहाना कर दिया था। डारवल ने अपनी नेकनीयती के सबब टोनर को बचाना चाहा था लेकिन कलौडिसा से ऐसा सूखा जवाब पा वह लाचार चुप हो रहा।

डारवल०। खैर टोनर को उसकी किस्मत पर छोड़ देते हैं, परन्तु तुम यह याद रखना कि तुम प्रतिज्ञा कर रही हो कि अपने साथ गुलिस्तां घाटी में मुझे ले चलोगी। साथ ही साथ इतना भी मैं सच सच कह सकता हूं कि मैंने यह इनाम पाने के लिए तुम्हारे साथ भलाई नहीं की बल्कि साफ नीयत से और इस तौर पर की है जो हर एक नेक आदमी को करनी उचित है।

कलौ०। मैं इस बात को खूब समझती हूँ और मुझे तुम्हारी नेकनीयती पर विश्वास है। मैं तुम्हें अपने साथ वहां जरूर ले चलूंगी मगर इस बारे में मैं भी तुमसे एक प्रतिज्ञा कराया चाहती हूं।

डारवल०। वह क्या?

कलौ०। गुलिस्तां घाटी का भेद केवल मुझी को मालूम नहीं है बल्कि और भी दो आदमी मेरे शरीक हैं जिनका नाम मैं नहीं बता सकती। मैं उन दोनों से वादा कर चुकी हूँ कि यहां का भेद किसी को न बताऊंगी इसी लिए मैं तुम्हें केवल तीन दिन तक वहां रक्खूंगी

आज्ञा दे सकती हूं क्योंकि वे दोनों आदमी भी बहुत जल्द यहां आने वाले हैं और अगर वे लोग तुम्हें गुलिस्ता घाटी में देख लेंगे तो मुझ पर हंसेंगे और लानत मलामत करने लगेंगे। तुम जानते ही हो कि उस घाटी में बहुत कुछ दौलत और जवाहिरात है। मैं तुम्हें आज्ञा दे सकती हूं कि इनमें से बारह जड़ाऊ जवाहिरात अपने पसन्द के चुन लो और देखो इतने ही से तुम मालामाल हो जाओगे।

वारनर जो गुलिस्ता घाटी में केवल दौलत ही की लालच से जाना चाहता था फ्लोरिमा की इस बात पर खुशी खुशी राजी हो गया और उसने फ़ौरन प्रतिज्ञा कर ली कि जो तुम कहोगी वही करूंगा।

रंगने की कोई जरूरत नहीं, पर हां यदि डेनियल और लैला मुझे असली सूरत में देखेंगे तो जरूर चौंकेंगे। खैर कोई हर्ज नहीं आखिर मैंने उनके साथ नेकियें ही की हैं कोई बदी नहीं।

पचासवां बयान

आखिर एक दिन गुलिस्ता घाटी में जाने के लिये बूढ़े डारवल का हाथ पकड़ कलौडिसा खोह के बाहर निकली और धीरे धीरे उस तरफ रवाना हुई। उसी राह से जिसका हाल ऊपर कई दफे लिखा जा चुका है ये दोनों आदमी गुलिस्तां घाटी के दर्वाजे पर अर्थात् उस मूरत वाली खोह में पहुँचे। यहां पहुँच डारवल का कलेजा कांपने लगा क्योंकि उसे खयाल हुआ कि अब टोनर का हाल मालूम ही होना चाहता है। खोह बिल्कुल अन्धेरी थी मगर कलौडिसा वहां का हाल अच्छी तरह जानती थी इसलिये डारवल को किसी तरह की तकलीफ न हुई और दोनों बेधड़क उस मूरत के पास जा पहुँचे। कलौडिसा ने दर्वाजा खोला मगर ऐसे ढंग से कि उसका कोई भेद डारवल को मालूम न हो सका और न वह यही समझ सका कि दर्वाजा किस तरह खुला।

उनके अन्दर जाने पर दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया। इस जगह कलौडिसा ने कहा, "जरा ठहरो, यहां चिराग मौजूद है, मैं उसे जला लूं। अगर मैं अकेली होती तो बेधड़क उतर जाती मगर तुम्हें तकलीफ होगी, सिवाय इसके मुझे यहां कुछ देखना भी है।"

डारवल समझ गया कि इसी जगह टोनर की लाश मिलेगी। चिराग जलाया गया और कलौडिसा रास्ता बताती हुई डारवल को ले चली। यहां नीचे उतरने के लिये पहाड़ काट कर चक्करदार सीढ़ियां बनाई गई थीं जिनसे बनाने वाले की कारीगरी का पता लगता था। डारवल को मालूम हुआ कि ज्यों ज्यों वह नीचे जाता है त्यों त्यों हवा कम सर्द

मालूम होती जाती है और सीढ़ियों के अन्त में तो सर्दी के बदले दिल खुश करने वाली गर्म हवा उसके चेहरे पर लगने लगी।

कलौडिया हाथ में चिराग लिये रास्ता बताती बराबर चली गई और डारवल भी उसके पीछे पीछे चला गया। हर कदम पर कलौडिया और डारवल सोचते जाते थे कि अब टोनर की लाश मिला चाहती है। दोनों आदमी चक्करदार सीढ़ी के अन्त तक पहुँच गये और अब कलौडिया डारवल को एक चौड़े रास्ते पर ले चली जो पहाड़ काट कर बनाया गया था। वहां पहुंचते ही यकायक कलौडिया और डारवल को टोनर की लाश दिखाई पड़ी जो पत्थर की चट्टान पर सिर रक्खे पड़ा हुआ था।

कलौडिया ने चिराग ऊंचा करके मुर्दे का मुंह देखा। उसकी सूरत बिगड़ गई थी, चमड़ा तन गया था, और चेहरे पर अन्तिम त्रास की निशानी दिखाई दे रही थी। डारवल ने अफसोस से कहा "बदनसीब नौजवान तीन चार दिन से ज्यादे का मरा हुआ नहीं मालूम होता। कम से कम दस दिन तक इसने फाके का दुःख भोगा होगा। अपने गुनाहों की सजा इसी दुनिया में इसे मिल गई!!"

बन्द हो गया और जब डारवल ने फिर कर देखा तो दर्वाजे का कहीं नाम निशान तक भी न पाया।

डारवल गुलिस्ता घाटी में पहुँच गया। यही गुलिस्ता घाटी जिसमें एक दफे फातमा गई थी और जहा का हाल उसने लैला और मिरहा से कहा था। बहुत ऊंचे ऊंचे चार पहाड इसे घेरे हुए थे जिनके बडे बडे पत्थरों के ढोकों को देख कर डारवल समझ गया कि कोई आदमी इनके ऊपर से हो कर यहां तक आ नहीं सकता और गुफ्यारे की मदद से भी यहा आना बहुत कठिन है। डारवल के अन्दाज में गुलिस्ताँ घाटी की जमीन उस खोह से बहुत नीची होगी और यही सबब था कि यहाँ मौसिम बहार (बसन्त ऋतु) की सुहावनी हवा चल रही थी। इस घाटी में हर तरफ सब्जी की बहार दिखाई देती थी और जगह जगह स्वादिष्ट फलों के पेड लगे हुए थे। जमीन पर तरह तरह के फूलों के पेड थे। यहाँ गुलाब के पेड भी बहुत से थे जिनके बडे बडे फूलों में ऐसी उत्तम सुगन्ध थी कि डारवल का जी खुश हो गया, दिमाग तर हो गया और वह मस्त हो कर चारो तरफ देखने लगा। ऐसे बडे बड़े और खुशबूदार फूल उसने अपनी जिन्दगी भर में कहीं देखे न थे।

क्लौडिमा डारवल को एक पेचीले और सायेदार रास्ते से घुमाती हुई उस सब्जी से ढके हुए मैदान की तरफ लिए जा रही थी जो इस घाटी के बीचोबीच में था और जहाँ वह छोटा सा मकान बना हुआ था जिसका फातमा ने बयान किया था। इस मकान में तीन कमरे बने हुए थे। क्लौडिमा ने डारवल को एक दरीची में बैठाया और आप जाकर तरह तरह के मेवे तोड लाई तथा डारवल को खाने के लिए दिये। ऐसे स्वादिष्ट मेवे डारवल ने अपनी उम्र भर में कभी नहीं खाये थे। क्लौडिमा ने उसे थोडी सी शराब भी दी जो उसी जगह के अंगूर की बनी हुई थी।

जब डारवल थोड़ी देर तक आराम कर चुका तब क्लौडिमा उसे ले

जाकर घाटी की अनूठी अनूठी चीजों की सैर कराने लगी। यहाँ छोटे छोटे अनगिनत चश्मे बह रहे थे जिनके साफ पानी में रंगबिरंग की खूबसूरत मछलियाँ दौड़ रही थीं।

कलो०। जो इस घाटी में रहता है उसे केवल मेवे ही खाकर दिन काटना नहीं पड़ता बल्कि इन चश्मों से अच्छी अच्छी मछलियाँ भी हाथ लग सकती हैं (और आगे ले जाकर) इसके अलावे गर्म मुल्क की हर तरह की तरकारियाँ भी यहाँ मिल सकती हैं।

इसके बाद दोनों एक मजबूत बाड़े के पास पहुँचे जो बहुत सी जमीन घेरे हुए था और जिसके अन्दर बीस पच्चीस भेड़ और इतने ही दुम्बे चर रहे थे।

देखने से वे बहुत से भेद जिसके बारे में शायद तुम अभी तक सोच रहे होगे खुल जायंगे।

यह कह कर कलौडिसा एक गार की तरफ बढी जिसके मुहाने पर से भाफ की तरह हल्का धूंआ निकल रहा था। जैसे जैसे ये दोनों उसके पास पहुचते गये हवा गर्म मालूम होती गई, यहा तक कि हम्मान की सी गर्मी मालूम होने लगी। डारबल को तुरत इसका सबब मालूम हो गया क्योंकि पहाड़ के अन्दर से गर्म पानी का एक चश्मा निकल रहा था। कलौडिसा ने उसे दिखाया कि गार से निकल कर चश्मे की पाँच सात धारें हो जाती है जो सब की सब उस सरजमीन में कई तरफ को बह गई थीं।

कलौ०। यहां के हर एक चश्मे को मैने अच्छी तरह देखा है। ये उन पानी के चश्मों से जिनमे मछलियाँ रहती हैं नहीं मिलते है और अलग ही बहते हुए निकल जाते है। ईश्वर ने इस स्वर्ग तुल्य स्थान का कैसा अच्छा इन्तजाम किया है और यहाँ के पौधो तथा सब्जी को कैसे उत्तम ढग से तरी पहुँचती है। तिस पर खूबी यह कि यहाँ जाड़ा बिल्कुल नहीं पडता और बहार का मौसिम ही बराबर बना रहता है।

डार०। यहा बसंत ऋतु बराबर बनी रहती है इसका एक सबब और भी है जिसे शायद तुमने अभी तक नहीं समझा। इस पहाड के अन्दर ज्वालामुखी है जिसमें इस पहाड को तोड कर फूट निकलने की ताकत अभी नहीं आई है और उसी ने इन गारों को बेशकीमती धातुओं तथा जवाहिरातो से इस कदर मालामाल कर रक्खा है।

इस विषय में डारबल ने कलौडिसा को विस्तार के साथ बहुत कुछ कहा जिसे वह अच्छी तरह सुनती और समझती रही। इसके बाद वह डारबल को एक दूसरी जगह ले गई। यह एक छोटा सा कब्रिस्तान था जिसके चारो तरफ बहुत से गुल बूटे लगे थे। वहा बहुत से आदमियों की लाशें गडी हुई थीं जो इस गुलिस्ता घाटी में खुशी खुशी

जिन्दगी बिता कर यहीं मरे थे। इसी जगह पर मंसूर सौदागर ने अपने बूढे दोस्त बादशाह डेनियल को गाडा था। आज डारवल और कलौडिसा ने कमबख्त टोनर को भी इसी कब्रिस्तान में गाड़ दिया।

तीन दिन तक डारवल यहां रहा और चौथे दिन अपनी जेबों में अच्छे अच्छे जवाहिरात जिनसे वह भारी अमीर हो सकता था भर कर विदा हुआ। कलौडिसा ने कहा, "चलो मैं तुम्हें बाहर पहुंचा आऊं और वह खोह भी बता दूं जिसका हाल तुमसे कह चुकी हूँ।"

कलौडिसा डारवल को लेकर गुलिस्तावादी के बाहर आई मगर इस दफे भी उसने दर्वाजों को इस ढब से खोला कि उनका भेद डारवल को कुछ मालूम न हो सका। दोनों वहां पहुंचे जहां कलौडिसा ने अपने घोडे को चरने के लिये छोड़ा था और उसे वहीं मौजूद पाया।

डार०। क्या अब इस घोडे की जरूरत तुम्हें न पडेगी?

कला०। नहीं, अब इसकी मुझे कोई जरूरत नहीं क्योंकि अब मैंने इसी जगह रहने का विचार कर लिया है।

डार०। अच्छा तो फिर अब हम और तुम जुदा होते हैं। (अफसोस के साथ) मुझे यह मालूम होता है कि मैं अपनी बेटी से जुदा हो रहा हूं॥

डारवल को पकड़ लिया और किसी मतलब से कलोडिमा को भी गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद ये सवार इन दोनों को ले जाया ही चाहते थे कि यकायक दूर से और घोड़ों के टापों की आवाज आई। कलौडिमा इन नये आने वाले मुसाफिरों की तरफ मुंह करके चिल्लाई और उन्हें अपनी मदद के लिये बुलाया। बात की बात में वे बारह सवार यहां आ पहुंचे जिनके सर्दार को देख कलोडिमा खुशी के मारे चिल्ला उठी और बोली, "कैरीकरामा! कैरीकरामा! क्या तुम हो?"

सर्दार चीख उठा, "मिरहा! मेरी मिरहा!! तुम जीती हो!!" और इतना कह वह घोड़े से कूद पड़ा। वह अपनी मिरहा को गले लगाया ही चाहता था कि मिरहा ने इशारे से मना किया और कहा—

मिरहा०। कैरीकरामा! पहिले इन दुष्टों के हाथ से इस बेचारे बूढ़े को छुड़ाओ जिसने मेरी जान बचाई है॥

देखते देखते लड़ाई शुरू हो गई। दस ही मिनट में कैरीकरामा तथा उसके साथियों ने उन छओं आदमियों को मार गिराया। डारवल की जान बच गई और कैरीकरामा ने मिरहा को मुहब्बत से गले लगा लिया।

एक्यावनवां बयान

इस लड़ाई को तमाम हुए दस मिनट हो चुके थे। मिरहा और कैरीकरामा सब से अलग टहल रहे थे। कैरीकरामा अपनी औरत के गर्दन में हाथ डाले हुए था और वह उस तरह मुहब्बत से उसकी तरफ देख रही थी जैसा कि उसकी आदत थी। इस वक्त मिरहा का चेहरा साफ और अपने असली रंग में था क्योंकि उसे अपने चेहरे पर दवा लगाये बहुत दिन हो चुके थे और काला रंग धीरे धीरे उड़ कर साफ हो चुका था।

कैरी०। मुझे तुम से बहुत सी बातें पूछनी हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि यह क्या हो गया और मैं पहिले कौन सी बात पूछूं! तुम

मिरहा० । उस जगह पर फात्मा नामी एक तुर्की औरत भी मौजूद थी जिसे तुमने उस रोज देखा था जब टिफलिस में मेरी चाची के मकान में तुम मेरी लाश पर झुके हुए मुझे देख रहे थे। उसी फात्मा ने मेरे जख्म पर दवा लगाई और कुछ दवा पिलाई भी। घण्टे भर बाद सिवाय फात्मा के और सभों ने मुझे मुर्दा समझ लिया और इसीलिये थोड़ी देर बाद अपनी लौंडियों के साथ लैला भी वहाँ से चली गई। इसके बाद फात्मा की दवा की तासीर से मुझे होश आया। उस समय मेरी अवस्था बिल्कुल ही बदल गई थी, मुझे ऐसा मालूम हो रहा था कि मानों मैं कब्र में से लौटी हूँ। बुरे कामों के ध्यान से मैं काप उठी और मैंने यह निश्चय कर लिया कि अब सिवाय नेकी के किसी के साथ बुराई न करूंगी मगर यह कब हो सकता था कि मैं नेकचलन बन कर तुम्हारे साथ रहूँ क्योंकि मुझे विश्वास था कि तुम अपनी बुरी चालचलन न छाड़ोगे बल्कि मुझे भी फिर उसी बुरी राह पर चलाने की कोशिश करोगे, अगर मैं तुम्हें नसीहत करूंगी तो उसका कुछ भी असर न होगा और तुम जरूर मुझ पर खफा होगे कि मैंने लैला की अंगूठी उसे क्यों वापस दे दी, इसके अलावा नेकदिल लैला के लिये मैं दिल में कसम खा चुकी थी कि जहा तक हो सकेगा उसके साथ नेकी करूंगी और उन मुसीबतों से उसे बचाऊंगी जो तुम उसके ऊपर डालोगे। मेरे प्यारे ! मैं तुमसे अब भी उतनी ही मुहब्बत रखती हू जितनी पहिले रखती थी, अस्तु तुम खुद सोच सकते हो कि इन सब बातों के विचार से उस समय मेरे दिल की क्या हालत हो रही होगी। मुझे सिवाय इसके और कोई तर्कीब न सूझी कि मैं तमाम दुनिया के सामने मुर्दा समझी जाऊं ! हाय ! ईश्वर ही जानता है कि तुमको छोडने के लिये मैंने अपने दिल को कैसा कैसा जब्त किया !

कैरी० । प्यारी मिरहा ! अगर तुम मुझसे मिलतीं और अपने दिल का हाल कहतीं तो मैं हर तरह से अपनी तबीयत को मारता और जो कुछ तुम चाहतीं वही करता !

निरहा० । क्या यह सच है ! अगर तुम यह सच कह रहे हो मेरी वह खुशी बहुत बढ़ जायगी जो तुमसे मिलने पर हुई है ॥

कैरी० । मैं कसम खाता हूँ कि यह सच है ! यदि तुम कहो मैं अभी उस दिलेर गरोह की सर्दारी छोड़ दूं जिसने मुझे अपना अफसर बना रक्खा है । निरहा ! तुम खूब जानती हो कि मैं दिल से तुम्हारा आशिक था और हूं मगर तुम्हारी मुहब्बत का हाल मुझे उस समय मालूम हुआ जब तुम मेरे हाथ से जाती रहीं । ओह, उस दिन जब हम तुम यकायक मिले थे अर्थात् उस सध्या को जब टोनर किले से भागा था और तुम मुझको बेहोशी की अवस्था में एक नदी के किनारे ले गई और पानी छिड़क कर होश में लाई थीं, मुझे निश्चय है कि वह तुम्हीं थीं जो भूत की तरह देखते देखते गायब हो गईं, उस दिन से मैं और भी बेचैन रहता है, हर जगह तुमको ढूंढता और इस सोच में रहता हूं कि किसी तरह तुमसे फिर मुलाकात हो, परन्तु साथ ही इसके यह भी गुमान हुआ करता था कि कदाचित् अब निरहा से मुलाकात न हो कदाचि तुम्हें अपनी आंखों से मुर्दा देख चुका था ।

निरहा० । (नरम आवाज से) कैरी ' उस दिन मेरे दिल की जो हालत थी मैं ही जानती हूं या ईश्वर जानता है कि अपने दिल को किस तरह मार कर मैं तुम्हारे सामने से भागी थी ।

[illegible] सर्दार ने यह सुन अपनी प्यारी नीही को गले से लगा लिया और देर तक मुहब्बत की बातचीत करता रहा । इसके बाद निरहा ने [illegible] दिया [illegible] की [illegible] कहने लगी —

[illegible] जिस [illegible] से [illegible] और उस देशी ने मुझे [illegible] एक [illegible] के [illegible] हाकर [illegible] कां । [illegible] ठीक हुई [illegible] किस [illegible]

बेहोशी की अवस्था में तुमने मुझे मेरे चचा के घर में देखा। शाहजादी लैला और अलादीन भी उस मकान में बुलाये गए जिसमें वे भी मेरी लाश को देखें और उन्हें भी मेरे मरने का विश्वास हो जाय क्योंकि ऐसा करने से ही मेरा मतलब सिद्ध हो सकता था। आखिर ऐसा ही हुआ और मै पूरी तौर से अलादीन और शाहजादी लैला की मदद कर सकी। उन लोगों को गुमान भी न हुआ कि क्लौटिसा नामी सावली औरत के अन्दर गोरे रंग की मिरहा छिपी हुई है। मैने ही कुस्तुनतुनिया के बादशाही महल के अन्दर पहुँच कर शाहजादी लैला को कैद से छुड़ाया और ईश्वर ने उसका बदला भी मुझे दिया।"

कैरी०। (गौर से अपनी बीबी का मुंह देख कर) मगर यह तो बताओ मिरहा ! कि तुम इन जगल पहाड़ों में क्यों घूम रही हो ?

मिरहा०। मै देखती हू कि मेरी जो कुछ मुराद है उसका कुछ कुछ गुमान तुम्हारे दिल में भी आ चला है मेरे प्यारे कैरी ! बेशक ईश्वर ने मुझ पर कृपा की और मेरे कामों का नेक बदला दिया, क्योंकि वह भेद जो गुनाहगारी की हालत में हम लोगों को समझना नसीब न हुआ था और जिसके जानने के लिये तुम बहुत उद्योग कर रहे थे मगर अभी तक जो तुम्हें मालूम न हो सका वही भेद मुझे मालूम हो गया !

डाकू ने यह सुनते ही मिरहा की तरफ ताज्जुब से देखा।

मिरहा०। प्यारे कैरी ! मै सच कहती हूँ कि उस स्वर्ग तुल्य [illegible] अर्थात् गुलिस्ता घाटी में मै महीनों रह चुकी हूँ और वह बूढा आदमी जिसको अभी तुमने बड़ी दिलेरी के साथ दुश्मनों के हाथ से बचाया बहुत सी दौलत उस उस घाटी से लेकर निकला है। मेरे प्यारे कैरी ! अगर तुम अपने इस दुष्ट डाकूपने को छोड़ने के लिये कसम खाओ और बुरे कर्मों को छोड़ कर अपने को मिरहा की मुहब्बत के योग्य बनाओ अर्थात् जैसी कि मिरहा अब हो गई है वैसे ही तुम भी हो जाओ तो इस गुलिस्ता घाटी की तमाम दौलत तुम्हारे सामने हाजिर हो सकती है।

इतना सुनते ही कैरीकरामा घुटने टेककर मिरहा के सामने खड़ा हो गया और इस बात की कसम खाने के बाद उसका हाथ चूम कर बोला, "आज से मैं हर एक काम तुम्हारे कहे मुताबिक किया करूंगा !!"

मिरहा ने अपने प्यारे पति को उठाया और मुहब्बत से उसके साथ लिपट गई।

दोनों में बहुत देर तक मीठी मीठी बातें होती रहीं। इसके बाद कैरीकरामा ने मिरहा से कहा, 'छ महीने हुए इसी जगह पर टोनर से मेरी मुलाकात हुई थी और उसने अपनी और कलौटिसा की बातचीत जो टिपलिस के कैदखाने में हुई थी मुझसे कही थी।"

इतना कह कैरीकरामा ने इस्माईल पाशा के सिपाहियों का पहुंचना और टोनर का गिरफ्तार होना मिरहा से बयान किया और मिरहा ने इस पर अपना डारवल से मिलना, टोनर का खंजर मारना, बूढे डारवल का बाप की तरह मुहब्बत से खिदमत करके उसकी जान बचाना इत्यादि सब बयान किया।

मिरहा। टिपलिस के कैदखाने में तुमसे और टोनर से जो कुछ बातचीत हुई थी इस विषय में मैं कुछ और भी कहूंगी। मैंने उसकी जान बचाने का उद्योग किया था क्योंकि मैं जानती थी कि उसके हाथ से मनुष्य का खून नहीं बहा था। [illegible]

अपना सर्दार बना लो। उन लोगों ने बहुत कुछ मिन्नत की मगर कुछ काम न चला। हां कैरीकरामा ने उन लोगों को बहुत कुछ रुपया दिया और इस बात की भी ताकीद कर दी कि बूढ़े डारबल को हिफाजत के साथ उसके घर तक पहुचा दें।

मिरहा ने झुक कर डारवल के कान में कहा, "इन डाकुओं की हिफाजत पर भरोसा करो। मैं यह भी वादा करती हूँ कि बहुत जल्द तुमसे तुम्हारे शहर में मिलूंगी क्योंकि कैरीकरामा ने यद्यपि अब अपने बुरे पेशे को छोड़ देने की कसम खा ली है फिर भी इन मुल्कों में उसका नाम बुराई के साथ मशहूर है, इसलिये हम लोग तुम्हारे ही मुल्क में आ कर रहना पसन्द करते है।

डार०। मैं तुम लोगों को अपने शहर में पाकर बहुत ही खुश होऊंगा और तुम लोगों को अपना मेहमान बनाकर भाग्यवान समझूंगा।

इसके बाद डारवल उन दोनों से विदा हुए और डाकू लोग भी कैरीकरामा का साथ छूट जाने का अफसोस करते हुए विदा हुए। मिरहा और कैरीकरामा हाथ में हाथ दिये गुलिस्ता घाटी के चोर दरवाजे की ओर बढ़े।

बावनवां बयान

पाठक! हमारे किस्से ने हमको अब सन् १८५३ ई० के अन्त तक पहुचा दिया है। अब हम दो वर्ष का हाल छोड कर आगे का हाल लिखेंगे परन्तु इसके पहिले कुछ बातें लिख देना जरूरी समझते हैं।

फात्मा कटाइम से आ जाने पर तीन महीने के बाद फिर वहा गई। इस बीच में वह टिफलिस भी गई और वहा मिरहा की चाची से मिल कर कई जरूरी बातों को जाना। फिर कुस्तुनतुनिया गई जहा उसकी मिरहा और कैरीकरामा से मुलाकात हुई, मगर इस समय वे दोनों दूसरे नामों से मशहूर हो रहे थे तथा एक बडे महल्ल में रह कर गुजा

से दिन काटते और इस दौलत को जो गुलिस्ता घाटी में इन दोनों के हाथ लगी थी अच्छे कामों में खर्च कर रहे थे। फात्मा कुछ समय तक वहां रही, इसके बाद कुस्तुन्तुनिया से कटाईस की तरफ रवाना हुई और वहां पहुंच कर उसने शाहजादी लैला को मिरहा के असली हाल चाल की खबर की। फात्मा की जबानी मिरहा का हाल सुन कर लैला बहुत खुश हुई और उसने कहा, "क्लौडिमा को जब मैंने पहिले पहिल देखा तो मुझे ताज्जुब हुआ। मैं अक्सर उसके हाथ पैर आवाज और चेहरे को गौर से देखा करती थी और जी में सोचती थी कि मैंने इसको जरूर कहीं देखा है मगर यह बात मेरे जी में कभी न उठी कि यह क्लौडिमा वास्तव में वही मिरहा है।"

फात्मा०। परन्तु मुझे आशा है कि आप उसकी प्रार्थना को मान कर उसे अवश्य पत्र लिखेंगी जिसमें उसे मालूम हो जाय कि आप अभी तक उससे मुहब्बत रखती हैं और उसके कसूर को पूरी तरह पर माफ कर चुकी हैं।

लैला०। हां हां, मैं जरूर चीठी लिखूंगी और उन नेकियों को जो उसने मेरे साथ की हैं कभी न भूलूंगी।

थोड़े दिनों तक फात्मा वहां रही फिर और और शहरों में घूमती फिरती रही। [illegible]

फात्मा ने शाहजादी से वादा किया कि मैं शाहजादे डेनियल को छुड़ाने के लिये भेष बदल कर सेण्टपिटर्सवर्ग जाऊंगी और अगर मेरी मिहनत ठिकाने लगी तो शाहजादा डेनियल रूप बदल कर मेरे साथ आवेगा। उस समय तुम दोनो इस बात का विचार कर लेना कि अब क्या करना चाहिये मगर मैं समझती हू कि रूसियों की मक्कारी पर ध्यान देकर तुम्हारा यहां पर इस तरह रहना शाहजादा पसन्द न करेगा।

फात्मा की बात सुन शाहजादी लैला बहुत खुश हुई और उसके गले से लिपट गई क्योंकि वह जानती थी कि यह काम फात्मा के लिये कोई मुश्किल नहीं है। आखिर लैला से बहुत कुछ वादा करके फात्मा सेण्टपिटर्सवर्ग की तरफ रवाना हुई।

कई महीने बीत गये परन्तु शाहजादी लैला को फात्मा की कुछ खबर न मिली बल्कि थोड़े ही दिन बाद शाहजादे डेनियल के पत्र आने भी बन्द हो गये जिससे शाहजादी लैला के दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। वह इसी सोच विचार मे थी कि सन् १८५५ ई० के आखीर में लड़ाई के गरजते हुए बादल जो मुल्क डैन्यूब क्रीमिया और एशिया के उत्तरी सूबों पर छाये हुए थे सिगरेलिया के मुल्क पर भी बरसते मालूम पड़ने लगे। क्टाइस मे यह खबर मशहूर हुई कि बहादुर उमर पाशा कोहकाफ में रूसियों पर हमला किया चाहता है। पहिले तो रूसियों को इस बात का विश्वास न हुआ, लेकिन जब यकायक यह खबर मिली कि जाखूम के किले पर जो मुल्क सिगरेलिया का एक छोटा सा शहर है तुर्की फौज उतरी है तो इस खबर को सुनकर रूसी जनरल घबराया और उसने कई पल्टनें तुर्कों से मुकाबिला करने के लिये भेजीं। इस काम के लिये क्टाइस से रूसी फौजें चली गई और रूसी अफसरों के भी चले जाने से शाहजादी लैला को अपनी जिन्दगी में पहिले पहिल यह मौका मिला कि क्टाइस पर स्वतन्त्रता के साथ हुक्मरान कर सके। उसके वजीरों को तुर्कों के आने से खुशी ही हुई और उन लोगों ने

...पर पाना ने शाहज़ादी लैला और शाहज़ादे डेनियल का आश्चर्य-मय हाल सुल्ताना से कहा। सुल्ताना ने खुश हो कर उनके साथ मुहब्बत का बर्ताव किया और बहुत कुछ सौगात उनके लिये भेजी बल्कि ...सी दिन से हुक्म दे दिया कि कोई नौजवान औरत अपनी मर्ज़ी के ...ना लौरफ़ार रमज़ान न बनाई जाय। सुल्ताना ने तरखाना की हमदर्दी ... जो उसने लैला के साथ की थी खुश होकर उसकी भी तारीफ़ की ...और उसे आज्ञा दे दी कि वह अपनी सा...हिनों से पत्र व्यवहार किया करे।

...गुप्त घाटी का हाल तीन आदमियों की जगह शाहज़ादा डेनियल, लैला, ...पैलीकारासा और मिसरा इन पांच आदमियों को मालूम ... और यद्यपि वहां का बहुत कुछ हाल ऊपर लिखा जा चुका है तथापि ... अर्थात् चोर दरवाज़े के खुलने का भेद ... इन्हीं ... रह गया।

|| इति ||